कुण्ठा

कुण्ठा

(बाल उपन्यास)

जगदीश प्रसाद मण्डल

पल्लवी प्रकाशन
बेरमा/निर्मली

KUNTHA (कुण्ठा)
A Maithili Children Novel by Shri Jagdish Prasad Mandal

ISBN: 978-93-93135-00-1
दाम: 250/- (भा.रु.)

दोसर संस्करण: 2023 (पहिल संस्करण: 2021)

प्रकाशक: पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं.: 06, निर्मली
जिला- सुपौल, बिहार: 847452
मुद्रक: पल्लवी प्रकाशन (मानव आर्ट)

वेबसाइट: http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल: pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल: 6200635563; 9931654742

फोण्ट सोर्स: https://fonts.google.com/,
https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts
आवरण: श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल), बिहार: 847452
अक्षर संयोजन: डॉ. उमेश मण्डल

अनुक्रम:

पहिल पड़ाव/07

दोसर पड़ाव/17

तेसर पड़ाव/28

चारिम पड़ाव/35

पाँचम पड़ाव/57

छठम पड़ाव/70

सातम पड़ाव/83

आठम पड़ाव/92

नअम पड़ाव/102

अन्तिम पड़ाव/111

पहिल पड़ाव

पाँच बजेक बेरुका समय। स्कूलसँ अबिते राजदेव बाजल- "माए, काल्हि इस्कूल बन्न रहत।"

बेटाक मुहसँ 'काल्हि इस्कूल बन्न रहत' सुनि भुलिया मने-मन हिसाब बैसबए लगली जे काल्हि स्कूल किए बन्न रहत? ने कोनो पाबैन नजैरिक आगू देखि पड़ैए, आ ने शनि-रवि छी, तखन किए बन्न रहत। ओना, मने-मन ईहो अँटकारि रहल छेली जे कोनो नेतोक मृत्यु तँ नहियेँ भेलैन अछि तखन स्कूल किए बन्न हएत। राजदेवकेँ दोहरा कऽ भुलिया ऐ दुआरे नहि पुछए चाहि रहल छेली जे अपने मन हारि मानि कबुल कऽ नेने छेलैन जे बेटा झूठ थोड़े बाजल अछि। मुदा हारि मानलाक पछातियो मनमे खुट-खुटी रहबे करैन जे अनदिना, माने बिनु शनि-रबि आकि बिनु पाबैन-तहारे, स्कूल किए बन्न हएत।

बेरहट खा राजदेव हाथ धोइते छल कि तखने रामेसर पहुँचल। रामेसरकेँ देखिते भुलिया बजली-

"बौआ, काल्हि इस्कूलमे कथीक छुट्टी छिअ?"

जहिना तेरह बर्खक राजदेव तहिना तेरह बर्खक रामेसर सेहो हाइ स्कूलक आठमामे पढ़ैत। ओना, हाइ स्कूलमे घटी-बढ़ी सेहो भेबे कएल अछि, मिडिल स्कूलमे आठमाक पढ़ाइ शुरू भेने जहिना हाइ स्कूलमे घटबी भेल अछि तहिना बारहमी कक्षा (प्लस-टू)क पढ़ाइ शुरू भेने बढ़ती सेहो भेबे कएल अछि। तहिना प्रधानाचार्य माने हेड मास्टरसँ प्रिंसिपलक बढ़ोत्तरी सेहो भेबे कएल अछि। ओना,

प्रिंसिपल बनैक दोसरो कारखाना खुजिये गेल अछि। ओ अछि, अंग्रेजी माध्यमसँ कोचिंग सेन्टर सभ खुजने। मुदा जे अछि, जेतए अछि, से तेतए रहऽ। रामेसरकेँ कौल्हुका छुट्टी तँ बुझल रहै, मुदा कथीक छुट्टी भेल से बुझले ने छेलइ। एक तँ ओहुना लोअर प्राइमरी स्कूलसँ हाइ स्कूल तकक विद्यार्थी छुट्टीक ताकमे रहिते अछि जे कहिया छुट्टी हएत। केते विद्यार्थी एहनो तँ अछिए जे रविकेँ केते दिन बीतना भेल आ केते दिन अबैमे बाँकी अछि से हिसाब जोड़बे करैए। जे सोभाविको तँ अछिए। जइ विद्यालयमे समुचित शिक्षण कार्य चलैए, पढ़ाइ चलैए, तइमे दुनू पक्षसँ माने शिक्षको पक्षसँ आ छात्रो पक्षसँ पूछ-आछ होइए, तैठाम किछु एहेन छात्र नहि अछि जे छुट्टीकेँ नहि मंगबए-मनबए चाहैत अछि। ओना, गम्भीर प्रश्नक बीच जहिना नीक छात्रो, माने सवाल-जवाब करैबला, कन्नी काटैए तहिना शिक्षको छथिए। मुदा जैठाम दायित्व उत्तरदायित्वक प्रश्न अछि तैठाम कन्नी काटब तँ दोख मानले जाएत।

निश्चल-निर्मल रामेसर बाजल- "काकी, मास्टर साहैब सोझे कहलखिन, काल्हि छुट्टी रहतौ।"

रामेसरक उत्तर सुनि भुलियाक मन मानैले तैयारे ने भेलैन। जे सोभाविको अछिए। जे माए-बाप हड़तोड़ मिहनत करिकऽ अपना बच्चाकेँ पढ़बए चाहै छैथ ओ अपना जहीनमे बच्चाक देख-रेख नहि राखैथ, तँ बाल-बोध तँ बाले-बोध भेल, बोनेबे-भोथियेबे करत किने।

रामेसर आ राजदेव टहलैले विदा भेल। ओना, आजुक जे परिवेश बनि रहल अछि, जइमे बच्चा अधासँ बेसी समयो आ शक्तियो खेलैक पाछू लगा रहल अछि ओ केते धरि उचित अछि, तेकर विचार तँ माइये-बापकेँ ने करए पड़तैन। एक तँ ओहुना व्यायामकेँ योग कहले जा रहल अछि। जइसँ समाज दिग्भ्रमित भइये रहल अछि। ॠृषि-मुनि भलेँ मन-चित्-बुधिक संयोगकेँ योग बुझैथ

आकि कर्म-ज्ञान-भक्तिक संयोगकेँ योग बुझैथ, तइसँ बाल-मनकेँ कोन मतलब छइ। ओकरा तँ मतलब छै खेलाड़ी-मदारीक वंशक परिचयसँ। अपन वंश आ अपन पूर्वजकेँ देखि-सुनि कऽ चिन्हि अपनाकेँ आगू दिशा देखाएबे ने वंशक धारमे जीवन धार चलाएब भेल। धार तँ धार छी, ओ तँ मेघक पानिक धार छी नहि जे केतौ-केतौ बरैस जाएत आ केतौ-केतौ छोड़ि देत। ओ तँ अपन रास्ताकेँ सघन रूप बना अपन दिशामे बहैए।

ओना, परिवेश एहनो बनियेँ रहल अछि जे जहिना राता-राती मशीनक उत्पादन शक्तिक विकास दस गुणा किए ने भऽ जाउ, मुदा सामाजिक आ पारिवारिक जे जीवन अछि, ओ थोड़े एतेक छलांग लगा सकैए। जखन नइ लगा सकैए तखन तँ समुचित दिशा नहि भेटने समाजो आ परिवारो तँ टुटबे करत। खाएर जेतए जे होउ तइसँ भुलियाकेँ कोन मतलब छैन, हुनका तँ मतलब छैन जे जहिना हड़तोड़ मिहनतसँ बेटाकेँ पढ़ा रहल छैथ, तहिना जखन बेटा पढ़ि-लिखि कऽ कमाए-खटाए लगतैन तखन हुनको अहिना सेवा करतैन, तइ दुआरे। भुलिया ई थोड़े बुझि रहली अछि जे एहेन परिवेश बनि रहल अछि जे जैठाम मेट्रो सन गतिशील ट्रेन, हवाइ जहाज सन गतिशीलो आ सुविधोजनक सवारीक पूर्ति भऽ रहल अछि तैठाम तँ ओहन चढ़निहारो (यात्रा केनिहार) ने चाही जेकर मिनट-मिनट समयक मूल्य होइ। जैठामक लोककेँ जीवनक कोनो ठेकान नहि छै, बेलल्ला भेल वौआ रहल अछि, तैठाम जखन ओकरा असथिर बासभूमि भेटत तखन ने ओ असथिर जीवन बना शान्तचित्तसँ कर्म करैत कुण्ठा मुक्त हएत। जन-जनक बीच चर्चा अछिए जे बैकुण्ठ स्वर्गोसँ ऊपर अछि। हम ई नहि कबीर बाबा जकाँ कहै छी जे स्वर्गोसँ ऊपर जे बैकुण्ठ अछि ओ कुण्ठामुक्त भेला पछातिये पहुँच पएब। जाबे से नहि पहुँचब ताबे सतलोकक सिहन्ता लगले रहत।

गतिशील परिवारक जे गतिशीलता अछि ओ यएह ने अछि जे परिवारक सभजन अपन तनदेही अपना परिवारमे राखी। बच्चाक स्कूल बन्न भऽ रहल अछि आ माता-पिता एतबो होश नहि करता जे घरसँ निकैल बच्चा केतए जा रहल अछि.!

संयोग बनल, देवकान्त बाबू रास्तासँ गुजैर रहल छला। देवकान्त बाबू पड़ोसीए गामक शिक्षक छैथ। माने सुकलाराही आ तुमौल दुनू गाम एकेठाम अछि, पएरे विद्यालय जाइ-अबै छैथ। देवकान्त बाबूकेँ भुलिया पुछली-

“मास्टर सहाएब, काल्हि इस्कूल बन्न रहत?”

देवकान्त बाबू बजला-

“हँ।”

भुलिया पुछली-

“किए?”

ओना, देवकान्त बाबूकेँ अपनो गामक लोक आ अगलो-बगलो गामक लोकक संग स्कूलोक शिक्षक सभ एकभग्गूए शिक्षक बुझै छैन। एकभग्गू शिक्षक ऐ दुआरे सभ बुझै छैन जे बच्चाकेँ पढ़ाएब छोड़ि देवकान्त बाबू दुनियाँक दोसर कोनो काजसँ मतलब नहि रखने छैथ। अपन-अपन जहिना विचार सभकेँ होइ छैन तहिना अपन जीवनक संकल्पो तँ होइते छैन। देवकान्त बाबूकेँ अपन सोच छैन तँए अपन विचार सेहो छैन। अपन विचार अपन संकल्पक अनुकूल छैन। अपन संकल्प देवकान्त बाबूक ई छैन जे जखन शिक्षक छी, बच्चाकेँ पढ़बैक भार उठा वेतन लइ छी तखन दुनियाँमे पढ़ाएब छोड़ि दोसर दिस मन किए देब। पढ़बैक की कोनो खासे जगह अछि, ओ तँ सर्वत्र अछि। तइसँ रस्तो-बाटमे जँ कोनो बच्चा भेट जाइ छैन तँ ओकरासँ पठन-पाठनक चर्च करैत रस्ता काटै छैथ।

देवकान्त बाबूकेँ अपनो नीक जकाँ छुट्टीक मादे नहि बुझल छेलैन, एतबे बुझल छेलैन जे काल्हिसँ स्कूल बन्न रहत।

आइ सबेरे, माने आन दिनक अपेक्षा, टेम्पू नेनहि सिंहेश्वर घरपर पहुँचला। मन खसल रहैन। घरमे टेम्पू लगा दरबज्जापर आबि बैसला। आन दिन जकाँ मन उछटगर नहियेँ छेलैन। सिंहेश्वरकेँ दरबज्जापर बैसल देखि भुलियाक मनमे भेलैन जे गाड़ी-सवारीक जिनगी छैन, भऽ सकैए केतौ रस्ता-बाटमे कोनो घटना-तटना ने ते भऽ गेलैन।

अँगना बाहरब छोड़ि भुलिया दरबज्जापर पहुँचते देखली जे पतिक मन खसल छैन। आने पत्नी जकाँ भुलिया बजली- "की आइ बेसी परेशानी भेल अछि?"

पत्नीक बात सुनि सिंहेश्वर मने-मन विचार करए लगला जे पत्नीकेँ की कहब नीक हएत। अपन तँ आइसँ गाड़ी चलब बन्न भेल, कहियासँ चलत तेकरो ठेकान नहियेँ अछि। लगले फेर अपने मन दुतकारलकैन जे जखन पत्नी लग कहियो झूठ-फूस नहि बजै छी तखन किए ने सत्त-सत्त सभ बात कहि दिऐन। फेर अपने मन मनाही करैत कहैन जे एक परिवारमे रहितो, सभकेँ अपन-अपन काज अछि। अपन काज ने बाधित भेल अछि मुदा हुनकर, माने पत्नीक, काजमे ते कोनो बाधा-रूकावट नहियेँ छैन, तखन अपन बेथा कहि अनेरे किए हुनको मनकेँ दुखेबैन। मुदा लगले मन कहलकैन जे परिवारक (अर्थक) आमदनीक स्रोत तँ यएह गाड़ी छी जे चलब बन्न भेल अछि। जखन जड़िये बन्न भेल तखन तँ घरक सभ काज ने बाधित हेबे करत। किए ने खोलिकऽ सभ बात कहि दिऐन। सिंहेश्वर बजला- "आइसँ गाड़ी चलब बन्न भऽ गेल.!"

'गाड़ी चलब बन्न भऽ गेल' सुनि भुलिया बजली- "गाड़ी चलब बन्न किए भेल?"

ओना, सिंहेश्वरकेँ एते बुझल छेलैन जे काल्हिये टा नहि, काल्हिसँ कहिया धरि बन्न रहत तेकर ठेकान नहि अछि। गप-सप्पक क्रममे सिंहेश्वरकेँ संगी सभसँ जानकारी भेल छेलैन। मुदा ई जानकारी नइ भेलैन जे किए बन्न भेल आ कहिया धरि बन्न रहत।

दोहराकऽ भुलिया बजली- “किए बन्न भेल?”

तहीकाल बाजारसँ रूपलाल सेहो रस्ते-रस्ते अबैत रहैथ। सिंहेश्वरकेँ देखि रूपलाल अपने फुरने बजला- “सिंहेश्वर, बजार बन्न भऽ गेल। गुण भेल जे बन्न होइसँ पहिने बजारक काज सम्हारि लेलौं, नइ तँ नाको-दम भऽ जइतौं।”

रूपलालक विचारक कोनो भाँज सिंहेश्वरकेँ लगबे ने केलैन जे की नाको-दम भऽ जइतैथ। सिंहेश्वर बजला-

“की नाको-दम भऽ जइतौं, काका?”

बाजारक दशा देखि रूपलालक अपने मन उधियाएल छेलैन। उधियाएलो केना ने रहितैन, आँखिक देखल छेलैन जे सबदिना जीवनोपयोगी वस्तुक तेते बिकरी भेल जे सभ सामान बाजारमे सठि गेल। निमक, करूतेल आ अल्लू कोनो दोकानमे नहि बँचल। जखन कि अखनो ओकरे लेबाल बाजारमे बेसी अछि। रूपलाल बजला-

“सिंहेश्वर, देखै छहक मोटा, एते समानक की अखन खगता अछि, संजोग नीक रहल जे संगमे पाइ छल, पनरह किलो अल्लू, एककिल्लौआ दस पौकेट नून आ पाँच किलो करूतेल कीनि लेलौं। नइ तँ काल्हिसँ खाएब बन्न भऽ जाइत।”

अपन मनक बेथाकेँ सिंहेश्वर मनेमे दाबि बजला- “काका, तखन तँ अहाँ ऐगला रस्ता सम्हारि लेलौं।”

अपन ऐगला रस्ता सम्हारब सुनि रूपलालक मन खुशीसँ तिरपित भऽ गेलैन। बजला- “सिंहेसर, अनेरे जे चारि मासक समान

घरमे राखब से कथी ले, अदहा तोहूँ लऽ लाए।”

रूपलालक विचार सुनि सिंहेश्वरक मन सहमलैन। सहमैक कारण भेलैन जे रूपलाल काका नगद कीनि कऽ बाजारसँ वस्तु अनलैथ, अपन तँ कारोबार बन्न भऽ रहल अछि, कीनि-बेसाहिकऽ खाइबला परिवार अछि। तँए पहिने अन्न-पानिक ने जोगार करब नीक हएत। बिना नूनो-तेलक किछु दिन काज चलि सकैए मुदा बिना अन्न-पानिक कए दिन चलि सकैए। फेर अपने मनमे सिंहेश्वरकेँ भेलैन जे जखन सभ किछु, हाट-बाजार, गाड़ी-सवारी, स्कूल-कौलेज बन्न भऽ रहल अछि तखन तँ सभ कथुक बेगरता पड़बे करत। तहूमे जखन रूपलाल काका अगुआ कऽ, माने उपकैर कऽ कहलैन अछि तखन नहियोँ कहब नीक नहियेँ हएत। सिंहेश्वर बजला- “काका, एते दूरसँ एते भारी वस्तु-जात माथपर उठा अहाँ अपना ले अनलौं हेन, तइमे सँ हमर लेब नीक हएत?”

ओना, रूपलालकेँ सेहो एहेन अनुमान नहियेँ भेलैन जे कहिया धरि बाजार बन्न रहत आ अपन प्रतिदिनक खर्च केते अछि। बाजारक लोकक देखा-देखीसँ रूपलाल कोनिया कीनि लेलैन आ ओही हल्होरिपर एक्के सूरे माथपर उठा डेढ़ कोससँ आनियो लेलैन।

सिंहेश्वरक मनमे उठलैन जे अखन धरिक जे अपन आ रूपलाल कक्काक परिवाक बीच सम्बन्ध रहल अछि, ओ ओहन रहल अछि जेहेन दू परिवाक बीच निष्ठित सम्बन्ध होइए। विचारक संग परिवारक सभ वस्तु-जातक लेन-देनक सम्बन्ध सेहो चलिये रहल अछि। ओहुना तँ सभ जनिते छी जे आजुक परिवेशमे, जखन बिजलीचालित जीवन बनि गेल अछि, तखन केहनो पैघ-सँ-पैघ अतिथिक सेवा असान भइये गेल अछि, मुदा जखन गोरहा-गोइठा आ लकड़ीक जारनसँ चुल्हि जरौल जाइ छल आ अखनो बहुसंख्य परिवारमे जरिते अछि, तैठाम तँ अकलबेरामे, माने कुसमयमे पाहुन-

परकक मान राखब असान नहियेँ छल, मुदा एते तँ समाजमे अखनो एहेन विचारो आ बेवहारो जीवित अछिए जे सभ सबहक मान-अपमानकेँ अपन मान-अपमान बुझै छैथ, जइसँ एक-दोसरकेँ झाँपन-तोपन दइते छैथ। तँए, केहनो अकलबेर समय किए ने हुअए मुदा समाजक एहेन सहयोग चलिये रहल अछि जे सबहक मान समान भइये गेल अछि। अही खियालसँ रूपलाल बाजल छला।

बाजारक स्थिति रूपलालकेँ आँखिक देखल छेलैन, तँए मन मानि रहल छेलैन जे सिंहेश्वरकेँ नहि बुझल छै तँए आनाकानी करैए, जँ बुझल रहितै तँ खगलक विचार रहितै। रूपलाल बजला-

“सिंहेश्वर, अपना सभक परिवारे कोन बड़का अछि जे मन-माफित काजो करब आ सुखो करब, तखन तँ भेल जे जेहेन पेटबोनिया जीवन अछि तहीमे ने सभ किछु निमाहैत चलब।”

रूपलालक विचार सुनि सिंहेश्वरक मन चौंकलैन। रंग-बिरंगक अनेको विचार मनमे उठए लगलैन। मुदा आगूमे रूपलालकेँ देखि अपन मनक विचारकेँ मनेमे रोकि बजला- “काका, एक तँ अहाँ बजारसँ एते भारी वस्तु अपन पाइ लगा अपना ले अनलौं हेन, तैपर जँ हम ओहिना लेब, माने उधारी, से...।”

सिंहेश्वरक विचारकेँ रूपलाल अपन परिवारक स्थितिये अंकलैन जे अपने टायरगाड़ीक कमाइपर ठाढ़ छी, सिंहेश्वर टेम्पू गाड़ीपर ठाढ़ अछि। जहिना अपना सदिकाल कोनो-ने-कोनो खर्चक भूर परिवारमे फुटले रहैए तहिना ने सिंहेश्वरोकेँ रहैत हेतइ। मुदा अही परिस्थितिमे ने दुनू परिवारक सम्बन्ध सेहो सभ दिनसँ चलैत आबि रहल अछि। तहूमे अखुनका जे समय बनि रहल अछि ओ एहेन गड़ूगर बनि रहल अछि जे केतेको परिवार मेटा जाएत। ओना, मेटाइ आ नइ मेटाइक सेहो दुनू रस्ता अछिए। जँ किछु परिवार मेटाएत तँ

किछु परिवार उठिकऽ अकासो छुबे करत। जहिना बराहक्षेत्रमे कोसी नदीक दुनू पहाड़क मथनीपर किल्ली ठोकि लचकौआ पुल बनौल गेल अछि, जैपर चढ़ला पछाइत, जखन पुल लचि-लचि निच्चाँ-ऊपर हुअ लगैए, तखन चलनिहार नहि खसैए सेहो बात तँ नहियेँ अछि, खसितो अछिए। मुदा जे ओहन धारक ओते ऊँच पुल बनबैक सामर्थ्य बनौलक ओकरा अकास छुबैमे केते देरी लागत। तँए कहब जे जे निच्चाँ मुहेँ खसल अछि ओकरा मरैक डर छै आ जे ऊपर मुहेँ उठल जा रहल अछि ओकरा मरैक डर नइ छै, सेहो बात नहियेँ अछि, सेहो अछिए। मरै-जीबैक डर जहिना दुनूकेँ अछि तहिना जीबै-मरैक नहि अछि सेहो बात नहियेँ अछि। एक दिस जहिना सिंहेश्वरक मनमे अपन सहवर्गीय टेम्पूबला सभसँ गप-सप्प भेने, माने काल्हिसँ गाड़ी-सवारी बन्न हएत, अपने भरि माने टेम्पूबला भरि, समस्याक बीच मन ओझराएल छेलैन तहिना रूपलालकेँ बाजारक देखल हड़बिर्ड़ोसँ अपनासँ आगू बढ़ि समाजक बीचक ओझरी देखबामे आबि रहल छेलैन। तँए एकठाम रहितो माने सिंहेश्वर आ रूपलालकेँ, समस्याक समाधानक विचारमे अन्तर भइये गेल छेलैन। रूपलाल बजला- "बौआ, सिंहेश्वर, कहुना भेलौं तँ हम तोरासँ दोबर उमेरक भेलौं। कन्हाइये भायसँ, माने सिंहेश्वरक पितासँ, भैयारी निमाहैत एलौं हेन, तँए जहिया जे हेतै से हेतै, अखन दुनू परिवारमे दू-तीन मास काज चलै-जोकर समान तँ अछिए ने।"

रूपलालक विचार सुनि सिंहेश्वर बजला- "काका, अहाँ कहुना भेलौं तँ पितातुल्य भेलौं, तँए दुनियाँमे केतौ किछु होउ वा होइत होउ, मुदा पिता आ पितातुल्य कक्काक विचारमे कहियो पुत्रक वा भातीजक प्रति कुदृष्टि थोड़े होइए। मुदा..।"

सिंहेश्वरक विचार सुनि रूपलालक मनमे पितृसिनेहसँ भरल विचार उमैड़ पड़लैन। जहिना तपस्याक पछाइत भोलानाथ महादेव

कोनो तरहक बर देबा लेल उन्मुख भऽ रहिते छैथ तहिना रूपलाल सिंहेश्वरक प्रति उन्मुख होइत बजला- “बौआ सिंहेश्वर, जाबे तक आँखि तकै छी ताबे तक तँ जीवनक आशा बनले अछि, मुइला पछाइत, माने आँखि मुनला पछाइत परोछमे की हएत, तेकरा देखए थोड़े आएब, केहनो बिपैत किए ने पड़त मुदा तोरा...।”

‘तोरा’ सुनि सिंहेश्वरक मनमे आशाक झंकार उठलैन। जे अपने मन अपना मनकेँ कहलकैन, एक पुरुष आ एक नारीक सम्बन्ध जखन दुनियाँक सृष्टि करैए तखन अपन तँ दू परिवारक बीचक सम्बन्ध अछि। हीय खोलि सिंहेश्वर बजला- “काका, अपन मन कहैए जे जहिना अपन आमदनी अछि तहिना ने अहूँक अछि, परिवारो एकरंगाहे अछि, अपना ले जे वस्तु अनलौं हेन से हमरा लेब नीक हएत?”

सिंहेश्वरक विचार सुनि रूपलालक मन आरो उमैड़ पड़लैन। विह्वल होइत बजला- “बौआ, जेते दिन चलत, माने बजारक वस्तु, तेते दिन दुनू गोरेक परिवार ते चलबे करत। तैबीच मे कि हाथपर हाथ राखि बैसल रहब आकि जीवन ले किछु करबो करब। जखन हाथ-पएर अछि तखन एतबे विचार ने मनमे अनैक अछि जे समयानुकूल अपनाकेँ बना लेब। हाथे ने जिनगी चलबैक औजार छी।”

रूपलालक विचार सुनि सिंहेश्वरक मनमे गड़सँ गड़ूगर आ गड़ूगरसँ गड़ समयक संचरण केना होइत चलत, सएह ने बुझिमे आबि रहल छेलैन। सिंहेश्वर बजला- “काका, जाबे अहाँ जीबै छी, ताबे हमहूँ महाभारतक भीम जकाँ पीठपर ठाढ़ रहब।”

❑

शब्द संख्या: 2284, तिथि: 15 सितम्बर 2021

दोसर पड़ाव

आने गाम जकाँ सुकलाराहीमे सेहो रातियेसँ हल्ला हुअ लगल जे ‘करोना आबि गेल.! करोना आबि गेल.! सभ किछु बन्न हएत.! राति-दिन कर्फ़ू लागत.! मलेटरी शासन चलत.! बेकती-बेकतीमे दू गजक दूरी बनबए पड़त, मुँहमे मास्क लगबए पड़त आ सदिकाल हाथ धुअ पड़त..!’

भोर होइते अनेको घटना घटि गेल। ओना, अनेको लॉडस्पीकरसँ प्रचार-प्रसार भइये रहल छल मुदा तैयो घटना भइये रहल छल। चाहक दोकानपर दस-बारह गोरे, आने दिन जकाँ, चाहो पीबैत रहैथ आ एकठाम ब्रैंचपर बैस गपो-सप्प करैत रहैथ कि पुलिसक गाड़ी आएल। अबिते पनरह बीसटा सिपाही उतैर अनधुन लाठी चलबए लगल, केते गोरे तँ दोग-सान्हिमे नुका अपनाकेँ बँचा लेलैन, मुदा किछु गोरे भरि पेट माइर खेलाह। चाहक दोकान परक सभ सामान उठा सिपाही गाड़ीपर लादि विदा भऽ गेल। गाममे भगदर मचि गेल.!

बाल-बोध राजदेव अपन संगी रामेसरसँ भेँट करए विदा भेल। ओना, गाममे एहेन माहौल नहि बनल छल जे एक-दोसरकेँ रस्ता चलैसँ मनाही करैत। चाहक दोकानक घटना सुकलेराहीमे नहि अनेको गाममे भेल। लोक अपन-अपन सभ काज छोड़ि कान ठाढ़ केने रहल जे केतए कोन घटना घटैए।

रामेसर ऐठाम राजदेवकेँ पहुँचते रामेसरक जेठ भाय-

मोतीलाल मार-मार कऽ ई कहैत छुटल जे 'भगमेँ कि नहि भगमेँ।'

जहिना भागैक नाम राजदेव सुनलक तहिना चोटे घुमि घर दिस विदा भेल। डरसँ राजदेवक मन त्रस्त हुअ लगल। घरपर पहुँचैत-पहुँचैत राजदेवक मनमे अदंक पइस गेल, जइसँ अँगनेमे धाँइ-दे खसल। अँगनामे खसिते सिंहेश्वरो आ भुलियो राजदेवकेँ उठा ओछाइपर सुता पंखा चलबए लगल। ओना, ठंढक समय छेलै, माने मार्चक अन्तिम समय, मुदा तैयो डरसँ राजदेव पसीना-पसीना भऽ गेल। किछु कालक पछाइत राजदेवकेँ होश भेलै कि उठि कऽ बैसल। सिंहेश्वर पुछलखिन-

"बौआ, की भेल छेलौ?"

राजदेव डराइत बाजल-

"बाबू, रामेसर ऐठाम गेलौं कि हुनकर भैया बड़ी जोरसँ मारैले दौड़ल छला, नहि भगितौं तँ बड्ड मारितैथ।"

राजदेवक बात सुनि सिंहेश्वर अवाक भऽ गेला। मुदा भुलिया तोष-भरोस दैत बजली-

"बौआ, कोइ जँ अपने आगिये-पानिये निमाहि लेत तँ हमहूँ निमाहि लेब। केकरो ऐठाम जाइ-के काज नहि छौ। स्कूलो बन्ने भऽ गेलौ, अपने ओसारपर बैस। केत्तौ ने जो। जखन पढ़ैक मन हेतौ तँ पढ़िहेँ नइ तँ सुतिहेँ-बैसिहेँ।"

ओना, भुलियाक विचार बेटाक प्रति जे छेलैन से सिंहेश्वरकेँ नीक लगलैन, एक आदमीक गलतीसँ समाजक केकरो ऐठाम नहि जाएब, नीक नहि लगलैन। ओना, ई विचार सिंहेश्वरक मनमे नहि जगलैन जे समाजक केते गोरेक परिवारक संग अबै-जाइक रस्ता बनल अछि आ केते गोरेक परिवारक संग ओहिना बन्द अछि। राजदेवक स्कूलक संगी रामेसर छी तँए ने संगीक रूपमे आबा-

जाहीक रास्ता खुजल अछि। जइ परिवारमे स्कूलक संगी नइ छइ, तइ परिवारमे तँ ओहिना अबै-जाइक रस्ता बन्न छइहे। सिंहेश्वर बजला-

"बौआ, जानियेँ कऽ ते गरीब माए-बापक घर जन्म भेलौ। हमरा कि ओहन ओकाइत अछि जे बेटा-बेटीकेँ पढ़ाएब। मुदा मनमे पढ़बैक लिलसा अछि तँए अपन पेटो काटि तोरा पढ़बै छिऔ।"

पिताक बात सुनि राजदेवक मनमे माता-पिताक कर्तव्यक बोध जगल जइसँ अपनो मनमे माता-पिताक प्रति कर्तव्य-बोधक बीजोरोपण भेल तँए कर्तव्यक प्रति संकल्प मनमे अंकुरल।

आने गाम जकाँ सुकलोराहीमे गौंओ आ सिपाहियोक सहयोगसँ चारू कातक रास्तापर बाँसक खुट्टा गाड़ि बाँसेक ढढी बान्हि रस्ता रोकि देल गेल।

जहिना आन दिन तीमन-तरकारीवाली गाममे घुमि-घुमि तरकारी बेचै छल तहिना आइयो आएल। तरकारीवालीकेँ देखिते रघुनाथ मार-मार कऽ छुटल। गारिक तँ कोनो ठेकान नहि रखलक। मुसलमान परिवारक सुलेखा रघुनाथक मुँहक गारि सुनैत रस्तापर ठाढ़ रहल मुदा बजली किछु ने। तहीकाल सुरतिलाल माने हिन्दू परिवारक, सेहो साइकिलपर तरकारी नेने बेचैले गाममे पहुँचल। सुरतिलालकेँ देखि सुलेखा बाजल-

"भैया, रघुनाथ तरकारी बेचैसँ मनाही करैए, घुमि कऽ जाइ छी।"

सुलेखाक बात सुनि सुरतिलालक मनमे सेहो शंका उठल मुदा अपन जाइतिक अधिक संख्या रहने, तहूमे किछु परिवारक संग कुटुमैतीक सम्बन्ध रहने, घबड़ाएल नहि मुदा रघुनाथक बेवहार सुनि जहिना मनमे शंका जगलै तहिना मनमे ईहो साहस अनलक जे

रघुनाथेक गाम नहि ने छी जे केकरो अबैसँ रोकत आकि भगौत। जँ रोकत तँ कहबै जे तोरा ऐठाम नइ जेबह, लेकिन गाममे तूँ के रोकनिहार होइ छह। गामक बान्ह-सड़क गौंआँ-अनगौंआँ सबहक होइ छइ। जँ तेकर बाद नहि मानि रोकत वा गारि पढ़त तँ गारि देबइ। मारत तँ मारबै। ..सुरतिलाल आगू बढ़ि अपन कारोबार तँ केलक मुदा सुलेखा घुमि कऽ अपना गाम चलि गेली।

झंझारपुर हाटक दिन सेहो छी। आने दिनक हाट जकाँ रातियेसँ वेपारी सभ आबए लगल। भोर होइत-होइत हाट जमि गेल। जहिना वेपारी तहिना खरीदवालसँ हाट भरल रहबे करए कि चारिटा मलेटरीक गाड़ी पहुँच गेल। पचाससँ ऊपर मलेटरी, गाड़ीसँ लाठी लेनहि उतरल, हाटपर अनधुन लाठी चलबए लगल। सौंसे हाट भगदर मचि गेल। के केतए पड़ाएल तेकर ठेकान नहि रहल।

लछमीपुरक सुधिया दादी आ सोनिया दादी, बीस बर्खसँ तरकारीक कारोबार करै छैथ। अपना तँ खेत नहि छैन मुदा गामोक किसानसँ आ गाममे सामान नहि रहने झंझारपुर स्टेशनक वेपारीसँ कीनि कऽ अनै छैथ आ हटिया दिन हाटो करै छैथ, बाँकी दिन गामो सभमे घुमि-घुमि तरकारी बेचै छैथ। ओना, दुनू छैथ असगरे-असगरे परिवारमे, पति सेहो मरि गेल छैन, बेटो नहियेँ छैन तँए असगरे-असगरक परिवार छैन। ओना, पूजीक अभाव माने कारोबार करैमे, कहियो नहियेँ होइ छैन आ कमाइ एते भइये जाइ छैन जे असगरो-असगर रहितो अपन-अपन परिवार छैन, परिवारक सभ बेवस्था सेहो छैन्हे। प्रति दिनक रूटिंग दुनू गोरेक एक्के रंग छैन। घरो दुनूक सटले-सटल छैन।

पूजीक अभाव नहि होइक कारण दुनू गोरेक ई छैन जे जखन कखनो अपन पूजी कोनो कारणेँ सठि जाइ छैन, तखन गामोक

किसान, जेकरासँ सामान कीनै छैथ, सेहो उधार दइ छैन आ झंझारपुर स्टेशनक जे वेपारी अछि सेहो उधार दइते छैन।

दुनू गोरेक बीच माने सुधिया दादी आ सोनिया दादीक बीच, सभ दिनसँ एके रंग सम्बन्ध बनल रहलैन अछि। दुनूक बीच कारोबारक एहेन सम्बन्ध रहल छैन जेना परिवारक बीच होइए। आन कारोबारी जकाँ नहि जे दुनियाँदारीक तँ सभ गप करब मुदा कारोबारक गपमे सदिकाल झूठे बाजब।

ओना, गाममे माने सुकलाराहीमे अनेको रंगक तरकारी किसान उपजौनहि छैथ, मुदा गामक वातावरण देखि सशंकित भऽ खेतसँ सामान, माने तरकारी, अनबे ने केलैन। किसान सभक मन सशंकित होइक कारण बगले गामक, माने कुमारपुरक समाचार छल।

समाचार ई सुनने छला जे कुमारपुरमे तेरह-चौदह गोरे गहुम काटैत रहैथ। मर्द-स्त्रीगण दुनू रहैथ। दस-बारह कट्ठाक कोलामे। सभ सटले-सटले, माने पाहि लगा कऽ गहुम काटैत रहैथ कि पुलिसक गाड़ी सड़क होइत पास करैत रहए। गहुम काटैत देखि गाड़ी रोइक आठ-दसटा सिपाही उतैर, लाठीक प्रयोग तँ नहि केलैन मुदा थापरे-थापर सभकेँ दू-चारि थापर लगा देलकैन। स्त्रीगण सभ झौहैर करि कानए लगली। एते जोरसँ सभ मिलि कानए लगली जे अगल-बगलक आनो-आन गाममे आवाज पहुँच गेल। सभक कान ठाढ़ भेल।

अपन कारोबार बन्न भेल देखि सुधिया दादी आ सोनिया दादी एकठाम बैस अपन जीवनक दुख-धन्धाक गप-सप्प करै छेली। सुधिया दादी बजली-

“दू चारि दिन एहेन दिक्कत हएत। खाइ-पीबैक वस्तुक

कारोबार अपना सभक अछि, ऐ बिना लोककेँ कए दिन निमहत।"

सुधिया दादीक विचार सोनिया दादीक मनमे तेना भऽ कऽ नहि गड़लैन। जेना गड़ैक चाहिऐन। नहि गड़ैक कारण भेलैन जे कुमारपुरक मारि, माने गहुमक खेतबला मारि। सबहक मनमे तेना डरे अहलदिली पइस गेलैन जे मनक सभ किछु हेरा गेलैन। जखन मनक सभ किछु हेरा गेलैन तखन अपन जीवनक कारोबार केना मोन रहितैन। हिया हारि सोनिया दादी बजली-

"दीदी, आब जीबैक कोनो आशा नहि अछि। जेकरा घरमे पुरुष दशा रहै छै, ओकरा पुरुखपर भर रहै छै, मुदा..।"

सोनिया दादीक विचार सुधिया दादीक मन बंशीक घाओ जकाँ घाव केलकैन मुदा पचास बर्खक जीवनानुभव सुधिया दादीक मनकेँ सक्कत बनाइये देने छेलैन। सोनिया दादीक टुटैत मनमे कोरदार वस्तु साटैत सुधिया दादी बजली-

"सोनू, दुनियाँमे कि केकरो अनका कहि कऽ जनम नेने छी जे केकरो भरोस करब। अपन भरोसे जनम नेने छी, अपना आशापर जीयब। तइले मन ओछ करैक कोन खगता अछि।"

थरथराइत मने सोनिया दादी बजली-

"दीदी, घरमे किछु ने अछि.! रस्ता-बाट बन्न भऽ गेल.! कोन उपाय करब?"

सोनिया दादीक विचार सुनि सुधिया दादीक मन सेहो दहललैन, मुदा मनो तँ मन छी किने। जहिना अपन सकताइए तहिना दोसरकेँ सेहो ने सक्कतसँ पकड़ैत सक्कत बनैक गुण अपनामे रखिते अछि। सुधिया दादी बजली-

"सोनू, समाजमे अपन ओहन सामाजिकता रहल अछि जे ने केकरो कहियो किछु दुखेलिऐ हेन, माने अधला केलिऐ हेन आ ने

अखन तक झूठ बाजि झुठियेलिऐ हेन, तखन जँ समाज जीबैत रहत तँ अपनो जीब, नहि जँ समाजे मरि जाएत तखन असगरे जीबे कथीले करब। भलेँ अपने गरीब छी, नइ किछु अछि मुदा एते आशा तँ अपन बाँहि-बलक अछिए ने जे जखन समय अनुकूल हएत, कमा कऽ जीवनकेँ समगम बना लेब।"

सुधिया दादीक विचार सुनि सोनिया दादीक अपनो जीवनक मनक अन्तिम सीमा जगलैन। सीमा जगिते मनमे एलैन जे अन्तिम चीताक पछातिये ने जीवनक नव चिन्तनक जन्म होइ छइ। भेल तँ एतबे ने जे जीबैक अछि। मुदा जीबैक आश नहि अछि। तखन तँ बीचक जे रास्ता अछि तेकरा पकैड़ यएह ने सामंजस कएल जाएत जे मरियो-हरिकऽ जीबैक अछि।

सोनिया दादी बजली-

"दीदी, हिनके मुँह देखि हमहूँ जीबै छी, नइ तँ एहेन समाज जीबए दइत। लुत्ती लगा कऽ आने विधवा जकाँ हमरो ने झड़का कऽ माइर दइत।"

सोनिया दादीक मनमे चैनियत अबैत देखि सुधिया दादी बजली-

"से की सोनू?"

कोनो बुझल बात पुछला पछाइत बाल-बोध बच्चा जहिना हलैस कऽ बजैए तहिना सोनिया दादी बजली-

"दीदी, ई तँ भरि दिन अपन काजक पाछू लगल छैथ तँए दुनियाँ आकि समाजक गप-सप्प नहि बुझै छथिन, मुदा हमरा तँ रेखियो माएसँ ने गप-सप्प होइए, गामक सभ बात ओ बुझैए, वएह सभ गप कहैए।"

सोनिया दादीकेँ समाजक, माने गामक, वैचारिक सम्बन्ध

बढ़ैत देखि पाछूसँ धकियबैत सुधिया दादी बजली- “की सभ गप-सप्प रेखिया माएसँ होइ छह?”

डेढ़ बर्ख सुधिया दादी सोनिया दादीसँ जेठ छैथ। जहिना अनको मुँहक सुनल बात मनमे रोपि लेलासँ अप्पन भऽ जाइ छै तहिना सोनिया दादी अपनबैत बजली-

“दीदी, केना विधवा सभकेँ समाजमे लुत्ती लगा झड़कौल जाइए से कि ई नहि बुझै छथिन।”

ओना, सुधिया दादी अपना ढंगे जरूर बुझै छैथ मुदा अपन सीमांकन केने, माने भेल जे जैठाम एहेन दिशाहीन समाज बनि गेल अछि जे अनकर बहु-बेटीकेँ बेश्याक रूपमे देखैए आ अपन बहु-बेटीकेँ धर्मत्व रूपमे। तैठाम सुधिया दादी अपन वैधव्य पतिव्रत जकाँ निमाहि रहली अछि, से निमाहब बाल-बोधक खेल नइ ने छी। मुदा सोनिया दादीक पेटक बात बुझै दुआरे सुधिया दादी बजली-

“से की सोनू?”

समाजक सेवा केनिहारक विचार जहिना सामाजिक काजमे शक्ति स्वरूप प्रवाहित हुअ लगैए तहिना सोनिया दादी बाजए लगली-

“दीदी, समाज तँ एहेन निरलज अछि जे पुरुषविहीन कोनो महिलाकेँ ‘डायन’ कहि आगिमे झड़कबैए तँ कोनो महिलाकेँ बेश्याक जीवन धारण करबैए। हक-हिस्सा हड़पै दुआरे चरित्रहीन कुल्टा कहि परिवारमे बदनाम सेहो कएले जाइए, तैठाम महिलाक महिलपन बँचाएब साधाराण बात अछि।”

ओना, सोनिया दादीक विचारमे प्रवाह आनै-दुआरे सुधिया दादी अपन विचारकेँ मनेमे दाबि लाभरे-जीभर बजली- “से की?”

‘से की’ कहि सुधिया दादी सोनिया दादीकेँ नमहर ओहन

परती जकाँ खाली जगह आगूमे राखि देलखिन जे सालो-सालसँ परती अछि। चलै-जोकर जँ अछियो तँ चलैक बाट नहि अछि। तैठाम तँ यएह ने नीक हएत जे अपने केमहर जाएब अछि, तइ दिशाकेँ ठेकना विदा होइ। परती रहने हजारो काँट-कुश उभर-खाभर रस्तामे रहिते अछि, मुदा तइमे केकरो छोड़ैत, केकरो पकड़ैत आ केकरो पकड़ियो आ छोड़ियो कऽ चलए पड़ै छइ। सोनिया दादी बजली- "दीदी, अपने दिन पहाड़ सन बुझि पड़ैए, तैठाम आनक मोटा माथपर लेब से पार लागत।"

सोनिया दादी अपना विचारे बाजल छेली मुदा सुधिया दादी अपना विचारे बुझली। बुझली ई जे मनुक्ख जँ अपना भरे ठाढ़ भऽ चलए लगत तखन दुनियाँक रंग केते चिक्कन भऽ जाएत...।

सुधिया दादी आ सोनिया दादी गप-सप्प करिते रहैथ कि भगवानपुरवाली आबि बिच्चेमे बजली-

"दादी, जुलुम भऽ गेलइ.!"

भगवानपुरवाली मुँहक बात- 'जुलुम भऽ गेलइ' सुनि जहिना सुधिया दादी तहिना सोनिया दादी मुँह बाँबि अकानए लगली, मुदा भगवानपुरवाली ओतबे बाजि चुप रहली। सुधिया दादी बजली-

"की जुलुम भऽ गेलइ कनियाँ?"

भूमिका बन्हनिहार रचनाकार जकाँ भगवानपुरवाली बजली-

"अनियाय भऽ गेल.! घोर अनियाय भऽ गेल.!!"

भगवानपुरवालीक बातक कोनो अरथे ने सुधिया दादीकेँ लगलैन। ओना, आगूक बात बुझैले मनमे तेते उत्कंठा जागि गेलैन जे नहि रहल गेलैन, जिज्ञासु होइत बजली- "कनियाँ, मनक अहलदिलीकेँ असथिर करह। की भेल से सोझरा कऽ नीक जकाँ बाजह।"

सुधिया दादीक विचार सुनि भगवानपुरवाली बजली-

“दादी, रमखेतारीवाली मरि गेली.!”

‘रमखेतारीवाली मरि गेली’ सुनि सुधिया दादी अवाक भऽ गेली। अवाक होइक कारण भेलैन जे पहिनेसँ बुझल रहैन जे रमखेतारीवालीकेँ सन्तान होनिहार छै, तखन केना मरि गेल। एक तँ उमेरो बीसे-बाइस बर्खक हेतइ, तखन केना..। सुधिया दादी बजली-

“कनी परिछा कऽ कनियाँ बाजू जे की भेलइ, केना मरल।”

मन असथिर करैत भगवानपुरवाली बजली-

“दादी, काल्हि साँझेसँ रमखेतारीवालीकेँ दरद उपकल। आठम मास छेलइ।”

सुधिया दादी बजली-

“पल्हैनकेँ नइ बजौलकैन?”

भगवानपुरवाली बजली-

“दादी, जखनेसँ रमखेतारीवालीकेँ दरद उपकल तखनेसँ दुनू बापूत कुसुमलाल केतए-केतए ने गेलखिन, मुदा कियो अबैले राजी नहि भेलैन।”

सुधिया दादी- “पल्हैन की कहलकैन?”

भगवानपुरवाली बजली- “पल्हैन कहलकैन जे आठमे मास रमखेतारीवालीक छी, ओकरा कोरोना पकैड़ लेलकै, तैठाम की हमहूँ मरैले जाएब।”

भगवानपुरवालीक मुँहक बात सुनि, माने कोरोनाक नाम सुनि, सुधिया दादी मने-मन विचार करए लगली जे कोरोना बेमारीकेँ कोनो लछन-करम देखमे अबिते ने अछि, तखन लोक एना जहपटार मरि किए रहल अछि। बेमारीक कोनो भाँज नजैरपर चढ़बे ने केलैन।

पल्हैनिक विचारकेँ तहियबैत सुधिया दादी बजली-

“आब की पल्हैनकेँ कियो पुछैए। आब तँ डाक्टर-वैद भेला। किए ने कुसुमलाल डाक्टर ऐठाम पुतोहुकेँ लऽ गेला।”

डॉक्टरक नाओं सुनि भगवानपुरवाली बजली-

“दादी, कुसुमा भैया एको आसन नहि छोड़लैन। सभठाम गेला मुदा कियो मुँहपर माछी नहि बइसए देलकैन।”

सुधिया दादी बजली-

“डाकटर की कहलकैन?”

भगवानपुरवाली बजली-

“अपन सभ कारोबार बन्न कऽ डाक्टर अपने पतनुकान नेने छैथ। खाटपर लादि कऽ जहिना दुनू बापूत डाक्टर ऐठाम रमखेतारीवालीकेँ जीवितमे लऽ गेला तहिना मरल लहास घुमौने एला।”

अखन तक सोनिया दादी चुपे-चाप दुनू गोरेक गप-सप्प सुनि रहल छेली, मुदा तरे-तर माने मने-मन अपन जी, माने जीबैक आशा, उड़ल जाइत रहैन जे हो-ने-हो बेमारी कहीं हमरो ने लपैक कऽ पकैड़ लिअए। जे बेमारी एहेन लसरियाह अछि ओकर लसैर बोलियोक माध्यमसँ तँ लगिये सकैए। मुदा बजली किछु ने।

❑

शब्द संख्या: 2150, तिथि: 23 सितम्बर 2021

तेसर पड़ाव

मनचितलालकेँ दस बजे रातिमे बेटाक फोन एलैन। मोबाइलक घन्टी सुनि मनचितलाल चौंकला जे कुसमयमे फोन केतए-सँ आबि रहल अछि.!

अखन तक जहिया कहियो बेटा–रोहित–क फोन अबै छेलैन ओ दिन-के अबै छेलैन, किए तँ रोहित लोहाक कारखानामे काज करैए। चौबिसो घन्टा कारखानाकेँ चलने तीन पालीमे काज बाँटल अछि। रौतुका पालीमे रोहितक ड्यूटी छै, आठ बजे साँझसँ चारि बजे भोर धरि। रौतुका ड्यूटी भेने रोहितक जीवनक सभ काज अनका हिसाबे विपरीत दिशामे बनि गेल अछि। माने ई जे आन-आन राति-के सुतैए आ दिन भरि अपन काज-उद्यम करैए। मुदा से राहितकेँ नहि अछि, रातिमे ड्यूटी करैए आ दिनमे सुतैए। ओकरा लेल रातिये दिन छी। मुदा मनचितलालक लेल तँ राति राति छी, तँए दस बजे रातिमे मोबाइलक घन्टी सुनि मन चौंकलैन जे केतए-सँ फोन आबि रहल अछि।

साधारण परिवारक लोक मनचितलाल, तँए पढ़ाइ-लिखाइसँ अपना भेँट नहि। से खाली मनचितेलालकेँ भेँट नहि छैन, एहेन बात नहि, अखन धरिक इतिहासमे मनचितलाल सन परिवारमे पढ़ाइ-लिखाइ एबे ने कएल अछि। माने ई जे गामक बहुसंख्य परिवार जकाँ मनचितोलालक परिवार छैन जइमे सरस्वतीक आगमन भेबे ने कएल अछि। तँए कहब जे गाममे सरस्वती-पूजा नहि होइए? से तँ आन गामक पूजासँ बेसी जोरगर होइए। बेसी जोरगर होइक कारण

अछि जे आने गामक लोक जकाँ सुकलाराहीक लोकक मनमे सेहो बिसवास बनले छैन जे जेते धुमधामसँ सरस्वती-पूजा करब ओते सरस्वती खुशी हेती आ जखने खुशी हेती कि ज्ञानक बरखा बरिसाबए लगती।

मनचितलालकेँ बेटे माने रोहिते, अपन पहिलुका मोबाइल दऽ देने छैन ओहीसँ दुनू बापूतक बीच गप-सप्प होइ छैन। मनचितलालक मोबाइलिक छोट दुनियाँ छैन, जइसँ आन जकाँ किए मोबाइलेकेँ एकटा दुनियाँ (संसार) बुझता। किए बुझता जे मोबाइल एकटा ओहन यंत्र छी, जइमे दुनियाँ समाएल अछि। छोट दुनियाँ रहने, माने मोबाइलक छोट दुनियाँ रहने, मनचितलाल ने मोबाइलिक नम्बर बुझैत आ ने नाम-ठेकान। एक तँ ओहुना अंग्रेजीमे रहने बहुत लोक नहियेँ बुझै छैथ मुदा मनचितलालकेँ बुझैक खगते ने होइ छैन।

घन्टी सुनि मनचितलाल मोबाइल उठा रिसिभ केलैन कि कानैकालक हिचुकी कानमे पड़लैन। ओना, आधा-छिधा मनचितलाल रोहितक आवाज अकाइन रहल छला, मुदा कनैक कारण नइ बुझने मनमे बिसवास भइये ने रहल छेलैन जे रोहित छी। ओना, रोहितो अनाड़ी युवक जकाँ अछिए। माने ई जे जहिना अनाड़ी युवक कानबकेँ पैघ बुझैए आ बाजबकेँ कम, माने गौण। तहिना रोहितो बुझिते अछि। भाय, जखन सभकेँ सभ बुझिते छी जे मनुक्ख अहूँ छी आ हमहूँ छी, तखन जहिना अहाँक जीवन अछि तहिना ने हमरो अछि। जिनगीक मूल तत्त्वक जरूरत जहिना अहाँकेँ अछि तहिना ने हमरो अछि, तइ बीच कोनो विचारकेँ छिपा कऽ रखैक कोन खगता अछि।

ओना, मनचितलाल सुतैक ओछाइनपर छला, नीनक आगमन सेहो भइये गेल छेलैन, मुदा कचेठ नीन रहने मोबाइलिक घन्टीसँ

भग्न भऽ गेलैन, तँए मोबाइल उठा रिसिभ केलाह। संयोग बनलैन जे पत्नी सेहो भनसा-घरक काज सम्हारि लगमे आबि गेल छेली। मोबाइलमे हिचुकीक आवाज सुनि देवसुनरि बुझि गेली जे रोहितक आवाज छी, बजली- "बौआक, कानैक अवाज छी.!"

'बौआ' सुनि मनचितलालक मनपर सेहो मन भरि पानि पड़लैन। पानि पड़िते मनचितलालक मन मानि गेलैन। बजला-

"बौआ रोहित.!"

"हँ।"

-रोहितक बात बुझैसँ पहिनहि मनचितलाल तोष-भरोस दैत बजला-

"बौआ, हमरा अछैत तूँ किए कानै छह?"

रोहित बाजल-

"तेहेन विपत्तिमे पड़ि गेल छी बाबू जे कानब छोड़ि जीवनक कोनो आशा शेष नहि रहल.!"

'कानब छोड़ि जीवनक कोनो आशा शेष नहि रहल' कानमे पड़िते मनचितलाल सशंकित भऽ गेला जे विपत्ति तँ विपत्तिये छी, बेगरता पाबि लोक पाँचो रुपैआ ले विपत्तिमे पड़ि जाइए मुदा जैठाम कानब छोड़ि दोसर आशा शेष नहि अछि तैठाम तँ साधारण विपत्तिसँ पैघ विपत्ति भेबे कएल।

विपत्तिक बोनमे वौआइत मनचितलाल अर्द्धचेतनावस्थामे पहुँच गेला जइसँ बाक हरण भऽ गेलैन। बेटाक हिचुकबसँ पतिक मुँह बन्न देखि देवसुनरि पति हाथसँ मोबाइल लैत बजली-

"बौआ, कनलासँ किछु ने होइ छइ। केहेन विपत्तिमे पड़ल छह से बाजह। विपत्ति तँ सहजे विपत्ति छीहे, मुदा विपत्तियो विपत्तिमे

अन्तर होइते अछि।"

रोहित बाजल-

"माए, काज छुटि गेल.!"

बेटाक मुहसँ 'काज छुटि गेल' सुनि देवसुनरिक मनपर कोनो तेहेन असर नहि पड़लैन जइसँ मन विचलित होइतैन। बजली-

"एकठाम ने काज छुटलह, दोसरठाम पकैड़ लाए। जखन धुआ-काया काज करै-जोकर छहे, तखन दुनियाँ कि कनियेँटा अछि जे एकठाम काज छुटने कानै छह।"

मनक अपन सभ बेथा रोहित बाजिकऽ निकालए चाहै छल मुदा अपने मन रोकि रहल छेलै जे एक तँ ओहुना माए-बाबू उमेरक मारि माने बुढ़ाड़ीक मारिसँ मर्माहत छथिए, तैपर हमहूँ अपन विपत्ति माथपर लादि दिऐन सेहो केहेन हएत। मुदा लगले रोहितक अपने मन कहै जे जँ बेटा अपन बेथा माता-पिताकेँ नहि कहत तँ दुनियाँमे कहत केकरा। हँ, जँ अपन माए-बाप जीवित नहि रहितैथ तखन दोसर स्थिति होइत। किए तँ कोनो विचारकेँ छिपाइयो कऽ राखब उचित नहियेँ होएत।

रोहित बाजल-

"माए, तेहेन करोना बेमारीक हवा उठल अछि जे दवाइ-डाक्टरक खगता रहिये ने गेल अछि मलेटरी हाथसँ चौबीसो घन्टा भगौल जाइए।"

रोहितक विचार देवसुनरि नीक जकाँ नहि बुझली मुदा नहि बुझबकेँ मुहसँ बाजब उचित नहि बुझि देवसुनरि बजली-

"बौआ, गामक की तोहींटा मुम्बैमे छह, गामक तँ बहुतो लोक अछि। संगी-साथी ऐठाम जा कऽ अपन काज सम्हारह।"

रोहितक हिचुकीक आवाज आरो तेज हुअ लगल। मुदा मनकेँ थतमारैत बाजल-

“माए, गौंआँ-घरूआ जे सभ छैथ ओ दूर-दूरमे काज करै छैथ। हम असगरे ऐठाम छी।”

अखनो तक देवसुनरि कोरोनाक बात नहि बुझि पेब रहल छेली। ओना, गामक हवामे सेहो कोरोनाक हवा पसैर रहल छल मुदा तेकर मिसियो भरि प्रभाव देवसुनरिपर नहि पड़ल छेलैन। जहिना सबदिना जीवन पारिवारिक छेलैन तहिना अखनो छैन्हे। माए-बेटाक बात सुनि, माने देवसुनरि आ रोहितक बात सुनि, मनचितलाल बजला-

“बौआ, गामे चलि आबह।”

पिताक बात सुनि रोहित बाजल-

“बाबू, जखने कारखाना बन्न भेल तखने कारखनाक जेते लेबर अछि सभकेँ बिना हिसाब-बारी देने, मलेटरी हाथे डेरासँ सेहो निकालि देल गेल अछि। सभ चिज बन्न भऽ गेल अछि। ने खेबा-पीबाक कोनो दोकान-दौरी खुजल अछि आ ने सड़कपर गाड़ी-सवारी चलैए।”

मनचितलाल मुम्बै देखने नहि छैथ, तँए गामे जकाँ मुम्बैकेँ सेहो बुझि रहल छैथ। तैसंग मलेटरीक जे हरकत शहरमे भेल ओ गाममे नहियेँ भेल छल तँए मलेटरीक बेवहारकेँ सेहो नीक जकाँ नहि थाहि पेब रहल छला। मनचितलाल बजला-

“ऐठामसँ अखन हम कइये की सकै छिअ। ओइठामक तँ अपने ने बुझबह। अपन की विचार करै छह?”

रोहित बाजल- “असमसान जकाँ शहर सुन्न भऽ गेल अछि। हमरा सन-सन काजसँ निकाललाहा लेबर सभ सड़कपर वौआ रहल

अछि। तहूमे सड़कपर तेते ने मलेटरी गस्त लगा रहल अछि जे दू गोरेकेँ एकठाम ठाढ़ो ने हुअ दइए।”

रोहितक विचार सम्पन्नो ने भेल छल कि मोबाइलमे रिंग भेल, जे मनचितलालो सुनलैन। मोबाइल रिसिभ करैसँ पहिने रोहित बाजल-

“बाबू, अहाँ फोनेपर रहू। पहिने कने बुझि लइ छी, पछाइत फेर गप करब।”

गामेक संगी सुन्दरलालक फोन छेलइ। सुन्दरलाल आ रोहित दुनू गोरे मैट्रिक पास केला-पछाइत धियानीलालक संग मुम्बै गेल छल। धियानीलाल पढ़ल-लिखल तँ नहि छैथ मुदा देहो दशा आ बोलियो-वाणीसँ विपरीत रूप छैन्हे। मुम्बैमे चालू-पुरजा लोक बुझिते छैन। बीस साल पहिने जे गाम छोड़ि मुम्बै एला से दोहरा कऽ गाम नहि घुमला। गामक लोकक नजैरमे धियानीए छी। अखनो धनमे नामसँ धियानी जानल जाइ छैथ, मुदा अपन बुधि-बाँहिक बलसँ मुम्बै सन शहरमे पहचान बनौनहि छैथ। किए ने पहचान रहतैन। अपन गामक संग अड़ोसो-पड़ोस गामक सइयोसँ ऊपर लोककेँ मुम्बैमे काज धरौने छैथ। ओहुना जँ कोनो अपन महल्लाक कारखाना वा दोसरो-तेसरो काजमे लेबरक जरूरत होइए तँ धियानीए-लालक माध्यमसँ काज सेहो चलिते अछि। ..जखने कोरोनाक हवा उठल कि पहिलुके तोरमे, माने हवाक पहिलुके झोंकमे धियानीलालकेँ मलेटरी पकैड़ जहलमे ढुका देलकैन। तँए धियानीलालक आशा सेहो रोहितक मनसँ हटिये गेल अछि।

चौबीस घन्टा सड़कपर ठाढ़ भेलापर रोहितक मनमे उठल जे जखन सड़कपर मरबे अछि तखन किए ने सड़क पकैड़ पएरे गामे चलि जाइ। कोनो कि एहेन गाम गेनिहारे आकि सड़कपर अन्न-पानि

बेतरे मरनिहारे हमहींटा छी आकि हमरा सन बहुतो लोक अछि। जे गति सभकेँ हेतै से गति हमरो हएत। गामक दिशाक सड़क पकैड़ रोहित अपन झोड़ा कन्हामे लटका गाम दिस विदा भेल।

असगरे रोहित, ओना सड़कपर धाड़ीनुमा लोक चलिये रहल छल मुदा केकरो-सँ-केकरो ने गप-सप्प होइ आ ने खैनी-बीड़ी। जहिना पतिआनी लागल यात्री, तहिना पतिआनी लागल बन्दूकक हाथे मलेटरी। कहलो जाइए जे 'मरता किया नहि करता' रोहितक मनमे सेहो आबि गेल छल जे जखन मरबे अछि तखन अपन मातृभूमिक तीर्थस्थलपर मरब सभसँ नीक मरब छी। रोहितक मनमे किए उठैत जे पछुआएल मशीनक कारोबारकेँ मारि नवका मशीन अपन घर बना रहल अछि। जइसँ लेबरक छँटनी करब अछि। नव मशीन ले नव लोकक खगता होइते छइ। किए मनमे उठैत जे डॉक्टर सन बौद्धिक वृत्तिक लोक सभ अपन जीविते प्राण छोड़ैपर तैयार भऽ गेल छैथ। यएह तँ खेल छी।

❑

शब्द संख्या: 1324, तिथि: 29 सितम्बर 2021

चारिम पड़ाव

मास दिनक जे समाजक बीच उथल-पुथल भेल ओ अनेको रंगक भेल। कियो छुब्द रहैथ जे कोरोना जखन एहेन जान लेबा बेमारी अछि तखन तँ ओहन चेतावनी डॉक्टर आ दवाइ-उत्पादककेँ देबा चाही जे जल्दी-सँ-जल्दी ऐ रोगसँ देशमुक्त हुअए, तइमे मलेटरीक बन्दूकक कोन खगता छइ।

कियो कहैत जे अखन अपना परिवारमे कियो ने बीमार अछि, तखन किए मुँह झाँपि कऽ बाजब। आ जखन मनमे अपने फड़ि जाएत जे अहाँ लिऐ हम रोगी छी आ हमरा लिऐ अहाँ, तखन निरोग के रहल। आ जखन कियो निरोगे ने रहल तँ ओइ रोगक इलाज केकर के करत? पहिने अपन इलाज जखन अपने कऽ लेत तखन ने दोसरकेँ कहत जे हम ऐ रोगक इलाज करै छी वा हमरासँ इलाज सम्भव अछि।

कियो बजैत जे देखै नइ छहक जे परसू जे दारूक ट्रक पकड़ाएल ओ केतए-सँ अबै छल। रस्तामे केतौ मलेटरी नइ छल जे ओकरा पकड़ैत.? एक तँ ओहिना लोक कोरोनासँ ग्रसित अछि, तैपर जे दारू पीआ-पीआ आरो बेमारी बढ़ाएत, से के रोकत।

वातावरणक एहेन रूप गाममे बनि गेल जे दिनानुदिनक जीवनोपयोगी वस्तुक अभाव हुअ लगल। जेकर प्रभाव प्रति बेकतीपर पड़ल। मास दिनसँ राजदेव एको अक्षर पढ़ि नहि सकल। जेहो पढ़ने छल सेहो निच्चाँ मुहेँ भेल जाइ छेलइ। संगी-साथीक सहयोग सेहो समाप्त भऽ गेलइ।

सिंहेश्वर अपने बेथे ऐ दुआरे बेथाएल जे जे परिवार हमरापर आश्रित अछि आ अपन कामे-धाम चौपट भऽ गेल, ओ परिवार कए दिन आँखि तकैत ठाढ़ रहत..! तँए सिंहेश्वर अपन परिवारक सोझा किछु ने बजैत। माने ने पत्नीए आ ने बेटेकेँ किछु नीक-अधलाक बात कहैत। खाएर.., देखो-देखी तँ दुख काटले जाइए। अपन मेटाइत जीवन देखि राजदेवक मनमे उठलै जे जखन अपना किताबो नहि अछि आ पढ़ौनिहार शिक्षको नहियेँ छैथ तखन तँ जेतबे-तेतबे, जएह-सएह जे हएत ओ अपनहि केने हएत। काजेक गाछमे ने मीठगर फल फड़ैए..! राजदेव सिंहेश्वरकेँ कहलकैन- "बाबू, इस्कूलो बन्ने भऽ गेल आ एते दिन संगी-साथी ऐठामसँ किताब आनि पढ़ै छेलौं सेहो सभ बन्ने भऽ गेल, तँए किताब कीनब।"

ओना, परिस्थिति ई अछि जे अखन किताबक दोकान बन्न भेने, किताबो नहियेँ भेटैत, मुदा से बात राजदेवक मनमे बचपनाक दुआरे उठबे ने कएल। सिंहेश्वर अपने घरक नूने-तेलमे तेना पस्त भऽ गेला जे हबटुटू साइकिल जकाँ खड़खड़ाइत चलै छला। ओना, ई बात लोको मुहेँ आ राजदेवोक मुहेँ सिंहेश्वर सुननहि छला जे विद्यार्थीकेँ पढ़ैले इस्कूलेसँ किताब भेटैए। तँए सिंहेश्वर किताबक खर्चसँ अपनाकेँ फारकती बुझैत रहैथ। मनमे उठलैन जे एना तँ पुरना महाजनीमे होइ छल जे बहीमे सुन्ना देबे महाजन बिसैर जाइ छला जइसँ फारकती भेल खदुका पुन: कर्जक तरमे कर्जदार बनले रहि जाइ छला। जखन बेटाक पढ़ैक किताबक समस्या समाप्त भऽ गेल तखन बेटा तगेदा किए करैए जे किताब कीनब, पढ़ाइ बन्न अछि.! सिंहेश्वर बजला- "बौआ, जखन सभकेँ इस्कूलेसँ किताब भेटै छै तखन अनका केना छै आ तोरा किए ने छौ?"

राजदेव बाजल- "बाबू, सौंसे किलासेमे पाँचे गोरेले किताब आएल छल आ बाँकी विद्यार्थी बाँकीए रहि गेल।"

बेटाक मुँहक कहल बातक कोनो भाँजे ने सिंहेश्वरकेँ लगलैन। अपने मन कहलकैन जे जखन सभकेँ किताब भेटैक अछि तखन पाँचे गोरेकेँ किए भेटत आ आरो गोरेकेँ किए ने भेटत.? मुदा अपने मन सिंहेश्वरकेँ कहलकैन जे राजदेव अखन बच्चा अछि तँए ई बात थोड़े बुझैत हएत। से नहि तँ मास्टर साहैबकेँ पुछबैन। फेर सिंहेश्वरक मनमे अपने उपकलैन, जेना सभकेँ उपकैए, जे एक दिस लोक पढ़ब-लिखबकेँ माँ सरस्वतीक सेवा बुझै छैथ, जे शुभ्र-स्वच्छ-शीतल समीर सदृश सरस्वती छैथ, तैठाम देखै छी जे आँगन-बाड़ी हुअ कि मध्यान्ह भोजन, पढ़ाइ-लिखाइ हुअ आकि परीक्षाक परिणाम, विद्याक भवन- विद्यालय बनबैक हुअ आकि पुस्तकक पुस्तकालय, सभमे धुरझाड़ बेइमानी-घोटाला भइये रहल अछि, तखन एहेन संस्था सभमे सेवा केनिहार आ सेवा लेनिहारक गति केहेन हएत? आ जखन सभ तेहने भऽ जाएत, माने घोटल्ले-बेइमानी केनिहार, तखन ओ विद्या-भवन मन्दिर रहत आकि टटघर-फुसिघर बनत? ..सिंहेश्वरक अपने मन मनाही केलकैन जे अपने कि कोनो हनुमानजी छी जे लंकामे लक्ष्मणकेँ शक्तिवाण लगने सिर संजीवनीक बदला पहाड़े उठा कऽ आनि लेलैन। अपने तँ मनुक्ख छी, जँ अपन जीवनक मात्र एकोटा सिर संजीवनी भेट जाएत तैयो जीवन काम-धामपर पहुँचिये जाएब। तँए अपना कोन मतलब अछि जे राजधानीक ऑफिस जकाँ बिजली विभागक फाइल वित्त-विभाग दिस आ वित्त विभागसँ कॉमर्सियल विभाग दिस अनेरे घुमबैत-फिड़बैत रहब। अपना तँ ओतबे मतलब अछि जे पुस्त-पुस्ताइनिक बीच बेटा केना मैट्रिको पास कऽ लेत। जइ घरमे अखन तक किताब-कागजक आगमन नहि भेल अछि तइ घरक ने प्रश्न छी.! मने-मन सिंहेश्वर अपन मनकेँ मजगूत करैत विचार केलाह जे अनेरे आन-आन शिक्षकक भाँजमे की पड़ब, सभसँ नीक शिक्षक अपन पड़ोसी

गामक देवकान्ते बाबू छैथ जे सोझमतिया लोको छथिए आ सोझचलिया चालियो छैन्हे। झूठ-फूसकेँ ओ बेवहारिक रूपमे माने छैथ जे बच्चाकेँ पढ़बैक नोकरी करै छी, तँए जेते इमानसँ पढ़ाएब अछि तइसँ कनी-मनी बेसीए पढ़ेबै मुदा घटबी नइ करबै। बेटाक मांग जे 'किताब नइ अछि' सुनि सिंहेश्वरक मन एतेक उत्प्रेरित भऽ गेलैन जे देवकान्त बाबूसँ भेँट करैक मन बना उठिकऽ ठाढ़ भऽ गेला। घनघोर कारी मेघसँ छारल अकास जहिना पूर्वा-पछिया हवाक झोंक पेबिते उड़िकऽ बिला जाइए, तहिना सिंहेश्वरक मनमे परिवारक सभ करिपन उड़ि बेटाक किताबपर केन्द्रित भऽ गेलैन। सिंहेश्वर बजला-

"बौआ, किताबक नाओं लिखि पुरजीपर दऽ दे। भीखो मांगि तोरा हम किताबक जोगार कइये देबउ।"

पिताक विचार सुनि राजदेवक मनमे सेहो पढ़ैक दृढ़पनक संकल्प पनपलै। मुदा बालमन रहने कनिक्के अगुआ कऽ संकल्प लेलक जे जँ पिता किताबक जोगार कऽ देता तँ हमहूँ पढ़िकऽ मैट्रिक पास करि कऽ देखा देबैन।

किताबक नाओं लिखि राजदेव पिताक हाथमे पुरजा दैत बाजल-

"बाबू, जँ अपना किताब भऽ जाएत तँ अपनोसँ किछु-ने-किछु पढ़बे-लिखबे करब।"

बेटाक बात सुनि सिंहेश्वरक मनमे उठलैन जे बापो-पुरखा बजै छला जे 'घसन विद्या लपटन जोर, नइ किछु तँ थोड़बो-थोड़' होइते अछि। जे हाइकोर्ट देखबे ने केलक ओ कानूनक पेंच केना बुझि पाओत। ई नहि ने जे मिथिला राज्य मैथिली भाषाक आधारपर बनइ, आ भीतर ई पूबरिया छी, तँए मैथिली छीहे नहि। ई पछबरिया

छी, ई दच्छिनबरिया छी, तँए मैथिली छीहे नहि। जखन अपने मुहेँ 'मैथिली नहि' कहै छिऐ, तखन कोन भाषाक आधारपर मिथिला राज्य हएत की ओ राज्य केहेन बनत आ ओइ राज्यक काज की हएत? कोनो राज्य ओइ राज्यक सन-साधनसँ समृद्धि बनैए, नहि कि पिताक देल चारि कट्ठा घराड़ी पाँचो बेटा बाँटि सोलह धूर लऽ कऽ नाचने..।

सिंहेश्वरक मनसँ कोरोनाक सभ प्रतिबन्ध हेरा गेलैन आ प्रवल रूपसँ जगि गेलैन जे सभसँ पहिने देवकान्त बाबूसँ भेँट करब आवश्यक अछि। ओ जेना कहता तेना करब। अपने नइ ने पढ़ै-लिखैक भाँज बुझै छी, मुदा ओ तँ शिक्षके छैथ। इमानदार लोक यहए ने विचार करै छैथ जे जे अपने नहि बुझी ओ बुझनिहारसँ बुझि काजकेँ अगुआबी। ओना, बुझनिहारो दू तरहक होइते छैथ, एकटा होइ छैथ शाब्दिक आ दोसर होइ छैथ बेवहारिक। सभ तरहक काजकेँ अपन-अपन बेवहारिक रूप होइ छै, जे कर्मगत फल दइते अछि। एते तँ मानले जा सकैए जे जे आदमी बी.ए. पास छैथ, ओ बी.ए. तकक अनुभवी भेबे केलाह। एक तँ ओहुना लोक देवकान्त बाबूकेँ इमानदार शिक्षक बुझि बेरागी बुझिते छैन, जे ने हुनका खेबा-पीबाक ठेकान छैन आ ने ओढ़ै-पहिरैक। कहनिहार तँ गाम-घरमे पसरले अछि जे कियो हुनका अजाति माने ओ सभक ऐठाम खेबो-पीबो करै छैथ आ अपना ऐठाम सभकेँ खुएबो-पीएबो करै छैथ, कहै छैन तँ कियो बताह कहै छैन। देवकान्त बाबूक अपनो बेवहार सएह छैन जे फाटल-मैल धोतियो आ कुरतो पहीरि सासुर-समधियौर जाइते छैथ। मुदा किछु छैन, पढ़निहार बच्चा तँ हुनका बरद पुत्र शिक्षक मानिते छैन। ओना, देवकान्त बाबू अपन चालिक प्रति एते आश्वस्त छथिए जे 'हाथी चलए बजार, कुत्ता भूकए हजार' समाजो तँ एहने अछि।

देवकान्त बाबू अपना धुनिमे मस्त दरबज्जापर बैसल रहैथ कि सिंहेश्वर पहुँच कनी फरिक्केसँ बजला-

“प्रणाम, मास्सैव.!”

आवाज सुनि जखन देवकान्त बाबू उनैट कऽ तकलैन तँ देखलैन जे पड़ोसी गामक सिंहेश्वर छिया। प्रणामक उत्तर दैत मजाक स्वरूप बजला- “सिंहेश्वर, रास्ता केना टपलौं। बन्दूकबला सभ किछु ने कहलक?”

ओना, ग्रामीण इलाकामे रस्ता-पेराक रूप थोड़ेक बदलल जरूर अछि मुदा सोल्होअना शहर-बाजार जकाँ बन्न नहियेँ भेल।

देवकान्त बाबूक बात सिंहेश्वर सुनलैन जरूर मुदा जे कान-बात देबा चाही से नहि दैत बजला-

“मास्सैव, अहींसँ काज अछि तँए एलौं हेन।”

सिंहेश्वरक बात सुनि देवकान्त बाबूक मनमे अनेको बात एक्के बेर नाचि उठलैन। नाचि उठलैन जे सिंहेश्वर टेम्पू चलबै छैथ, भाड़ा-किराया तँ एको दिनक बाँकी नहि छैन, तखन किए एला? फेर अपने मन रोकैत कहलकैन, एहनो तँ सम्भव भइये सकैए जे विद्यालयक कोनो काजे आएल होइथ। फेर अपने मन रोकि कहलकैन जे विद्यालयमे शिक्षक ने छी, पढ़बैक भार अछि, से तँ स्कूले बन्न अछि, तखन किए सिंहेश्वर एला?

जहिना रंग-रंगक प्रश्न देवकान्त बाबूक मनमे उठैत रहैन तहिना रंग-रंगक जवाबो अपने मनमे आबि जाइन। कोनो गड़ नहि देखि देवकान्त बाबू बजला- “सिंहेश्वर, तेहेन समय भऽ गेल अछि जे चिन्हारो लोक अनचिन्हार भेल जा रहल छैथ।”

जहिना अपना धुनियेँ देवकान्त बाबू बजला तहिना अपने धुनियेँ सिंहेश्वर बजला- “मास्सैव, सुनै छिऐ जे इस्कूलमे बच्चा

सभकेँ सरकारे दिससँ पढ़ैले किताब भेटै छै से हमरा बच्चाकेँ किए ने भेटल?"

सिंहेश्वरक मुहसँ शिकायतनुमा विचार सुनि देवकान्त बाबूक मनमे उठलैन जे अनेरे जे सागिर्दीक विचार उठाएब से उचित नहि। जखन अपने मात्र पढ़बै तकक भार माथपर अछि तखन ऑफिसक क्रिया-कलापक भार किए अपना माथपर लेब। बजला- "सिंहेश्वर, अहाँक विचारकेँ हम नहि काटै छी। मुदा इस्कूलमे अपन की स्थिति अछि से पहिने कहि दइ छी।"

नव-नव विचार सुनने सिंहेश्वरक मन सेहो आकर्षित भइये गेलैन, तइसँ मनक तापमे उतिप्त आबिये गेलैन। सिंहेश्वर बजला-

"मास्सैव, इस्कूलक तँ कोनो बात अपने नहियेँ बुझै छी। तँए अपनेसँ बुझए एलौं हेन।"

सिंहेश्वरक बात सुनि देवकान्त बाबूक मन ठमकलैन। ठमकलैन ई जे स्कूलमे तँ सइयो रंगक काज अछि। ओना, बच्चाक लेल किताबक चर्च सिंहेश्वर उठा चुकल छैथ, मुदा एहनो तँ सम्भव अछिए जे दोसरो-तेसरो काज होइन। जे काज अपना बुते सम्भव अछि ओ तँ कइये सकै छी आ जे सम्भव नहि अछि से भलेँ नइ हुअए तँ तइले 'नहि' कहबैन। देवकान्त बाबू बजला-

"की बुझए चाहै छी सिंहेश्वर?"

देवकान्त बाबूक मिलनसार बात सुनि सिंहेश्वर बजला-

"मास्सैव, नौउए-कौउए-के एकटा बेटा अछि। अखन तक खनदानमे कियो दसखतो करब नहि जनै छला..।"

सिंहेश्वरक पेटक सभ बात मुहसँ निकललो ने छेलैन कि बिच्चेमे देवकान्त बाबू बजला- "सिंहेश्वर, एहेन अहींटा खानदानमे नहि अछि, गामक बारह-सँ-चौदहअना, माने पचहत्तैर-सँ-पनचानबे

प्रतिशत परिवार एहेन अछिए जइमे अखन तक पढ़ब-लिखब शुरूहो ने भेल अछि। तहूमे तेहेन हवा उठि गेल अछि जे ओहो दूअना-चारिअना रहत कि मेटाएत सेहो ठीक नहि..!"

देवकान्त बाबूक विचार सिंहेश्वर नीक जकाँ नहि बुझलैन। बजला-

"से की, मास्सैव?"

सिंहेश्वरक प्रश्न सुनि देवकान्त बाबू मने-मन विचारलैन जे सिंहेश्वर पढ़ल-लिखल नहि छैथ, पढ़ल-लिखलकेँ बुझाएब जहिना आसान अछि तहिना कठिन सेहो अछिए। ..लगले अपने मन बल दैत कहलकैन जे जे शिक्षक गाम-समाजसँ दूर रहि पढ़बै छैथ, तिनका ने बुझाएब कठिन छैन मुदा अपन तँ चौबीसो घन्टाक जीवन समाजसँ जुड़ल अछि। केना अही समाजमे रहि परिवारो चलबै छी आ अपनो चलै छी। मनुक्खक माप तँ क्रियागत अछि। जखन विद्यालयमे रहब तखन अपने शिक्षक भेलौं आ सिंहेश्वर अभिभावक भेला। मुदा जखन पड़ोसी गामक छिया तखन तँ भैयारियेक सम्बन्ध ने भेला। किए ने अपन भैयारी स्थापित करैत गप-सप्प करी। देवकान्त बाबू बजला-

"सिंहेश्वर, समाजमे सभसँ पैघ डॉक्टर, इंजीनियर, प्रोफेसर, वकील.., यएह सभ ने भेला।"

देवकान्त बाबूक सोझगर विचार सिंहेश्वरकेँ बुझि पड़लैन। बजला-

"हँ, से तँ वएह सभ छथिए।"

सहमत होइत सिंहेश्वरकेँ देखि देवकान्त बाबू मने-मन विचार करए लगला जे बजैक क्रममे तँ चारि कोटिक पढ़ल-लिखल लोकक चर्च उठा देलौं, मुदा चारूक बीच अकास-पतालक अन्तरो तँ

अछिए। चारूक चारि रंगक जीवनो छैन आ अध्ययनो तँ छैन्हे। तैठाम जँ मिलल-जुलल विचार आगू बढ़ाएब तखन तँ गज-पट भऽ जाएत। जइसँ जिनका बुझबए चाहै छी से नहि बुझि पौता। तँए नीक हएत जे एक-एककेँ फुटा-फुटा बुझा दिऐन। ओना, मन मानि गेलैन जे चारूकेँ फुटा-फुटा, माने एक-एककेँ बुझाएब बेसी नीक हएत। मुदा जखन एक-एकपर नजैर दौड़ौलैन तँ बुझि पड़लैन जे एक-एकेमे अनेक-अनेको अछि..। अपन मनक विचारकेँ समटैत देवकान्त बाबू बजला-

"सिंहेश्वर, ओना तँ चारि तरहक पढ़ल-लिखल लोकक जीवनक चर्च उठेलौं हेन मुदा पहिने ई बुझि लिअ जे चारूमे सेहो अनेको रूप अछि। तँए, पहिने मात्र इंजीनियरक चर्च करै छी।"

'इंजीनियरक नाओं' सुनि सिंहेश्वरकेँ टेम्पूक एकटा यात्री मोन पड़ि गेलैन जे रेलवे स्टेशनपर एकटा इंजीनियर परिवारक संग सवारीक रूपमे भेटल रहैन। सवारीक दुनू अर्थ होइए। सवारी माने वाहन सेहो भेल आ यात्री सेहो भेला। ऐठाम यात्रीक अर्थमे अछि। गमैया लोक सिंहेश्वर, ओना दू कोस हटल सवारियो गामेक छेलैन मुदा जमशेदपुरमे रहै छला। टेल्कोमे इंजीनियर छला। सवारी देखि सिंहेश्वर लगमे पहुँचला तँ इंजीनियर साहैब मरदा-मरदी अपने गप-सप्प नहि केलैन। पत्नी सुचित्रा सिंहेश्वरक संग गप-सप्प करए लगली। सिंहेश्वरक मनमे उठए लगलैन जे स्त्रीगण जाति बड़ महगोरिया होइए। जेतबो उचित भाड़ा हएत तहूमे दू-चारि रुपैआ कम्मे देत। ओना, स्त्रीगणोक महिरमकेँ पुरुख जनिते छैथ जे साए रुपैआक साड़ीकेँ जँ पान साए रुपैआ दाम सुना दिऐन तँ खसराहो-मसराह साड़ी नीक भइये जाइए। तैसंग ईहो होइते अछि जे हजारो रुपैआक साड़ीकेँ जँ साए रुपैआ दाम कहबै तँ ओ अधला भइये जाइए। खाएर जे होइए, सिंहेश्वरकेँ तइसँ कोन मतलब छैन। मतलब

छैन एतबे जे स्त्रीगण जकाँ जँ पुरुख भाड़ामे एको पाइ कम देता तँ मुहेँपर कहबे करबैन जे मौगियाहा पुरुख छी। एकर माने ई नहि बुझब जे जिनगीक आनो-आन क्षेत्रमे मरदनमा मर्द जहिना मरदनमा बरद जकाँ कन्हा ठाढ़ केने रहै छैथ तेहने चालि पकैड़ चलै छैथ। हुनका मनमे, माने पुरुखक मनमे दरेग रहै छैन जे अपनासँ कठिन मिहनत सवारी चालककेँ होइ छै तँए दू पाइ आगर करि कऽ देब उचित हएत। से सिंहेश्वर सवारी आँकि लेलैन जे मौगियाही सवारी भेटल। सिंहेश्वरकेँ बुझैमे यएह भ्रम भेल छेलैन। मुदा ई बुझले ने छेलैन जे बेसी पढ़ल-लिखल परिवारमे स्त्रीगणेक मुख्तियारी चलैए, बलुआह माटिक मुरुत जकाँ पुरुख रहै छैथ। बेचारा किए बुझितैथ जे मौगपन आ पुरुखपनमे अकास-पतालक अन्तर अछि..। सिंहेश्वर बजला- “मास्सैव, नाओं तँ चारूक सुनै छिऐन, माने चारू तरहक विद्वानक, मुदा भेँट किनकोसँ नहि अछि।”

सिंहेश्वरक बात सुनि देवकान्त बाबू विचार केलाह जे स्कूलमे विद्यार्थीकेँ पढ़ाबी आकि समाजमे अपढ़ लोककेँ पढ़ाबी, दुनू बरबैर भेल मुदा दुनूक पढ़ाइमे अन्तर अछि। स्कूलक पढ़ाइ ओहन धार जकाँ सीमित अछि जेकरा काट-छाँट करैक शक्ति नइ छै, मुदा समाजक जे अपढ़ लोक छैथ हुनकर जीवन धार तँ कोसी-कमला धार जकाँ अछि, जइमे काटो-छाँट आ तोड़ो-फोड़ करैक शक्ति होइ छइ। देखिते छी जे चौड़गर-सँ-चौड़गर बान्ह-छहरकेँ कोसी-कमला तोड़ि अपन धारा प्रवाहित करिते अछि..। इंजीनियरक आँट-पेट अजमा देवकान्त बाबू बजला- “सिंहेश्वर, ओना इंजीनियरो केते रंगक होइ छैथ, मुदा कहबै छैथ सभ इंजीनियरे, तँए पहिने किछु रंगक इंजीनियरकेँ मनमे रोपि लिअ।”

देवकान्त बाबूक विचार जे मनमे ‘किछु इंजीनियरकेँ रोपि लिअ’, सिंहेश्वर नीक जकाँ नहि बुझि पेलैन, बजला- “की रोपि

लिअ, मास्सैव?”

देवकान्त बाबू बजला- “कोयलाक जे खान अछि जइसँ कोयला निकालल जाइए, तहूठाम इंजीनियर छैथ, सोनाक जे खान अछि, जइसँ सोना निकालल जाइए तहूठाम इंजीनियर छैथ, तेल–पेट्रौल-डीजल–जैठाम निकालल जाइए तहूठाम इंजीनियर छैथ आ बिजली जे बनौल जाइए तहूठाम छैथ।”

देवकान्त बाबूक विचारक प्रवाहमे सिंहेश्वर सेहो प्रवाहित होइत बजला-

“रोडो-सड़क आ मकानो तँ इंजीनियरे बनबै छैथ?”

देवकान्त बाबू ‘हँ’ कहि आगू बजला-

“जेते रंगक इंजीनियरक चर्च भेल अछि तइमे सभकेँ अपन-अपन अध्ययनो छैन आ हाथक औजार सेहो अपन-अपन छैन।”

‘हाथक औजार’ सुनि सिंहेश्वर तत-मताए लगला। ततमताइक कारण भेलैन जे सिंहेश्वर औजारक माने कोदारि, खुरपी, हँसुआ आ हथौरी मात्रकेँ बुझै छला। कागज-कलमकेँ औजार नहि बुझै छला, तँए बजला-

“मास्सैव, कोदारि-खुरपी-हँसुआ किसानक औजार भेल। रिंच-हथौरी कारखानाक मिस्त्रीक भेल आ कागज-कलम तँ हाकिम-हुक्काम आ पण्डित-प्रवरक ने छिऐन, तैठाम देखै छी जे इंजीनियरोक हाथमे कागज-कलम रहै छैन?”

सिंहेश्वरक विचार देवकान्त बाबूकेँ अनसोंहाँत नहि लगलैन। किए तँ अपनो आँखिये सएह देखै छैथ, मुदा हाथसँ काज करैबला सभ औजार भेल से भरिसक सिंहेश्वर नहि बुझि पेब रहला अछि तँए इंजीनियरक गिनती हाकिम-हुक्काम आ पण्डित-प्रवरमे केलैन अछि। जहिना धारक पानिकेँ कनबह बना धारसँ अलग करैत दिशा

बदलल जाइए तहिना देवकान्त बाबू दिशा बदैल बजला-

“सिंहेश्वर, जे विचार सुनबए चाहै छी तैपर धियान दियौ।”

देवकान्त बाबूक विचार सुनि सिंहेश्वर अपनाकेँ संयमित करैत बजला-

“अच्छा कहियौ, मास्सैव।”

अपन विचारक समतल रस्ता देखि देवकान्त बाबू बजला-

“सिंहेश्वर, जेते रंगक इंजीनियरक चर्च केलौं, तइमे पछुलका पीढ़ीक जे छैथ तिनका सभक जमाना लदि गेलैन। जहिना बिनु पढ़ल-लिखल तहिना पढ़ल-लिखल, सभ एकबट्ट भऽ गेला।”

अपन संस्कारक अनुकूल सिंहेश्वरकेँ कनी-मनी बिसवास भेलैन आ बेसी नहियेँ भेलैन। जइसँ मन तत-मता गेलैन। ततमताइत मने सिंहेश्वर बजला-

“से केना, मास्सैव?”

सिंहेश्वरक प्रश्न सुनि देवकान्त बाबूक मन अपन सोचानुकूल विकराल रूप देखलकैन, माने ई जे तीन अक्षरक शब्द अकास छी। मुदा अकासक विराट रूप की अछि से तँ मनाकाशे जनैए, तैठाम सिंहेश्वरक मनाकाश सीमित अछि, तँए असीमितकेँ सीमित करब तखने सिंहेश्वर बुझि पौता। नहि तँ वौआ कऽ अकबका जेता। अपन मनकेँ समतुल्य बनबैत देवकान्त बाबू बजला-

“सिंहेश्वर, पहिने अहाँ कहू जे इंजीनियरक माने की बुझै छिऐ?”

गमैया नजरिये सिंहेश्वर बजला-

“नीक नोकरी पबैले नीक डिग्री हाँसिल करब।”

सिंहेश्वरक विचार सुनि जहिना पानि-चीनीकेँ घोइट शरबत

बनौल जाइए तहिना सिंहेश्वरक विचारकेँ घोटैत देवकान्त बाबू बजला-

“अहाँक विचारकेँ मानै छी सिंहेश्वर, जे अखन तक गामेक पढ़ल-लिखल इंजीनियर शहर-बजारमे इंजीनियरिंग केलैन तँए गाममे इंजीनियरक भाँज बुझिये ने पेलाह। दोख दुनू दिस अछि। मुदा तेकरा अखन छोड़ू।”

देवकान्त बाबूक विचार सुनि सिंहेश्वरक मन सोझरा गेलैन। सोझराइक दोसरो कारण भेलैन। से भेलैन जे अखन काज, माने जइ काजे आएल छी, से तर पड़ि गेल आ समय जा रहल अछि दोसरे-तेसरे विचारमे। सिंहेश्वर बजला-

“मास्सैव, अपने तँ देखिते छी जे टेम्पू चला कऽ कहुना परिवार चलबै छी, सेहो अखन कोरोनाक हवामे बन्ने भऽ गेल, केते दिन बन्न रहत तेकर ठेकानो नहियेँ अछि। एहेन स्थितिमे बेटाकेँ केना पढ़ाएब?”

सिंहेश्वरक विचारकेँ कद्र करैत देवकान्त बाबू बजला-

“सिंहेश्वर, जे गप-सप्प एतेकाल सँ केलौं, तेकरा आब अन्ते करै छी। मुदा बिना उपसंहार केने विचार मनमे घुरियाइत रहत।”

अपन विवशता देखबैत सिंहेश्वर बजला-

“हँ.! मास्सैव, बहुत समय भऽ गेल। तहूमे तेहेन दुरकाल समय भऽ गेल अछि जे कखन की हएत, तेकरो ठीक नहि अछि।”

देवकान्त बाबू बजला-

“बहुत रंगक इंजीनियर होइ छैथ तइमे कोयला खानक जे इंजीनियर छैथ, मात्र से कहि दइ छी।”

‘कोयला खान’क नाओं सुनि सिंहेश्वरक मनमे कोयला खानक

दुर्घटना धाँइ-दे खसलैन। खसिते बजला- “मास्सैव, एक दिन स्टेण्डमे पान-सात टा टेम्पूबला माने टेम्पू चालक एकठाम बैस चाहो पीबैत रही आ गपो-सप्प करैत रही। तहीकाल तीनटा पसिंजर एकसंग आएल।”

सिंहेश्वरक विचार सुनि देवकान्त बाबूक मनमे भेलैन जे सिंहेश्वर केतए-सँ केतए पहुँच गेला। मुदा मनक उफनैत विचार जाबत मनसँ निकैल नहि जेतैन ताबत दोसर विचारकेँ बाँसक छाहैर जकाँ दोसरकेँ थोड़े पनबए देत। तँए नीक हएत जे सिंहेश्वरक पेटमे जे बात अछि तेकरा पहिने निकालिये देब नीक हएत। जिज्ञासा करैत देवकान्त बाबू बजला- “केहेन पसिंजर छेला?”

सिंहेश्वर बजला- “मास्सैव, छेला नहि छेली।”

सिंहेश्वरक विचार, माने ‘छेला-छेली’ सुनि मुस्की दैत देवकान्त बाबू बजला- “रंग-रूप केहेन छेलैन?”

जहिना आगिकेँ पानि क्षणेमे धोइप दइए तहिना सिंहेश्वर धोपैत बजला- “मास्सैव, गाममे भीख मांगि कऽ खाएब नीक मुदा कोयला खानमे काज करब नीक नहि.!”

ओना, देवकान्त बाबू बुझि गेला जे भरिसक कोनो दुर्घटना ग्रस्त परिवारक सवारी रहल हेतैन तँए सिंहेश्वरक मन पघिल कऽ पानि जकाँ बहि रहल छैन, मुदा दुख हुअ कि सुख, लोक अपनामे बँटिते छैथ। देवकान्त बाबू बजला- “तीनू पसिंजर भेटल तखन की कहलैन?”

देवकान्त बाबूक प्रश्न सुनि सिंहेश्वर छाती पीटैत बजला-

“मास्सैव, अनर्थ भऽ गेल छेलैन..! एक गोरे छेली जे बिआह भेला पछाइत मात्र तीनियेँ दिन पतिक सोझ रहल छेली।”

ओना, भीतरे-भीतर देवकान्त बाबूक मन पसिजिते छेलैन कि

आँखिक आगूक वृतान्त आरो मनकेँ दाबि देलकैन। बजला-

“माने नइ बुझलौं सिंहेश्वर, जे तीनिये दिन पतिक सोझमे रहल ओ केहेन छेली?”

छहोँ-छीत भेल अपन हृदयकेँ सिंहेश्वर समेट-समेट पकैड़ बजला-

“ओइ बेचारीक उमेर बीस-बाइस साल करीब छेलैन। कुमारक माने विवाहसँ पहिलुका अवस्थाक कोनो गुण बेचारीमे मेटाएल नहि छेलैन। तीन दिनसँ कनैत-कनैत दूटा संगी ताकि तीनू गोरे झरिया जाइ छेली।”

व्यंग्य करैत देवकान्त बाबू बजला-

“तीनू स्त्रीगणे जे जाइ छेली से कि ओइ गाममे पुरुखक फौती आबि गेल छल?”

‘पुरुख’क नाओं सुनिते सिंहेश्वरक मन पुरुखपन दिस ससैर गेलैन। बजला-

“मास्सैव! गाममे आब पुरुख रहल जे आनठाम जा मुँह उठौत। जँ से अवगति रहितै तँ अपन पुरुखाह परिवार गढ़ितए किने। आकि मौगीक आँचर लागि बैस पुरुखपनाक शंख फुकत।”

देवकान्त बाबू बजला-

“तीनू यात्री एक्के गामक रहैथ?”

“हँ.! हँ.!” कहि कनी चुप भऽ सिंहेश्वर आगू बाजए लगला-

“मास्सैव, एक्के गोरेक चर्च केलौं, मुदा तीनूक दशा देखि मन थीर नहि रहल। अधीर भऽ गेलौं।”

देवकान्त बाबू बजला-

“बाँकी दुनू गोरे केहेन छेली?”

सिंहेश्वर बजला- "संयोग नीक रहल मास्सैव जे तीनू सवारी दरभंगा तकक हमरे भेली।"

देवकान्त बाबू बजला- "की माने सिंहेश्वर?"

सिंहेश्वर अपसोच करैत बाजए लगला-

"माने ई मास्सैव, जे रस्तामे भरि मन गप-सप्प करैक समय भेटल।"

देवकान्त बाबू बजला- "तखन तँ सभ गप भेल हएत?"

सिंहेश्वर- "सभ गप तँ नहि भेल, किए तँ जीवनक बहुत गप अछि मुदा कोयलाखानक एकटा गप तँ भेबे कएल।"

सिंहेश्वरक मुहसँ 'कोयलाखान' सुनि देवकान्त बाबूकेँ अपने मनमे उपकलैन जे केना आ केहेन चासनाला कोयलाखानक दुर्घटना 1975 इस्वीमे भेल..! जइमे हजारो मजदूरक मृत्यु भेल। मुदा कानूनक एहेन पेंच-पाँच अछि जे हजारोमे सँ मात्र तीन साए पचहत्तरिक मृत्यु सावित भेल माने मुआवजाक भागी बनला, बाँकी जहिना जल प्रवाहमे मरल छला तहिना जल प्रवाहे भेला। जहिना 1975 इस्वीमे चासनाला दुर्घटना कोयलाखानमे भेल तहिना बेरमो (ढोरी) खानमे 1965 इस्वीमे भेल छल। एक-पर-एक घटना कोयलाखानमे होइते रहल अछि। गजली टाँड कोलियरीमे 1995 इस्वीमे सेहो तहिना भेल। तेकर पछाइत बागडिगा कोलियरीमे 2001 इस्वीमे भेल.! देवकान्त बाबू बजला-

"की सभ गप रस्तामे भेल?"

सिंहेश्वर बजला- "जखन गामक चौकपर सँ विदा भेलौं, लोक छँटल, तखन तीनू गोरे अपन-अपन जीवनक वृतान्त बेरा-बेरी शुरू केलैन। जे बीस-बाइस बर्खक छेली, हुनकर पति इंजीनियर छेलखिन। पाँचे दिनक छुट्टी लऽ कऽ नोकरीपर सँ बिआह करए

आएल छेला। नैहर-सासुरमे बिआहक बहुत वीध पछुआएले रहैन तँए पत्नीकेँ संगे दुरागमन करा नहि लऽ गेल रहैथ। जाइकाल बाजल रहथिन जे छअ मासक बाद आएब आ परिवार लऽ कऽ जाएब।”

“बीचमे की भेलैन, सिंहेश्वर?” –देवकान्त बाबू पुछलखिन।

अपन विचारक बिसवास बढ़बै दुआरे सिंहेश्वर बजला-

“मास्सैव, जँ दोसराक मुहेँ सुनने रहितौं तँ कनी-मनी झुठोक शंका होइत मुदा बेचारी अपने मुहेँ जे बजली सएह कहै छी।”

सिंहेश्वरक विचारमे सह दैत देवकान्त बाबू बजला-

“से कि कोनो अबिसवास अहाँ बातपर अछि जे एते भूमिका बन्है छी। जे मोन अछि से बाजू।”

सिंहेश्वर बजला-

“बी.ए. पास ओ महिला छेली। नाम छेलैन साध्वी। नीक परिवारक छेली। ओना, छेली नैहरेमे मुदा दुर्घटनामे पतिक मृत्यु सुनि माए-बापक घर छोड़ि बताहि जकाँ असगरे सासुर आबि गेली। एक तँ ओहिना सासुरक परिवार शोकाकुल रहैन तइसँ साध्वीपर आरो ने कियो कान-बात देलकैन। देबो केना करितैन, जखन परिवारक बेटे ने रहल तखन पुतोहु केतए-सँ रहत।”

सिंहेश्वर मुँहक बात सुनि देवकान्त बाबूक मन समाजक ओइठाम पहुँच गेलैन, जैठाम आजुक वैज्ञानिक युगमे विधवा अखनो जीवित अछि। मुदा अपन विचारकेँ मनेमे रखि देवकान्त बाबू बजला-

“बाँकी दुनू गोरेकेँ की भेल छेलैन?”

सिंहेश्वर बजला-

“दोसर गोरे जे छेली हुनका पाँचटा बेटा-बेटी छेलैन। पाँचो पढ़ै

छेलैन। हुनकर पति सेहो कोयले खानमे नोकरी करै छेलखिन। खानमे जे दुरघटना भेल तइमे ओहो डुबि कऽ मरि गेल छेलैन। बेचारी जखन बाजए लगली जे जिनका आशापर परिवार ठाढ़ छल ओ एकाएक खसि पड़ल.! परिवारकेँ खसने दुनियाँ अन्हार जहिना सभकेँ होइ छैन तहिना हुनको भऽ गेल छेलैन।”

विचारक तहकेँ तहियबैत देवकान्त बाबू बजला- “आरो की सभ बजली?”

अपन जिनगीक बिसरल बातकेँ मोन पाड़ैत सिंहेश्वर बजला-

“मास्सैव, सभ बात तँ मनो ने अछि, मुदा एकटा बात मोन अछि से कहै छी। कानि-कानि बेचारी कहै छेली जे पाँचो धिया-पुताकेँ मात्रिक पठा देलिऐ आ अपने झरिया विदा भेलौं।”

देवकान्त बाबू बजला-

“दियाद-वाद, सर-समाजमे एकोटा पुरुख नहि भेटलैन जे अपने विदा भेली?”

ओना, बजैक क्रममे देवकान्त बाबू बाजि गेला मुदा लगले अपने मन कहलकैन जे एहनो तँ सम्भव भइये सकैए जे सालमे एक-आध बेर जाइत-अबैत होथि जइसँ सभ किछु बुझल-गमल होइन। मुदा बजला किछु ने। तैबीच ‘दियाद-वाद, सर-समाज’ सुनि सिंहेश्वरे बजला-

“मास्सैव, दियाद-वाद तँ राहैरक दालि सन होइए जे जेत्ते गलि कऽ सीझए तेते स्वादिष्ट.! सभ कालमे खनदान आ वंशक सभ नाम लेत मुदा सदिकाल तेना एक-दोसरपर बघुआएल रहत जेना बाघ-बिलाइपर बघुआ झपट मारि पकैड़ लइए आ खा जाइए।”

सिंहेश्वरक हृदयक मार्मिक विचार सुनि देवकान्त बाबू भीतरे-भीतर मर्माहत भेला जे जे समाज सदिकाल वैदिक पद्धतिक चर्च

अपन नियमित क्रियाक करैए वएह समाज अवैदिक केना बनि जाइए। आइ महिलाकेँ समाज कोन आँखिये देखि रहल अछि। की ई नजैरिक दोख नहि जे समाजक अधिकांश लोक आनक बहु-बेटीकेँ कामी-वेश्या किए बुझैए। आ जँ से बुझैए तँ अपन बहु-बेटीकेँ आन की बुझत? आ जँ तेहने समाज बनि गेल अछि तखन समाज केते दिन जीवित अवस्थामे रहि सकैए। मुदा बजला किछु ने। सहसँ सहियारैत देवकान्त बाबू बजला- “और की सभ बजली?”

सिंहेश्वरक मनमे आबि चुकल छेलैन माने मोन पड़ि गेल छेलैन जइसँ बजला-

“मास्सैव, पाँचटा धिया-पुतामे तीनटा बेटी आ दूटा बेटा छेलैन। तीनू बेटी जेठ आ दुनू बेटा छोट। जेठकी दुनू बहिन बिआहै-जोकर भऽ गेल रहैन।”

देवकान्त बाबू बजला-

“आ तेसर केहेन रहैथ?”

सिंहेश्वर बजला-

“ओ तँ आरो ऐ दुनूसँ मरल छेली। एक्केटा बेटा छेलैन जे झरिया कोयला खानमे नोकरी करै छेलैन। ओना, ओइ महिलाक उम्र पचास बर्खसँ निच्चेँ रहैन मुदा गरीब लोक चालिस बर्खक पछातियेसँ ने पकए लगै छैथ, तइसँ देखैमे अस्सी बर्खक बुड़ही सन छेली। बेटा मासे-मास दरमाहा पठा दइ छेलैन जइसँ माए परिवारक सभ काज पुरबैत कहुना कऽ परिवार चलबै छेली।”

सिंहेश्वरक विचार सुनि देवकान्त बाबू गम्भीर स्वरमे बजला-

“खेत-पथार अपना नहि छेलैन। किए तँ देखै छी जे खेतो-पथारबला अपन खेत-पथार छोड़ि नोकरी करए जाइ छैथ। एते दिन आन देश डॉक्टरे आ इंजीनियरे जाइ छेला आ आब तँ बिनु पढ़लो-

लिखल लोक अमेरिका, इंग्लैंड जा रहल अछि।"

देवकान्त बाबूक विचारकेँ रोकैत सिंहेश्वर बजला-

"नइ मास्सैव, हुनका अपना खेत नहि छेलैन। किए तँ बिनु पुछनहि अपने फुरने बाजल छेली जे जँ खेतो-पथार रहैत तँ ओकरो बेचि-बिकीन परिवार पालि लइतौं, सेहो ने अछि।"

देवकान्त बाबू बजला-

"आरो की सभ बजली?"

सिंहेश्वर बजला-

"ताबे दरभंगा सेहो लगिचा गेल। बजारमे भीड़-भार दुआरे हमहीं मनाही केलिऐन जे आब गप-सप्प बन्न करू, रस्तापर धियान दियौ। जहिना कहलयैन तहिना ओहो सभ मानि गेली। रेलबे स्टेशनक बगलमे टेम्पू सभ लागल छेलै, हमहूँ बीचमे लगा गेट खोलि उतरैले कहलयैन।"

देवकान्त बाबू बजला-

"पहिने के उतरली?"

सिंहेश्वर बजला-

"पहिने साध्वी उतैर गेटेक निच्चाँमे ठाढ़ भेली, जइसँ निच्चाँ उतरैक रस्ते बन्न भऽ गेल। अपने तँ ओइ बुड़हीकेँ उतारैक खियालसँ ठाढ़ भेलौं।"

देवकान्त बाबू-

"फेर उ सभ उतरली केना?"

सिंहेश्वर बजला-

"साध्वीकेँ कहलयैन जे अहाँ कने घुसैक जाउ। जैपर ओ बजली जे बुड़हीकेँ पकैड़ कऽ ने उतारए पड़त। तैपर हम कहलयैन

जे अखन अहाँ सोगाएल-पीड़ाएल छी तँए दिक्कत हएत।"

देवकान्त बाबू बजला-

"तखन ओ की केलैन?"

सिंहेश्वर बजला- "जहिना कहलयैन तहिना ओ कनी पाछू घुसैक गेली। दुनू गोरेकेँ गाड़ीसँ उतारि बुड़हीक बाँहि पकड़ने लऽ कऽ मुसाफिरखानामे बैसा देलिऐन। बैसिते साध्वी पुछली- अहाँक भाड़ा केते भेल? भाड़ा सुनि मनमे अनेको रंगक विचार उठि गेल। विचार उठि गेल जे एहेन विपैतमे पड़ल यात्रीसँ भाड़ा ली कि नहि ली।"

सिंहेश्वरक विचार सुनि देवकान्त बाबूक अपनो मनमे उपैक गेलैन जे हर मनुक्खकेँ सेवो अछि आ सेवाक जगहो अछिए। मनमे तँ सभकेँ सेवाक भाव रहिते अछि मुदा जगहक चीन्ह-पहचीन्ह नइ भेने भूल-चूक होइते अछि। तँए किए ने सिंहेश्वरक विचारकेँ नहि सिंहेश्वरक काजकेँ देखी जे ओ की केलैन। देवकान्त बाबू बजला-

"अहाँ की केलिऐ?"

जेना भारी काज केला-पछाइत लोकक विचार गम्भीर सेहो भइये जाइए। ओही गम्भीर रूपमे सिंहेश्वर बजला- "मास्सैव! परिवार ले ते बहुत करै छी, ओना अखन जे कोरोनाक बन्दी अछि तइमे अपनो दशा पस्त भइये गेल अछि मुदा ओइ समय से नहि छल। नीक कमाइयो छल आ गाड़ियो नव छल।"

बिच्चेमे देवकान्त बाबू मुड़ी डोलबए लगला जइसँ सिंहेश्वर बाजब बन्न करैत देवकान्त बाबूक मुँह दिस ताकए लगला। मुदा हुनका मुहसँ किछु बोली नहि निकलैत देखि सिंहेश्वर बजला-

"मास्सैव, बुड़हीकेँ संतोष दैत कहलयैन जे मायराम, बहुत कमाइ छी, अपना परिवारमे कोनो दिक्कत नहि अछि, हमहूँ कि

कियो आन छी, अपने बेटा बुझू।”

ओना, अपन बेटाक नाओं सुनि बुड़हीक मन अकास-पताल हुअ लगलैन। एक दिस अपन कोखिक बेटाक आत्मा आत्माकेँ पकैड़ लेलकैन तँ दोसर दिस विश्वात्मा पकैड़ रहल छेलैन। तँए असमनजसमे पड़िये गेली। मुदा तइ बिच्चेमे दू पतिक मृत्यात्मा आ एक पुत्रक मृत्यात्मा सम्मिलित भऽ गेलैन तँए मुहसँ बकार नहि फुटलैन। तैबीच ट्रेनक समय भऽ गेल, टिकटो लेब छेलैन्हे। तीनू गोरेकेँ मुसाफिरखानामे बैसा टिकट आनि देलैन।

सिंहेश्वरक काजसँ सन्तुष्टि पेब देवकान्त बाबूक बजला-

“वाह.!”

‘वाह’ सुनि जेना सिंहेश्वरक मनमे संतोषक मेवा खसल हुअए तहिना मन सवुरिया गेलैन। बजला-

“मास्सैव, बड़ अबेर भऽ गेल। आब जाइ छी। जे काज बाँकी रहल ओ काल्हि आबि करब।”

❑

शब्द संख्या: 4458, तिथि: 10 अक्टूबर 2021

पाँचम पड़ाव

सुर्ज डुमि गेल छल मुदा अन्हार नहि पसैर सकल छल। निठल्ला बैसल सिंहेश्वरक मनमे उठलैन जे गप-सप्प करैक मनो होइए आ समयो तँ काटब अछिए। ओसारपर सँ उठि सिंहेश्वर रूपलाल काका ऐठाम विदा भेला।

ओना, समय काटबक अर्थ दुनू दिस कुट्टीकट्टाक धार जकाँ अछिए। जहिना समयकेँ कियो मनुक्खे हाथ हथिया काटै छैथ तँ किनको समये समत्व काट कटिते छैन।

खान वा कारखानाक जे श्रमिक बन्धु जे अनवरत आठ घन्टा धरि खान वा कारखनामे गैंता-गैंती भाँजि ओतएसँ दू घन्टाक रस्ता काटि डेरापर आबि अपन जीवनक ओरियानमे व्यस्त भऽ जाइ छैथ, वएह ने असल समयक काटकेँ काटै छैथ। मुदा तँए की कहबै जे समयक काट एहने अछि? सेहो बात तँ नहियेँ अछि। समयेकेँ ने कालो कहल जाइए। एहनो अछिए ने जे समयकेँ कटनौं ने कटैत रहैए आ निठल्ला-निकम्मा भेल लोक वौआइत रहैए। होइए दुनू, मुदा दुनूक बीच जे दूरी अछि ओ अछि काजुल आ अकाजुलक बीचक जीवन।

जहियासँ कोरोनाक हल्ला भेल तहियासँ अहिना सभ घरमे सभ निठल्ला बनि बैसल छैथ। एक दोसराक बीच दू गजक दूरी आ मुँहमे मास्क लगा बाजए पड़ै छैन, तैपर हाथक काज छीना गेल छैन।

रूपलाल कक्काक दरबज्जापर पहुँचते सिंहेश्वर देखलैन जे

रूपलाल काका केकरो किछु कहैले उताहुल छैथ। कनी फरिक्केसँ बजला-

“काका, दलानपर भूत जकाँ बैसल असगरे नीक नहि लगल तँए...।”

किछु बात सिंहेश्वरक पेटेमे छेलैन जे निकलब बाँकीए रहैन तइ बिच्चेमे रूपलाल काका बजला-

“सिंहेश्वर, आइ तँ लीला भऽ गेल.!”

लीलाक माने अखन तक सिंहेश्वर रामलीला आ रासलीला बुझै छला। माने एतबे बुझै छला जे रामक रामलीला आ रास-लीलाक माने कृष्ण लीला छी। तँए सिंहेश्वर बजला-

“एहेन कुसमयमे की लीला भेल, काका?”

जेना कोनो गाड़ल तोड़ा रूपलालकेँ भेट गेल होनि तहिना मन खुशीसँ उमैक रहल छेलैन। बजला-

“सिंहेश्वर, पुलिस सभ भरिसक बताह भऽ गेल अछि.!”

पुलिस बताह भेल तइसँ रूपलाल काकाकेँ कोन मतलब छैन जे एते खुशी छैथ। बेटा हुअए केकरो आ बधैया गाबए कोइ। ओना, सिंहेश्वरक मनमे ईहो उठलैन जे एक्केबेर कहि दिऐन जे पुलिस बताह भेल तँ हुनको अपन परिवार छैन, पकैड़-बान्हि कऽ राँची-काँके लऽ जेतैन, तइसँ अहाँकेँ कोन मतलब अछि? मुदा लगले अपन मन मनाही केलकैन जे जे बात रूपलाल काका एते खुशीसँ कहए चाहै छैथ तैठाम जे एहेन बात बाजब तँ हुनका कठाइन लगबे करतैन। एक तँ ओहिना समयक चक्करमे सभ कठाइन-कठाइन भइये गेल अछि आ तैपर आरो कठाइन करब करैला तरकारीमे नीमक फड़ पीसिकऽ मसालामे देब जकाँ भऽ जाएत। तँए, तइ सभकेँ छोड़ि सिंहेश्वर पोचाड़ा दैत बजला- “की बतहपनी पुलिस

केलक अछि जे अहाँ ओकरा 'बताह' कहै छिऐ, काका?"

सिंहेश्वरक प्रश्न सुनि रूपलाल काका जवाब देब छोड़ि ठहाका मारि हँसए लगला। हँसियो-हँसी आ ठहक्को-ठहाकामे अन्तर अछिए। एकटा भेल लोकक बीचमे असगरे हँसब वा ठहाका देब, आ दोसर भेल सभक संग हँसब वा ठहाका देब। ऐठाम रूपलाल कक्काक हँसब पहिल श्रेणीक छेलैन जइसँ सिंहेश्वरक मनमे हँसबक जगह हँसाएब लऽ नेने छेलैन। फेर अपने मनमे सिंहेश्वरकेँ उठलैन जे अपनो तँ निठल्ले छी, समय काटब अछिए, तँ चलह समय तँ कटि रहल अछि किने। हँसैत-हँसैत रूपलाल कक्काक मुँह जखन दुखा जेतैन तखन सोझ डारिये अपने बाजए लगता। हँसीक पराग्राफ जखन रूपलाल कक्काक मनमे बदैल गेलैन तखन संयमित होइत बजला-

"सिंहेश्वर, एन.एच. सँ जे अपना सबहक रास्ता फुटल अछि, जे मधेपुर-भेजा तक जाइए, तैठाम परसू पचास-साइठ टा पुलिस पाँचटा चरिचकिया गाड़ीपर आबि, बगलेमे जे शीशोक गाछ रहै ओकरा काटिकऽ तेना बन्न कऽ देलक जे लोक तँ कूदि-फानिकऽ टपि सकैए मुदा गाड़ी-सवारीक लेल सोल्होअना रस्ता बन्न भऽ गेल।"

सिंहेश्वरक मनमे उठलैन जे एहेन तँ पचासो ठाम बेड़ही लागल गाम सभक नाओं सुनिते छी, तखन एहेन कोन विशेष बात अइमे रूपलाल काकाकेँ भेटलैन अछि, जे एतेक खुशी, मोकरक पानि जकाँ तरसँ बुलबुल्ला निकलै छैन..! सिंहेश्वर बजला-

"काका, नीक जकाँ नहि बुझि पेब रहल छी।"

जहिना ऊपरे-झापर सुनल बात हँसी उपकबैए तहिना गहींर-सँ-गहींर नहि उपकबैए सेहो बात नहियेँ अछि। ओ आरो तरसँ, माने

मनक धरतीक तरक सतहसँ, गदियाह पाइनिक संग पवित्र पानि सेहो उपकैबिते अछि। सएह रूपलाल काकाकेँ भेलैन। ओही उमकीमे बजला-

“सिंहेश्वर, पहिल दिन जखन रास्ता रोकल गेल, तइ दिन तीनटा शीशो गाछ काटल गेलै, ओ तीनू गाछ तीन गोरेक छेलैन। पुलिसक होहामे गामक जुअनका लफुआ नेता सभ सेहो छल। घन्टो भरि नहि लगलै कि सड़क जाम भऽ गेल। माने बन्न भऽ गेल।”

जहिना सिंहेश्वरकेँ रूपलाल कक्काक पहिलुका विचार मनपर कोनो असर नहि केलकैन तहिना दोसरो बेरक विचार नहियेँ केलकैन। किए तँ अपना गामेमे सिंहेश्वर सुनि चुकल छला जे गामक पछबरिया टोलक लफुआ सभ तेना कऽ पछबरिया रस्ता बन्न कऽ देलक जे डॉक्टर शिव कुमार बाबू अपन मोटर साइकिल घुमा लेलैन। जखन कि ओ आवश्यक काजे अपना गामसँ अबै छला। सिंहेश्वर बजला-

“काका, अहाँक मनमे जे अछि से ने अहाँ अपना मुहसँ निकालि रहलौं हेन आ ने हमर मन मानैले तैयार अछि, तँए कनी फरिछा कऽ.?”

सिंहेश्वरक विचार सुनि रूपलाल कक्काक मन भीतरे-भीतर आरो सिहकए लगलैन जइसँ मुँह महियाकऽ मधुआ गेलैन। मुस्की दैत बजला-

“अखन तक परसुका समाचार छल तँए तोरा भूतकालक रचना-साहित्यक इतिहास जकाँ बुझि पड़लह, मुदा औझुका जे भेल से ने रसगर-चहटगर अछि।”

अपन भीतरे-भीतर रूपलाल कक्काक मन मगन छेलैन, मुदा सिंहेश्वरकेँ कोनो रसगर-चहटगर किछु वस्तु भेटिये ने रहल छेलैन

तँए चेहरा मन्हुआएल आ मन बिजकल रहैन। बजला-

“काका, शनि दिनक शनिचराक गुड़-चाउर जकाँ अपने फाँकब आकि अनको खाइले देबइ?”

सिंहेश्वरक तगेदा सुनि रूपलाल काका बजला-

“आइ भिनसरे, माने करीब आठ बजे, साठि-सत्तैर टा पुलिस सात-आठटा गाड़ीपर चढ़ल जखन एन.एच.सँ उतैर मधेपुर-भेजा दिसक रस्ता पकड़लक कि देखलक जे शीशोक खुट्टा गाड़ि सड़ककेँ बन्न कऽ देल गेल अछि.!”

एतबे कहि रूपलाल काका चुप भऽ गेला। सिंहेश्वरकेँ पुलिसक आगम सुनि मनमे जिज्ञासा जगलैन तँए जिगेसा करैत पुछलखिन-

“तब की भेल?”

रूपलाल काका बजला-

“तब की भेल से कि भेल जकाँ भेल। धमगज्जर भऽ गेल..!”

“की धमगज्जर?” सिंहेश्वर पुछलकैन।

रूपलाल काका बजला-

“एक तँ ओहिना लोक पुलिसक नाओं सुनि डेरा जाइए, तैपर तीन दिनक हवा तँ आरो डेरौन बनाइये देने अछि।”

बिच्चेमे सिंहेश्वर बजला-

“से तँ भइये गेल अछि।”

अखन तक रूपलाल काका गाम-घरक बात बुझनिहार जकाँ गामे-घरक बात जकाँ बजै छला तँए सिंहेश्वरक गल्फरमे बंशीक माछ जकाँ घाओ लगिते ने छेलैन, से रूपलाल काका आँकि लेलैन। जहिना अनभुआर पोखैर वा धारमे जखन पानिक थाह लागि जाइए

तखन निर्भीक भऽ थाहनिहार ओइमे पैसैक कोशिश करैए तहिना रूपलाल काका समयक नाप नापि आगू बजला-

“सिंहेश्वर, जहिना शास्त्र-पुराणमे बड़का-बड़का यज्ञ सभक चर्च अछि जे ओइमे घोड़ा छोड़ल जाइ छल आ जे ओइ घोड़ाकेँ पकैड़ लेलक ओकरा संग युद्ध होइ छेलै, तहिना...।”

‘यज्ञमे घोड़ा छोड़ब’ सिंहेश्वरक मनकेँ ओते नहि मोहलकैन जेते शास्त्र-पुराणक मोह मोहलकैन। जइसँ आगू बुझैक जिज्ञासा जगलैन। बजला-

“काका, कनी पेनी पकैड़ कऽ कहियौ तँ नीक जकाँ बुझि पाएब।”

ओना, रूपलाल कक्काक मनमे संतोषक विशाल वृक्षक छाँह पसैर गेल रहैन मुदा तेकरा ई सोचि समेट लेलाह जे अखुनका जे तूफानी दौड़ देशमे शुरू भेल अछि तइमे अनुशासन वैचारिक रूपमे नहि बल्कि बलरूपमे भऽ रहल अछि। एक दिस नैतिकताक चर्च दिन-राति आकासमे लॉडस्पीकरक माध्यमसँ पसैर रहल अछि, दोसर दिस अनुशासनहीनता एतेक बढ़ि गेल अछि जे बन्दूकक जरूरत पड़ि गेल अछि। मुदा तइ सभ विचारकेँ तहियबैत सिंहेश्वरक विचारकेँ जखन गौरसँ देखलैन तँ बुझि पड़लैन जे बड़ भारी प्रश्न सिंहेश्वर सोझहामे रखि देलक हेन। मुदा रूपलाल कक्काक अपने संयमित होइत मन विचार देलकैन जे जखन सिंहेश्वर समस्याक पेनीक प्रश्न, माने तात्त्विक प्रश्न, उठौलक तखन अपन जेते आँट-पेट अछि तइमे इमानदारीसँ बाजब, यएह ने उचित हएत। रूपलाल काका घटनाकेँ आगू बढ़बैत बजला-

“साइठो-सत्तैर पुलिस अपन रास्ताक चार्ट मिलौलैन तँ अही रोडक नक्शा सभकेँ भेटलैन। बन्दूकधारी एकबोलिया होइते अछि।

तँए रस्तापर सँ घेराकेँ हटबैक विचार भेलैन। पीच रोड रोकल गेल छल। अपना कोनो ओहन दोसर औजार नहि जे शीशोक खुट्टा उखारि रस्ता खाली करैत। सभ कियो थहाथही करैत गामक लोकक सहयोग, सहयोग ई जे कोदारि-खन्ती भेटै'क आशा करए लगला। घर-पर-घर लोकक ओइठाम अछिए। मुदा लोक हिनका सभकेँ देखिते पहिनहिसँ निपत्ता भऽ अपन-अपन घर-अँगनाक मुँह बन्न केने छला। गाम दिस पुलिसकेँ बढ़ैत देखि गामक लोक जेम्हरे-तेम्हरे देने पड़ाए लगल। पुलिस हाथक इशारा दइ जे भाय रूकू हमरा कोदारि-खन्तीक काज अछि। अपन समयकेँ नोकसान होइत देखि सभकेँ कछमछी रहबे करैन जे जेते जल्दी रस्ता खुजत तेते जल्दी अपन नियमित समयपर पहुँचब।"

पुलिसकेँ कछमछी आकि गामक लोकक पड़ाइनिक कछमछी सुनि रूपलाल कक्काक मन मलैक गेलैन। जइसँ आरो ठहाका मारि हँसए लगला। तैसंग सिंहेश्वरो ठहाका मारलैन। सिंहेश्वरक ठहाका देखि रूपलाल काका बजला- "सिंहेश्वर, अखने हँसी लगै छह.! हँसीबला बात तँ अखन बाँकीए अछि।"

सिंहेश्वर मुँहक हँसी समटाइये ने रहल छेलैन मुदा तैयो अपन दुनू ठोरकेँ सटा बन्न केलैन। रूपलाल कक्काक मन विचित्र स्थितिमे पड़ि गेलैन। एक दिस गम्भीर विचार मनकेँ खिचैत रहैन जे बड़का-बड़का शास्त्र-पुराणक कथा सुनि सामान्य लोक हँसबो करैए आ कनितो तँ अछिए मुदा कि ओ विषयक पेनी पेब बजैए? जहिना एककेँ अगुआ बना अरब-खरब पाछूमे नुकाएल रहैए, जेकरा सभ देखिये ने पेब रहल अछि आ तेकरा नहि बुझितो-देखितो हँसि रहल अछि। तहिना सिंहेश्वर सेहो हँसि रहला अछि। दोसर दिस देखैत जे एहनो तँ सम्भव भइये सकैए जे मनमे कोनो दोसरो बातक हँसी होइ, जेकर परिणाम भेट रहल होइ। से नहि तँ हँसीकेँ आरो हँसीक विषय

कहि सिंहेश्वरकेँ तेते हँसा दी जे मनक सभ हँसी निकैल धरतीपर आबि ठाढ़ भऽ जाइ। रूपलाल काका अपन वामा हाथसँ माथ कुड़ियबैत बजला- “छीतना आ डोमनाकेँ ते चिन्हते छहक, सिंहेश्वर?”

सिंहेश्वर बजला- “वएह छीतना ने, जे सोलहटा बिआह केने अछि?”

विचारमे सह दैत रूपलाल काका बजला- “हँ, छीतना आ डोमना एक्के दिस भागल छल। पुलिसकेँ देखि कऽ आकि की, छीतनाकेँ झाड़ाक वेग आबि गेलइ। जइसँ दौड़िये ने होइ। ओमहरसँ डोमना कहै जे जे पकड़ेमेँ से अपन जान। हमरा दोख नहि लगबिहेँ। तँ ओमहरसँ छीतना कहै, ‘एहेन जे पदना रही तँ पूजापर बैसबे ने करी। तूँ हमरा अपन संग किए केलेँ, पकड़ेबे करितौं तँ की होइतै। जहल देखले अछि। तेकर तोरा डर किए होइ छौ।’ ओमहरसँ छीतना कहै- ‘जखन पकड़ाइले तैयारे छेलेँ तखन भगलेँ किए.?”

एते सुनैत-सुनैत सिंहेश्वर लोट-पोट भऽ गेला। लोट-पोट भेल सिंहेश्वरक मनक भावभूमि रूपलाल काका आँकि लेलैन। बजला-

“सिंहेश्वर, विचित्र स्थितिमे समाज पड़ि गेल अछि। एक दिस काज नहि छै, तँए लोक करत की आ जेहो छै सेहो बन्ने भऽ रहल छइ.!”

विचारकेँ मोड़ैत रूपलाल काका आगू बजला-

“काल्हि अपना गाममे की भेल से बुझलहक कि नहि सिंहेश्वर?”

सिंहेश्वर बजला- “नहि। केकरोसँ कि भेँट-घाँट होइए जे गामक हाल-चाल बुझब, काका?”

रूपलाल बजला- “सएह तँ हमरो अछि, मुदा पुरुखक

माध्यमसँ समाचार रूकल अछि मुदा महिलाक बीच तँ सम्बन्धक अनेको कारण अछि। घास छीलबसँ लऽ कऽ मोबाइल तकक सुविधा भइये गेल अछि ओही माध्यमसँ समाचार भेट जाइए।"

सिंहेश्वर बजला-

"की कौल्हुका घटना कहए लगलिऐ, काका?"

रूपलाल काका बजला- "हैरनावाली तरकारी बेचए उतरवाइर टोल जाइ छेली। किए तँ गामो तँ बजार छीहे। तीमन-तरकारीसँ लऽ कऽ फल-फलहरी दूध-दहीक खगता परिवारमे रहिते अछि।"

रूपलाल कक्काक वौआइत विचारकेँ पकैड़ सिंहेश्वर बिच्चेमे टोकलकैन-

"काका.! कहह लगलिऐ हैरनावालीक बात आ कहि रहल छिऐ बजारक बात।"

सिहेश्वरक विचार सुनि रूपलाल काका अपनाकेँ चेतलैन। सिंहेश्वरक विचारकेँ आगू बढ़बैत बजला-

"हैरनावाली जखन उत्तरवारि टोल जाइ छेली तँ देखली जे रस्तापर ढाठ लागल अछि। तेना कऽ ढाठ बान्हल छेलै जे ओइपार जाएब कठिन छेलइ। बेचारीकेँ तीन दिन पहिलुका आनल पड़ोर सड़ैक स्थितिमे आबि गेल छेलैन। अपन डुमैत पूजी देखि हैरनावाली मने-मन कानि रहल छेली, मुदा नोर पोछनिहार कियो ने। ई बात बेचारी किए बुझितैथ जे हमरे सन-सन लोकक बनल ई समाज छी आ समाजे भगवान छिया, आ एक-दोसराक बीच जीवनक अदान-प्रदान भगवानक देब भेल।"

अपन कारोबारक रस्ता बन्न होइत देखि हैरनावाली जखन घरमुहाँ भेली तखन मनमे उठलैन जे गाममे कि एकटा हमहींटा छी जेकर कारोबार मारल गेल अछि। हमरा सन बहुतो लोकक कारोबार

मरा रहल अछि। गामक भौरी-बट्टा केनिहारिसँ लऽ कऽ दोकान-दौरी सेहो बन्न भऽ गेल अछि। खेत-पथारक काज रूकने खेतमे काज करैबलाक काज छीना गेल अछि, रिक्सा-टेम्पूसँ लऽ कऽ हाट-बाजार सभ बन्न भऽ गेल। सोलहमी शताब्दीक समाजक चर्च करैत तुलसीदास कहने छैथ जे किसानक खेती नहि, वेपारीक व्यापार नहि, जैठाम भीखारीकेँ भीख तक नहि भेटत तैठाम तँ एक दोसरकेँ कहबे करत ने, 'भाय.! आब की करबह, केतए जेबह?' हैरनावालीक मनमे विचार जगलैन जे अपन ढंगक जे कारोबारी सभ छैथ हुनका सभसँ किए ने विचार करी जे ओ केना एहेन दुरकाल समय काटि सकती।

सिंहेश्वर आ रूपलाल काका गप-सप्प करिते छला कि तइ बिच्चेमे राजदेव पहुँचल। बेटाकेँ देखिते सिंहेश्वर बजला- "काका, बाल-बच्चा बौक भऽ गेल अछि.!"

ओना सिंहेश्वरक विचार किछु दूर तक रूपलाल काका बुझि गेला मुदा तेकरा अनबुझ करैत, पुछलखिन-

"की धिया-पुता बौक भऽ गेलह, सिंहेश्वर?"

सिंहेश्वरकेँ जेना ठोरेपर जवाब रहैन तहिना बजला-

"काका, बाबू जखन रिक्सा चला कऽ साँझमे एला तखन कहलैन, 'बौआ, बड़ लीलसा छल जे तोरा पढ़बिहह, मुदा अपना जीवनमे नइ भेल.! आब दिनो-दिन शरीरक तागत कमिते जाएत। तँए आखरी समयमे आखरी बात कहै छिअ, हमरा बुते तोरा पढ़ाएल तँ नहि भेल, मुदा तूँ अपना बेटाकेँ जरूर पढ़बिहह। जहियासँ बाप-दादाक उदय भेलैन तहियासँ लऽ कऽ अखन धरि किनको एको अक्षरक ज्ञान परिवारमे नहि भेल अछि। पिताजीक विचारकेँ ओही दिन जीवनक संकल्पक मालामे गाँथि गरदैनमे पहिर हृदयसँ लगा

लेलौं, मुदा.!”

सिंहेश्वरक विचार सुनि रूपलाल कक्काक मनमे उठलैन जे सिंहेश्वरक संकल्प तँ उच्च कोटिक अछिए मुदा तइले जाधैर मनुक्ख जीवनक तत्त्वकेँ पकैड़ जिनगीक डेग नहि उठौत ताधैर ओकर सपना सपने रहतै। बाल-बोध तँ पहिने यएह ने संकल्प लेत जे लिखब-पढ़ब सीखी। आकि पाकल पड़ोर जकाँ समाजमे रंग देखौत। समाजमे जँ रंग देखौत तँ धरती पकैड़ देखौत आकि राड़ी-डबहारीक फुल जकाँ एक-देशसँ दोसर देश धरि खाली उड़ैत रहल। अही दुआरे ने राड़ी-डबहारीक फूलकेँ फूल नहि मानल जाइए। जइ फूलकेँ फूल मानल जाइए ओ तँ गाछमे फुला अपन जड़िक पृथ्वीपर खसि पृथ्वीमे समाहित भऽ जाइए। मुइला पछातियो ओ फूल धरतीएमे समेबो करैए आ..! तइ बिच्चेमे रूपलाल काका पुछि देलखिन- “बौआ किए एलह हेन?”

रूपलाल कक्काक प्रश्न सुनि सिंहेश्वरकेँ जेना मन कलैप उठलैन। कलपैत सिंहेश्वरक मन अपने धिरकारए लगलैन, ‘जहिना बाबू कहि कऽ मुइला तहिना की अपनो मरए पड़त.!’

जिनगीक हार-जीतक बीच पड़ल सिंहेश्वर बजला-

“काका, परिवारे छी किने, एक हजार भूर सदिकाल फुटले रहैए, माने कोनो-ने-कोनो समस्या रहिते अछि। तँए सदिकाल मन टाँगल रहैए जे परिवारमे केकरा की खगता छइ।”

सिंहेश्वरक बातकेँ पकैड़ रूपलाल काका बजला-

“यएह टाँगब भेल जागब। एकरे पकड़ब अछि, सिंहेश्वर।”

‘जागब’क माने सिंहेश्वर अखन तक भोरमे ओछाइनपर सँ सुति कऽ उठबेटा बुझै छला, मुदा ऐठाम ओछाइन-बिछाइन नहि रहितो रूपलाल काका ‘जागब’ किए कहलैन? पुछलखिन- “की

जागब, काका?”

सिंहेश्वरक जिज्ञासा देखि रूपलाल काका मने-मन विचार करए लगला जे अपन मनक विचार सिंहेश्वरक मनमे रोपि बैसा दिऐ, मुदा से तँ अपना बुते बाहरे-बाहर तँ हएत नहि, हएत तँ मनक भीतर, जे मनुक्ख अपने किछु संकल्प रोपि अपन जीवन लीला करैए। लगले मनमे भेलैन जे अपन तँ कर्तव्य अछि तेतबे तक ने अपने उपयोग कऽ सकै छी, आनक कर्तव्य जँ हड़पौ चाहब तँ ओ ओहन सोहनगर थोड़े हएत जेहेन अपन मौलिक कर्तव्य होइए।

..रूपलाल काका मुस्की दैत बजला- “सिंहेश्वर, तुलसी बाबा कहने छैथ जे ‘गृह कारण नाना जंजाला’, जखन गृह निर्माण करि गृहकर्ता बनि गृहमे ठाढ़ हएब तखन ने गृहो ठाढ़ हएत।”

शब्दक मिलानी देखि सिंहेश्वरक मन ओहिना बोहिया गेलैन जेना मध्य युगमे दरबारी कवि सभ शब्दक महल ठाढ़ कए समाजकेँ बोहियौलैन। बोहियाएल मने सिंहेश्वर बजला- “काका, जागब की भेल से कनी फरिछा दिअ।”

सिंहेश्वरक जिज्ञासा देखि रूपलाल काका मने-मन विचार केलाह जे सिंहेश्वर किछु अछि तँ अपनासँ उन्नैसे अछि। जँ सिंहेश्वरक संग विचारमे कोनो कल-छप्पन करब तँ ओ अपने आत्महनन हएत। जँ अपन आत्महनन अपने करब तँ दुनियाँमे के केकर आत्मभरण केलक अछि जे अपन हएत। रूपलाल कक्काक मनमे तुष्टिक पुष्टि भेलैन। बजला- “सिंहेश्वर, अन्हरिया राति छी, देखिते छहक जे दिन-राति सिपाही-पुलिस सभ बन्दूकक हाथे घुमि-घुमि कहि रहल अछि जे दू गोरे एकठाम नइ बैसू। तँए नीक हेतह जे अखन जाह, काल्हि अढ़ दाबि कऽ निचेनसँ गप-सप्प करब।”

सिंहेश्वरक मनमे ‘जागब’क जिज्ञासा एते जोर मारए लगलैन

जे बिना शान्त भेने एक्को डेग चलि नहि सकै छला। जहिना कोनो जिज्ञासु बाल-बोध कोनो विषयमे डुमि ओकर जड़ि तक पहुँचैमे अपन देह-हाथ (शरीर) क्षीण बना लइए तहिना सिंहेश्वरक मने सेहो जीवनक जागरणपर पहुँच जड़ि पकड़ैक परियास करैत बजला-

"काका, बुझले तँ अछि जे जे रोटी अतिथि-अभ्यागतकेँ आगूमे राखब प्रतिष्ठाक हनन बुझल जाइ छल, वएह रोटी आइ अतिथि-अभ्यागत दरबज्जापर पहुँचते खुशीसँ कहै छैथ जे हम रोटीए टा खाइ छी, भात डाक्टर मनाही कए देने छैथ।"

सिंहेश्वरक जिज्ञासाकेँ रूपलाल काका आँकि अंकित करैत बजला- "सिंहेश्वर! आइये नहि, साइयो बर्खसँ अपना दुनू गोरेक परिवार एकठाम रहलह अछि। जहियासँ तोरा देखल छह तहियासँ ते बुझलो छहे। आँखि उठा तकहक जे दुनू गोरेक परिवारमे केते मिलानी अछि आ केते गरमिलानी।"

रूपलाल कक्काक विचार गरुड़ महराजक विचार जकाँ सिंहेश्वरक मनमे गड़लैन। मुदा जेना निमग्न भऽ साँपक उपदेश सुनए लगला आकि साँप अपन रस्ता साफ देखि 'भुजंग प्रयात, भुजंग प्रयात' करैत ससैर गेल तेना सिंहेश्वर ससरैले तैयार नहि भेलैन। रूपलाल काका बजला-

"सिंहेश्वर, आइ दिनमे खेने नहि छेलौं, तँए दुखना माएकेँ कहने छेलिऐन जे साँझे भानस कऽ लेब। आगूक विचार काल्हिले राखह। निचेनसँ सभ गप करब।"

❑

शब्द संख्या: 2673, तिथि: 18 अक्टूबर 2021

छठम पड़ाव

आन दिनक भोरसँ आइ सिंहेश्वरक मन मानि रहल छेलैन जे दोसर रंगक औझुका भोर अछि। भोर तँ भोर छी माने जागरण। मुदा तँए कि तीन साए पैंसैठो दिनक भोर, माने सालो भरिक भोर एक्के रंग होइए, सेहो बात तँ नहियेँ मानल जा सकैए। कहियो भोरक सुर्ज लाल टुहटुह अकासमे देखि पड़ैए तँ कहियो एहनो भोर तँ होइते अछि जे काजर सन कारी मेघक तरमे दबाएल रहैए। खाएर जे होइए ओ अपन दिन-राति जानए। आन दिन जकाँ सिंहेश्वर आइ पत्नीकेँ नहि कहलखिन जे दू हाथ पहिने जाँति दिअ तखन ओछाइन छोड़ि हएत। यएह तँ पुरुखक निर्लज्जपना आ महिला पुरुखक भेद छी। मिहनतक आँक दुनू पक्ष अछि। जे आदमी आठ-दस घन्टा आराम करत ओ जँ आठ-दस घन्टाक काजक थकान जँ शरीरमे पचौत नहि तखन ओ शरीर सम-गम भऽ चलत केना?

मिथिला ऋषि-मुनिक जन्मभूमि सेहो छी जे एक-सँ-एक साधक पैदा करैक शक्ति अपन कोखिमे समेटने अछि। बुझले अछि जे मनक उछल-कूद प्रतिदिन साठि हजार बेर होइए। खाएर जे होइए, मुदा अपना ऐठामक जे ऋषि अविवाहित भऽ अपन समृद्धशाली परिवार बना जीवन गुदस केलैन की ओकरा फुसिया देब? जे मिथिलाक इतिहास बारह सालक रौदीक पछाइत सीता सन जग-जननी प्राप्त करैक शक्तिक चर्च अपन गर्भमे समेटने अछि, की ओकरा झुठिया देब? एहेन-एहेन साल मिथिलाक रहल अछि जे सोल्होअना रौदीए भऽ बीतल। जेकरा रौदी अडेजैक शक्ति छै तेकरा

की दाही अडेजैक शक्ति नहि छइ? जरूर छइ। सिर्फ 1971 इस्वीमे फागुनसँ जे बरखा शुरू भेल ओ बरसैत अगहन पार करैत पूस-माघक जाड़मे पहुँचा चुकल छल।

ओछाइनपर नीन टुटिते सिंहेश्वर फुरफुरा कऽ उठए चाहलैन। तैबीच मनमे उठि गेलैन जे आइ सभसँ पहिने देवकान्त बाबूसँ भेँट कए स्कूलोक सभ बात बुझब अछि आ राजदेवक किताबोक भाँज लगबैक अछि। जखने अपने घरपर नहि रहब तखने पत्नीकेँ किए ने कहि दिऐन। सुतले-सुतल सिंहेश्वर बजला-

"राजदेवक माए, कने एम्हर आएब।"

आन दिनसँ भिन्न रूप देखि भुलिया चौंक गेली जे आन दिन कहाँ शोर पाड़ै छला। आइ किए शोर पाड़लैन? अपने मन कहलकैन, जरूर किछु नव बात अछि.! घर बाहरब छोड़ि भुलिया पतिक लगमे आबि बजली-

"की कहै छी?"

सिंहेश्वर औझुका कार्यक्रमक सूची जे बनेने छला, तेकरा मने-मन समयक संग अँटावेश करैमे थोड़ेक ओझराएल रहैथ। ओझराइक कारण भेलैन जे जहिना भावुक लोककेँ भावना पथसँ विचलित कऽ दइए तहिना सिंहेश्वरक मनमे देवकान्त बाबू सन निर्मल, निर्जल लोकक ऐठाम जाइसँ पूर्व हुनक समयक रूटिंगक बान्ह तोड़ैक डर मनमे भऽ रहल छेलैन। तैबीच पत्नी पुन: दोहरा कऽ बजली-

"की कहै छी?"

मनकेँ थतमारि सिंहेश्वर बजला-

"बौआ, बौक भऽ जाएत। तँए सभसँ पहिने एकरा पढ़ैक गड़ बैसाएब जरूरी अछि।"

बजैत-बजैत सिंहेश्वर थोड़ेकाल चुप भऽ पुन: बाजए लगला-

“गरीबक मनोरथ आ फुसि-घरक ठेकान ओहने ने बेठेकान होइए जेहेन धारक कातक चास आ धनीक लोकक घर लगक बास बेठेकान होइत अछि।”

खिस्सा जकाँ भुलिया पतिक बात सुनि बजली-

“बेटा कि अहींटा-के छी आकि हमरो छी? ओ जँ बौक भऽ जाएत ते लोक हमरे ने ‘बौका माए’ कहत.!”

भुलियाक विचार सुनि सिंहेश्वरक मनमे एलैन जे अपना कि लोक ‘बौकाक बाप’ नहि कहत? सेहो तँ कहबे करत.! मुदा लगले अपने मन कहलकैन जे एना जँ छोट-मोट विचारमे ओझराएब तँ इचना माछ जकाँ खढ़े-पातमे लटकल रहि जाएब, समुद्रक आँखि कहियो देखि पाएब?

पत्नीकेँ आगूमे ठाढ़ देख, बजैक क्रममे सिंहेश्वर बाजि तँ गेला मुदा अपने मन वौड़ाए लगलैन। जहिना सामान्यजनक दृष्टि जेते आन दिस रहैए तेते अपना दिस नहि रहैए। कहलो गेल अछि जे देखा-देखी दुनियाँ चलै छइ। एकर बहुतो कथा-पीहानी अनेको ढंगसँ कहलो गेल अछि कहलो जाइते अछि.! वौड़ाइत-वौड़ाइत सिंहेश्वरक मन अपन परिवारपर अँटैक गेलैन। अँटैकते मनमे उठलैन जे हमहूँ तँ असगरे बेटा बापक रहिऐन, कहाँ पढ़ाएल-लिखाएल भेलैन? समस्या तक तँ सिंहेश्वरक मन पहुँच पबैन मुदा तइसँ आगू गेले ने होइन। पत्नीक प्रश्नक उत्तर दैत बजला-

“धिया-पुता कि कियो अनका भरोसे जनम्बैए आकि अपना बाहुँ-बलक भरोसे जनम्बैए।”

सिंहेश्वरक उत्साहपूर्ण विचार सुनिते भुलिया, जहिना पाकल आमक गाछक डारिपर कियो ठाढ़ भऽ अपन दुनू पैरक जोड़सँ आस

मारैए जइसँ काँच-पाकल सभ आम भरभरा खसैए तहिना आस मरैत बजली- “विधाता जखन शरीरमे मनुक्ख सन रत्न पैदा करैक शक्ति देने छैथ तखन जे लोक दुइयेटा धिया-पुताक पछाइत ऑपरेशन करा लइए, से ई उचित भेल?”

बजैक क्रममे भुलिया बाजि तँ गेली मुदा ई बात बुझबे ने केलैन जे जखन अपनो पेट भरैक ने उपाए अछि आ ने तकर उपायक बाट पकड़ए चाहि रहल छी, तखन जँ काँकोरबा चालि पकड़ब तँ अपने अण्डा-बच्चा ने पेट खोखैर खा जाएत।

तैबीच पत्नीक बाजल बात सुनि सिंहेश्वरक देह फुनफुना गेल छेलैन जइसँ मनमे उठि गेल छेलैन जे पत्नीकेँ कहिऐन, ‘विधाताक जे दोख लगा अपनो पैरक धरती छोड़ि अकासमे ठाढ़ भऽ बाजि देलिऐ, से ई कहू जे जैठाम जिनगीक कोनो ठेकान नहि अछि जे कखन छी आ कखन नहि छी, तैठाम जँ दर्जन भरि धिया-पुताक भार अहाँपर छोड़ि मरब तखन मुइला पछाइत हमरा कोन-कोन गारि पढ़ब से अखन सोझहेमे कहि दिअ।’ मुदा सिंहेश्वरक अपने मन मनाही केलकैन जे सोझे गप्प-गप्पीसँ किछु ने होइए। तइ बिच्चेमे राजदेव सेहो पहुँच गेल। राजदेवकेँ देखिते सिंहेश्वरक मन ठहकलैन जे किए ने जेकर काज करए डेग उठेलौं आ तइ बिच्चेमे की भऽ रहल अछि से सभ बात तेकरो कहि दिऐ। बाल-बोध अछि तँए ओकर सीमाक जे जीवन अछि से जँ इमानदारीसँ बुझा कऽ कहि देबै तखन ओकरो मन मानत किने जे काज डोरियाएल अछि। पढ़ाइ-लिखाइक प्रश्न छी, केहन शिक्षा केहेन लोककेँ भेटइ। छठियारिक राति तँ समाजक दाइ-माइ बेटाकेँ असिरवाद दैते छैथ जे डॉक्टर बनबह, इंजीनियर बनबह। मुदा की आजुक परिवेशमे डॉक्टरी शिक्षा, जे पचासो लाखक बनि गेल अछि, ओ दाइ-माइक असिरवादसँ थोड़े पूरत?

..सिहेश्वर बजला- “बौआ, तोहर किताबक पुरजी जेबीमे अछिए। काल्हि देवकान्त बाबू ऐठाम गेला पछाइत आन-आन गप-सप्प तेना उठि गेल जइसँ ओहीमे अबेर भऽ गेने अपन काज पछुआ गेलह। मुदा आइ अखने चाह पीब निकलै छी, पहिने तोरे काज करब।”

ओना, राजदेवक मन पढ़ाइक गिरैत स्तर आ टुटैत परिवेश देखि बेकल भऽ रहल छेलै, तहूमे अपन जीवनक सभ पाया टुटैत देखि आरो मन विचलित छेलै, मुदा बाल-बोधक मनमे ऐ सँ बेसी आबिये की सकै छल। बाजल-

“बाबू, किताबक दुआरे कखनो ने पढ़ै छी। जेते बुझल अछि तेतबेकेँ केते पढ़ब।”

बेटाक बात सुनि सिंहेश्वरक मन डोलि गेलैन जइसँ पत्नियोँ आ बेटोकेँ लगमे बैसबैत बजला-

“बौआ, बाबूक जखन मरै बेर एलैन तखन लगमे बैसा जे कहलैन से पहिने कहि दइ छिअ। एकटा भूत जहिना मुड़ी मचोड़ि खा जाइए तहिना दोसर भूत सेहो ओहन अछिए जे मुड़ी सोझ करैत जीवन सेहो दइते अछि।”

अखन तक भुलिया चुड़ीन आ जीनक खिस्सा तँ सुनने छेली मुदा भूतक खिस्सा नहि सुनने छली जे भूत मुड़ी मचोड़ि खेबो करैए आ मुड़ीकेँ सोझ करैत दौड़ेबौ करैए। ओना, भुताहि गाछी सेहो सुननहि छेली। बजली-

“भूत तँ पवनक रूप भेल। ई केना दुनू काज करत? माने मुड़ी मचोड़बो करत आ मुड़ी सोझो करत?”

पत्नीक पश्न सुनि सिंहेश्वर मने मन विचार करए लगला जे हिनका केहेन उत्तर दिऐन जे इच्छानुकूल भऽ जानि, जइसँ पूर्ण

सन्तुष्ट भऽ जाइथ। मुदा लगले सिंहेश्वरकेँ अपने मनमे शंका उठि जानि जे समाजक कहब कि गलत अछि जे 'मरद हुअए जे मौग बुझाबए', हमरा सन एक गामक पुरुखकेँ के कहए जे सइयो गामक जँ एकठाम कन्हा रोपि जोर लगौत तैयो मौगकेँ बुझाएब कठिन अछि। हारल मनमे सिंहेश्वरकेँ उठलैन जे दुनियाँसँ अपना कोन मतलब अछि जे एकटा संजीवनी बुट्टी आनै दुआरे हनुमानजी जकाँ पहाड़े उठा कैलाशसँ लंका लऽ जाएब। पत्नी तँ अपन घरनीक संग संगीनी सेहो छथिये, तँए किए ने अपन पेटक जे विकार अछि ओ सभटा सोझामे रखि दिऐन। भने अखन, भलेँ चेष्टगर नहि मुदा तेरह-चौदह बर्खक, बेटो तँ सोझामे अछिए। सिंहेश्वरक मन हल्लुक भेलैन जइसँ अनायास विवेकपूर्ण विचार मुहसँ निकैल गेलैन- "बौआ, अपन दुनू बापूतक वंश एक भेल, माइयक वंश भलेँ दोसर किए ने रहलह, मुदा ओहो बाहरसँ आबि मिलि वंश वृद्धिमे सहयोगे केलखुन। अखन तक जे बाप-पुरखाक बीतल जीवन छह से पहिने कहि दइ छिअ।"

पतिक विचार सुनि भुलियाक मन चपचपेलैन। चपचपाइक दू कारण अछि एक अछि जे चुकल जीवनमे सुधार करब आ दोसर अछि टेटर (कमी) देखि कोसब। भुलियाक मनमे कोन तरहक चपचपी छेलैन से तँ भुलिये बुझि सकै छैथ, आन केना बुझि सकैए? परिवारक बीच अपन उपस्थिति दर्ज करबैत पतिकेँ चरियबैत भुलिया बजली- "कियो मुँहक बोल छीन लेलक जे भंगेरी-गजेरी जकाँ घुटकै छी, आ भोरक परबा-पौरकी जकाँ घुटकबे ने करै छी जे भोर भेल उठै जाइ-जाह।"

बीचमे बैसल राजदेवक मन किए मानैत जे माए बाबूकेँ की कहै छथिन आ बाबू माएकेँ की कहै छथिन, एकान्त साधक जकाँ राजदेवक मन टाँगल छेलै जे अपन पढ़ाइ छुटि रहल अछि, से केना

पूरत। तेहेन सामाजिक परिवेश बनि गेल अछि जे सियान-चेतनक कोन बात जे बालो-बोधक संगी-साथी सभ बीरान बनि रहल अछि। मनमे एहेन जहरक रोप रोपा रहल अछि जे सभ बिमरयाह छी। ओना, मनमे ईहो उठै जे कियो केकरो भरोसपर थोड़े जन्म लेलक अछि जे केकरो भरोसे रहत। मुदा लगले ईहो होइ जे अपन भरोस तँ तखने ने लोक करत जखन अपना बले जीबैक लूरिक बोधक संग बेवहारो भऽ जाइ। तैबीच अपन विचारकेँ संकल्पित करैत बिच्चेमे सिंहेश्वर बजला- “बौआ, अपन खनदानक बात पहिने सुना दइ छिअ, पछाइत तीनू गोरे मिलि विचारि लेब जे आगू केना चलब?”

बाल मन राजदेवक, बाजल-

“बाबू, पहिने बाबा लगसँ अबैत परिवारकेँ आइ तकमे जोड़ि लिअ, पछाइत ऐगला विचार करब।”

बेटाक विचार सिंहेश्वरकेँ जँचलैन जे लोहाक मशीन ने राता-राती दस गुणा बढ़ि जाइए, मुदा मनुक्ख तँ से नहि छी ओ तँ अपन परिवारकेँ के कहए जे देश-दुनियाँक संग जुड़ल अछि तँए मनुक्ख केना राता-राती लोहाक मोबाइल आकि कम्प्युटर जकाँ दस गुणा बढ़ि जाएत। सिंहेश्वर बजला-

“बौआ, अपने जहियासँ आँखि-पाँखि भेल तहिये तकक ने देखल-सुनलक चर्च कऽ सकै छिअह, मुदा बाबू जे किछु वंशक विषयमे कहलैन से तँ परिवारोकेँ कहि देब उचित बनैए।”

पतिक बात सुनि भुलियाकेँ सासु मोन पड़लैन। केना बेटी जकाँ बुझि ओ सेवा केलैन जइसँ पाँच बर्ख केना बीतल से बुझबे ने केलौं। कहाँ बुझि पेलिऐ जे औझुका सन दिन-दुनियाँसँ भेँट हएत.! विह्वल होइत भुलिया पतिकेँ कहली- “दुनू परानीक बीच तेसर प्राण बेटा अछि, अखन अपना सभ सेवा करैबला छिऐ, पछाइत जखन

अपना सभक हूबा घटत तखन यएह बेटा ने मनसूबा बढ़ा जीवन दान देत।”

पत्नीक गम्भीर विचार सुनि राजदेव चौंकल मुदा सिंहेश्वरक एकोटा रोआँ जाड़क ठंढक मारल जकाँ उठिकऽ ठाढ़ो नहि भेलैन। समय एहेन बनि गेल अछि जे सभ अपन जीवन-मृत्युक घाटपर ठाढ़ भऽ गेल छैथ। अपन मनकेँ धीर करैत सिंहेश्वर धीरज बान्हि आगू बाजए लगला- “बौआ! तूँ बाबाक चर्च केलह, हम ओइसँ आगू परबाबा लगसँ शुरू करै छिअ।”

बाबा तक तँ राजदेवकेँ बुझल मुदा परबाबाक खाड़ी नहि बुझल छेलइ। ओना, सिनेमाक कलाकार आकि खेलक खेलाड़ीक सात पीढ़ीक नाओं राजदेवकेँ बुझल छै मुदा अपन परबाबाक खाड़ी नहि बुझल रहने बाबे तकक चर्च केने छल। जिज्ञासु जकाँ राजदेव अपन मुँह उठा पिताक मुँहपर रखि बाजल-

“कहियौ।”

अपन पूर्वजक जीवन, महाभारत पुराणक ओइ कथा-संवाद सभमे निहित अछि जे कथा रूपमे लोक सदिकाल उपयोग करै छैथ। कखनो एकान्त साधकक रूपमे एकलव्यक तँ कखनो पुत्र रूपमे श्रवण कुमारक, कखनो भाए रूपमे लक्ष्मणक, तँ कखनो विचारमे विभीषण-रावणक चर्च करै छैथ। तँए कहब जे भरथरी सन पत्नी पिंगलाक चर्च नहि करै छैथ? सेहो करिते छैथ। आ भाइयक चर्च आ पिता-पुत्रक ताबे विचारेमे राखू। सिंहेश्वर बजला-

“बौआ, तोहर परबाबा भेलखुन आ हमर बाबा भेला, जिनकर नाओं छेलैन फुलचन। ओ अपन गामसँ उपैट नाना गाममे आबि बसि गेला।”

अपन गाम आ नानाक गामक नाओं सुनि राजदेवक कान ठाढ़

भेल जइसँ मनक जिज्ञासा उग्र रूपमे जगलै। बाजल- “नाना गाममे आबि किए बसला, अपन बाबाक गाम की भेलैन?”

बाबागाम-नानागाम सुनि सिंहेश्वरक मनमे उठलैन जे अखन राजदेव बाल-बोध अछि, तँए बिगैड़ कऽ, माने खिसियाकऽ किछु कहब उचित नहि हएत। तँए असथिरसँ बजला-

“बौआ, तुलसी बाबा जे रावणक सखाक चर्च केने छैथ, जे रावणकेँ एक लाख पूत, सवा लाख नाति रहैन से पोतेकेँ नाति मानने छैथ। नहि तँ रावणक बेटियोक चर्च होइत किने जे केते बेटी छेलैन आ तइसँ केते नाति भेलैन। मुदा से अखन नहि, अखन एतबे जे पिताक जन्मभूमि बाबागाम भेल आ माइयक जन्मभूमि नानागाम।”

बलुआह खेतमे जहिना आड़ि चलिते-चलिते ढहि खेत बनि जाइए, माने आकारमे, तहिना राजदेवक मन सेहो सहीट भऽ गेल। जे सिंहेश्वर बुझि गेला। बजला-

“अखन तक अपना दुनू बापूत जीवित रूपमे गप-सप्प करै छेलौं, आब ओ गप कहबह जे बाबा अपना मुहेँ कहने छला।”

जेना परोछक बातकेँ लोक जेते सत्त बुझैए तेते फुसियो तँ बुझिते अछि मुदा से बुझैए मौखिक बातकेँ। ओना, लिखितो बातक महत्वमे कमी-बेसी भइये जाइए। तँए कहब जे लिखित सभ बात सोल्होअना सत्ते होइए, सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। ओना, बीतल सत्तो वर्त्तमानमे झूठो बनिते अछि। झूठ बनैक आनो-आन कारण होइते अछि। तहूमे साम्प्रदायिक सतंजा हवा लोकक जीवनकेँ आरो परेशान करैक पाछू लगले अछि। अपना सबहक परिवारक, माने किसान परिवारक, विचारमे बुद्धदेव कहलैन जे अपना सभक जीवन कृषि आधारित अछि, जइमे बरदक योगदान सेहो बहुत बेसी अछि, किए तँ ओकरासँ हर जोतैक काज लइ छी। कृषि-काज लेल बरद

महत्वपूर्ण छीहे। तैसंग, ईहो अछिए जे एक्के बेरक नहि आकि एक्के सालक नहि, अनवरत चलैबला काज छी। बरदक पैदाइस गाएसँ होइए, अखन तक अपना समाजमे गाइयक मांस खेबाक चलैन छल। तहूमे समाजक जे रूपरंग छल ओ कृषि आधारित जीवन सेहो छल आ कृषिसँ अलग पशुपालन सेहो छल। ओना, कृषक सेहो पशुपालनक संग कृषि काज करिते छला। गाए ओहन पशुधन छी जेकर बाछी वंश बढ़बैए आ बाछासँ कृषि कार्य होइए तँए गाएकेँ खाएब अपने पएर कुड़हैर मारब सदृश अछि। मुदा आइ की देखै छी? देखिते छिऐ ने जे साम्प्रदायिक शक्ति ओहन जहर मिश्रित हवा समाजमे सदिकाल बहैबते अछि जइसँ गाए-सुगरक नामपर सालमे केतेको साम्प्रदायिक विवाद उठैए आ जन-बलक संग देश-बलकेँ सेहो नोकसान कइये रहल अछि। सभसँ आश्चर्यक बात ई अछि जे दिन-राति मोबाइल-कम्प्यूटरक संग बैस मनुक्ख अपन ओहन दिनचर्य बनौने अछि जे शारीरिक श्रमसँ कोसो दूर जा रहल अछि। खाएर जे अछि तइसँ सिंहेश्वरकेँ कोन मतलब छैन, मतलब एतबे छैन जे अखन जे दुर्काल परिवेश बनि गेल अछि जइमे अपना सन-सन लोक खापड़िक भुज्जा बनल जा रहल अछि, तेकर बचाव केना हएत? सिंहेश्वरक मन अपन परिवार दिस घुमलैन। घुमिते बजला-

“बौआ, तोहूँ हाइ स्कूलमे पढ़ै छह, तँए इतिहास-पुराणक खिस्सा-पिहानी पढ़िते हेबह। बाबाकेँ अपन जे धराड़ी रहैन ओ गामक धाकर लोक छीनि लेलकैन। तँए अपना गामसँ उपैट नानी गाम चलि एला।”

जइ बातक शंका सिंहेश्वरकेँ छेलैन वएह बात राजदेव पिताकेँ पुछि देलकैन- “गामक लोक किए घराड़ी छीनि लेलकैन?”

बेटाक प्रश्न सुनि सिंहेश्वरक मनमे ओहन गुरु-शक्ति जगलैन जे पितातुल्य इमान सेहो रखैत होथि मुदा से तँ ओहन समाज बनियेँ

गेल अछि जे गुरु-शिष्य एकठाम बैस खेबोमे छुति करिते छैथ। अपन दोख हटबैत सिंहेश्वर बजला- “बौआ, बाबू जेना-जेना कहलैन ओ अखनो मनमे ओहिना झलकैए, सएह कहै छिअ।”

बिच्चेमे भुलिया बजली- “जइ मुर्गीकेँ दूध नहि तेकर अनुराग बेसी होइए। जे कहैक अछि से झब-दे कहियौ जे हमहूँ सुनब। आब हमरो यएह परिवार आ वंश ने अपन वंश आ परिवार भेल।”

पत्नीक विचारकेँ सिंहेश्वर अन्यत्र, माने आन रूपमे, नहि लेलैन। यएह ने जिज्ञासा छी, जे केतेक जल्दी कोनो विचारकेँ बुझए चाहैए आ केतेक जल्दी ओकरा क्रिया रूपमे बदैल अपन जीवन क्रिया बदलए चाहैए। जेना-जेना जीवन क्रिया बदलत तेना-तेना जीवन बदलत। चाहे ओ जेहेन क्रिया हुअए। क्रिया नीको होइए आ अधलो होइते अछि। सभ क्रियाक अपन-अपन फल कहियौ आकि परिणाम होइते अछि।

अनायास सिंहेश्वरक मनमे बाबाक ओ विचार उठि तेना जोर मारलकैन जे कानि-कानि कहने रहथिन। सिंहेश्वर बजला- “बौआ, भने अखन परिवारक सभ छीहे, तँए परिवार केना बनैए आ केना बिलटैए, से बाबा अपना मुहेँ कहने छेला।”

सिंहेश्वर बजिते छला कि तइ बिच्चेमे भुलिया टोकलकैन-

“अनाड़ी नटुआ जकाँ तेते ने अहाँ सिंगार-पेटार करए लागू जे नचैक तुके हूसि जाए.!”

पत्नीक जिज्ञासाकेँ अपन जिज्ञासा बुझि सिंहेश्वर बजला- “अच्छा सुनू.! बाबा जे कहलैन, ओ कार्वन-कॉपी सोझामे रखि दइ छी। कहलैन जे हम तँ सहजे मुरुख-चपाट छी, मुदा अपने गाममे चन्दा झा, मैथिली रामायणक रचयिता, केना अपन बापक बास छोड़ि नाना गाममे बसला से शुरूसँ अन्त धरि सुनह। अंगरेजक

शासन छल, डाँर-बान्ह तेते सक्कत छल जे समाजमे लोककेँ शान्तिक साँस लेब कठिन छल। मुदा से छल ऊपरे-ऊपर, भीतरक बात ई छल जे समाजक वर्चस्ववादी विचारक सत्ता एतेक सबल छल जे एक गामसँ उजैर दोसर गाम जा बसब साधारण क्रिया छल।"

पिताक बात सुनि राजदेवक मन सोचसँ भरि गेल, अकछाइत बाजल- "बाबू, ऐठाम बसला पछाइत परबाबाक जीवन केहेन रहलैन?"

सिंहेश्वर बजला-

"बौआ, सभकिछु अपन देखल तँ नहि अछि, किए तँ जहियासँ बुधि-अकील भेल तहियासँ बाबूकेँ रिक्सा चलबैत देखलयैन आ बाबा बुढ़ भऽ गेल छला। मुदा अपन बीतल जीवनक बात सविस्तर कहबे केलैन।"

राजदेव बाजल-

"आरो की सभ कहलैन?"

सिंहेश्वर बजला-

"कहलैन जे अपना गाममे, माने पिताक गाममे जे बोइनो-बुत्ता आ समाजोक बेवहार छल तइसँ नीक ऐठामक, माने नाना गामक छल, तँए बसैमे मिसियो भरि सोग-पीड़ा मनमे नहि भेल जे अपन बापक गाम छोड़ि किए आबि बसलौं। ओना, समाजक किछु लोक एहेन बात बजिते अछि जे गामक गलत आदमी सभकेँ गामसँ भगौले जाइए। मुदा तइ सभसँ अपना कोन मतलब अछि। मतलब अछि अपन पूर्वजक जीवनक इतिहास बुझब।" कहि चुप भऽ गेला।

इतिहासक चर्च सुनि राजदेवक मन चौंकल मुदा एहेन दुर्काल समय आबि गेल अछि जे केकरा एते पलखैत छै जे अपनो इतिहास

बुझि सकत। पुन: सिंहेश्वर बजला-

“बाबूक उमेर जखन चालीस बर्खसँ ऊपर भेलैन, आ अपने सेहो सोलह-सत्तरह बर्खक भऽ गेल रही, परिवारक भार सम्हारैमे बाबू असमर्थ हुअ लगला तँ कहलैन, ‘बौआ, जीवनमे पेटसँ आगू बढ़ि अपने किछु ने कऽ सकलौं। तोरा एको अक्षर पढ़ा नहि सकलियह। मुदा चौअन्नी पाइ जे जीवनमे कमाइसँ आएल, माने रिक्सा चलबैसँ जे भेल, ओ रखने छी। पाँच साए रुपैआसँ बेसी हएत। तोरा ई पूजी दइ छिअ, तूँ टेम्पूक ओरियान कऽ लएह।”

जेना सभकेँ होइए जे काजक निसचित समय बीतला पछाइत भूख-पियासक तृष्णा जगैए तहिना कोनो-कोनो विषयक विचार सुनला-बुझला पछाइत सेहो होइते अछि। राजदेवकेँ सएह भेल। बाजल- “ओही पाइसँ टेम्पू कीनलिऐ?”

सिंहेश्वर कहलखिन- “कीनलिऐ कहाँ, बैंकमे जमा कऽ लोनसँ लेलिऐ। सेहो देखिते छह जे केना बैंकबलाक कर्ज अदा करब, केना परिवारक पेट भरब आ केना बाबूक लिलसाकेँ पूर्ति करैत तोरा पढ़ेबह..!”

बिहाड़िक पछाइत जेना वातावरण शान्त होइए तहिना सिंहेश्वरक नि:शब्द चेहराक संग दुनू माय-पूत राजदेव सेहो चुप भऽ टुकुर-टुकुर ताकए लगल।

❑

शब्द संख्या: 2852, तिथि: 24 अक्टूबर 2021

सातम पड़ाव

देवकान्त बाबू असगरे दरबज्जापर बैसल अपन जिनगी निहारि रहल छला। निहारि रहल छला जे आइ पाँच दिनसँ कोरोनाक प्रभावमे विद्यालय बन्न अछि। शुरूमे तँ तीनियेँ दिनक चर्च भेल छल जे विद्यालय तीन दिन बन्न रहत मुदा चारिम दिन अनिसचित काल धरि बन्न रहैक सूचना भेटल। तहीकाल पत्नी दमयन्ती चाह नेने पहुँचलैन।

कुरसीपर बैसल पतिक चिन्त्य रूप देखि दमयन्तीक मनमे किछु शंका जगलैन। शंका जगैक कारण भेलैन जे आन दिन जे कुरसीपर बैस चिन्तन-मनन करै छला ओहन रूप आइ नहि छैन। चिन्तनोक दू रूप अछि, पहिल अछि अपन भार मुक्त, भय मुक्त भऽ कोनो समस्याक विषयमे चिन्तन करब आ दोसर अछि भय ग्रस्त, भार ग्रस्त भऽ चिन्तन करब। दमयन्तीकेँ दोसर कोटिक बुझि पड़लैन तँए मनमे शंका जगलैन। मुदा किछु बाजि नहि रहल छेली। हाव-भावसँ परखैक परियास कऽ रहल छेली। मुदा अपने मन दमयन्तीकेँ कहलकैन जे अखन अपन जे काज अछि तेकरा ओहिना निपटाबी जहिना सभ दिन निपटाबै छेलौं। पतिक आँखिक पल खसल देखि दमयन्ती बजली-

"चाह पीबू।"

'चाह पीबू' सुनि देवकान्त बाबू आँखिक पल उठा पत्नीक चेहरापर देलैन। बदलल-बदलल रूप पत्नीक बुझि पड़लैन। कहलो गेल अछि जे 'जेहेन आँखि तेहेन दुनियाँ।' ओना, दमयन्तीक रूपमे

कोनो बदलाव नहि रहैन मुदा कटल डारि वा कोनो लत्ती, तत्काल जहिना रहैए तहिना छेली। बदलाव नइ होइक कारण छेलैन जे बुझल छेलैन्हे जे विद्यालयमे (हाइ स्कूलमे) सालमे केतेको छुट्टी होइते अछि माने विद्यालय बन्न होइते अछि। ओना, छुट्टीयो मे छुट्टी होइए। जेना सालमे बावन-तीरपन टा रबि भेने वा दुर्गापूजा-गरमीक नमहर छुट्टी भेने केतेको रबिक छुट्टी ओहीमे फेंटा जाइए। तँए दमयन्तीक मनमे घर आ परिवारक कोनो रूप अपन चिन्त्य-रेख मनमे नहि अंकुरल छेलैन।

हाथ बढ़ा चाहक कप लैत देवकान्त बाबूक मनमे जगलैन जे जखन अनिसचित समय ले विद्यालय बन्न भेल तखन वेतनक अनिसचितता सेहो आबिये गेल। जाधैर परिवारमे खर्चक पूर्तिक हेतु आमदनी नहि औत ताधैर परिवारक कोनो-ने-कोनो काज मारले जाएत। जखने परिवारक काज मरत तखने परिवारक आमदनीक स्रोतो आ जीवनो टुटबे करत। जखने जीवन टुटत तखने रंग-बिरंगक समस्या पारिवारिक जीवनमे उठबे करत। मुदा अपन मनक विचारक वेगकेँ देवकान्त बाबू ई सोचि रोकलैन जे विद्यालयमे काज करै छी तखन ने दरमाहाक आशा करै छी जे महीना पुरलापर दरमाहा उठा, पत्नीक हाथमे दैत मास दिनक आश्रमक भार सुमझा दइ छिऐन। जेकरा ओ अपना ढंगे पार लगबैत अपन काज-भारसँ मुक्त होइ छैथ, तैठाम तँ स्पष्ट अछिए जे विद्यालय बन्न हेबाक जे परिस्थिति उठि ठाढ़ भेल अछि ओ सोल्होअना अपन भेल, तइले पत्नीकेँ किए कहि शोकाकुल करयैन? मुदा अपने मन आगू बढ़ि कहलकैन जे जखन पत्नीक हाथमे मास दिनक खर्च नहि देबैन तखन ओ केतए-सँ आनि आश्रम चलौती? मुँह दाबि देवकान्त बाबू बजला- “विद्यालय, अनिसचित समय ले बन्न भऽ गेल।”

अनिसचित समयक चर्च जइ ढंगे देवकान्त बाबू बजला तइसँ

भिन्न ढंग पकैड़ दमयन्ती बजली- “विद्यालय बन्न भऽ गेल तँ कि हेतइ। बुझले बात तँ अछिए जे बैसारीक सबटा दरमाहा विद्यालय देबे करत। तइले..?”

पत्नीक विचार सुनि देवकान्त बाबू तत्खनात चुपे रहला, किए तँ अपने मन कहि रहल छेलैन जे अनेरे जे बकतूत करब तइसँ नीक ने जे जनिहेँ मियाँ धुनै बेरिया। जखन खाली मुट्ठी भार पड़तैन तखन बुझती। अनेरे ने गाबए लगती, ‘गीता सवेद सभी विसरी जब हाथ पड़े हाथ लगना।’

मुँह बन्न होइते देवकान्त बाबूकेँ मनक विचार ठेलैत कहलकैन, जे चूक भऽ रहल अछि.! एक दिस अनिसचित काल ले विद्यालय बन्न भेल अछि आ अपने परिवारक रोचे मुँह चोरा कऽ राखि ‘जाबत बरतन ताबत बरतन’क मंत्र जपैत रहि जाइ, तखन पत्नी खाली हाथ परिवारक गाड़ी केना खींच पौती.? जखन कि अपने खेबा काल पीढ़ी आ चाह पीबै काल कुरसी लगा बैसबे करब। छुच्छे हाथे, माने खाली, तँ यएह ने करती जे चुल्हिमे आँच घुसकबैबला खोंरनी मुँहपर तेना बैसौती जे कोयलाक छाप पड़त..! एकाएक देवकान्त बाबूक मन डोलि गेलैन जे जखन सभ मिलि परिवार बनल अछि तखन सभ मिलि चलेबो करब किने। नीक-बेजाए समय जीवनमे अबिते अछि। तँए किए ने नीक जीवनक झाँकियो आ अधला जीवनक जरोखो परिवारक सोझमे राखि दी। संक्रमित मने पत्नीकेँ पुछैत देवकान्त बाबू बजला- “एकटा विचार पुछी?”

बालो-बोधकेँ जखन कहबै जे बौआ एकटा बात पुछै छिअ। कहह ते आइ तूँ की सभ खेलह? तँ ओ लगले कहत फल्लाँ चीज। तहिना दमयन्ती सेहो पुछैक विचार सुनि भाव-विह्वल भऽ गेली। जहिना भाव भूमिक भक्त अभक्त नहि होइ छैथ तहिना दमयन्ती महाभारतक नलक संगी दमयन्ती जकाँ जीवनक संगी बनि चलैक

उत्कट इच्छा व्यक्त करैत बजली- "अखन धरि हम ई नहि बुझै छेलौं जे अहाँ चोरो छी।"

पत्नीक मुहसँ चोर सुनि देवकान्त बाबूक मन परसाएल गौरिया केरा जकाँ पलैड़ गेलैन। बजला- "चोर कि कोनो हमहींटा छी आकि अहूँ छी। जहिना अहाँ चोरा कऽ रखैबला चोर छी तहिना ने हमहूँ भेलौं। चलू अधा-अधीपर समझौता भऽ गेल। जे पुछए चाहलौं से कहै छी।"

प्रेमारत्त प्रेमी जहिना प्रेममे रत्त भऽ जाइ छैथ तहिना दमयन्ती रत्त भऽ गेल छेली जइसँ मन बेकाबू भऽ गेलैन। बजली- "परिवार छी, ठट्ठा नहि, तँए कोनो विचार मने-मन रखि अपने ओझरा जाइ से नीक नहि।"

पत्नीक सहीटगर विचार पेब देवकान्त बाबू बजला-

"राजदेवक माए, अखन तक विचारकेँ अहाँसँ चोरा कऽ रखने छेलौं। मुदा परिवेश एहेन बनि गेल अछि जे सुख-दुखक संगी बनि जँ नहि चलब तँ जीब कठिन अछि।"

ओना, देवकान्त बाबू खोलि कऽ किछु नहि बजलैथ मुदा भावभूमि एहेन दमयन्तीक बनियेँ गेल छेलैन जे भवुका कऽ बजली-

"यएह जीवन ने सृष्टिक रचना करत। मुँह दाबि किए रखने छी, मुँह खोलि बाजू। जहाँ धरि संग मिलि चलैमे सकब, तहाँ धरि तँ चलबे करब।"

पत्नीक समर्पित स्वरूप देखि देवकान्त बाबू बजला- "विद्यालय बन्न भेल, एकर माने एतबे नहि जे फेर खुजत। एकर माने ईहो भेल जे जहिना अनिसचित काल ले बन्न भेल तहिना कहीं बन्ने ने भऽ जाए। तखन की करब?"

अखन तक दमयन्ती जीवनक चक्रपर धियान नहि देने छेली।

ओना, देवो केना करितैथ, पति ने बी.ए. पास कए हाइ स्कूलमे शिक्षक छथिन मुदा दमयन्ती तँ लिखै-पढ़ैक नामपर एकलव्य जकाँ औंठा छाप छैथ। तँए मैथिलानी नहि छैथ से बात नहि मानल जा सकैए। किसानी जीवनक पूर्ण महिलाक बोध छैन्हे। की अखनो मैथिलानी महाभारत नलक संगिनी दमयन्ती नहि छैथ? छैथ, महाभारतक दमयन्तीसँ बहुत बेसी छैथ। महाभारतक दमयन्ती हजारो बर्ख पूर्वक छैथ, जइ समय मनुक्खक जीवन जंगली रूपमे छल, मुदा आजुक मैथिलानी पुरुषोसँ आगू बढ़ि हवाइ जहाजक पाइलट, महा वैज्ञानिक नहि बनि रहली अछि, सेहो बात नहियेँ अछि। तँए ओहन-ओहन शक्तिशालिनी देवीकेँ खढ़-पतारक घूरक धुआँसँ झाँपब ओ केते काल झँपाएल रहत।

अदौसँ मैथिलानी पृथ्वीपुत्रक संग पृथ्वीपुत्री बनि बैशाख-जेठक रौद, सौन-भादवक झाँट-पानि आ पूस-माघक शीताएल-पलाएल राति, सौनक धनरोपनी, भादवक बरखा आ जाड़क धनउसनियासँ फटकनिया करैत दिनमे बारहमासा आ बारह बजे रातिमे अपन अस्त्र-शस्त्रक संग आमक ओगरवाही नहि करैत आबि रहली अछि, सेहो बात नहियेँ अछि। सेहो अछिए। अपन देह-देहीक शक्तिक वस्तु-स्थिति देखबैत दमयन्ती बजली-

“नीक जकाँ नहि बुझि पेलौं, तँए कनी फरिछा कऽ बुझा दिअ।”

सभ दिनसँ एहेन होइते आबि रहल अछि आ अखनो होइए जे कोनो बच्चा काजक लहलही देखि ओइ दिस दौड़ काजकेँ खेलौना बुझि खेलैत आबि रहल अछि, तँ कोनो बच्चा जीवनकेँ खेलौना बना सेहो खेलाइते अछि। खाएर जे अछि, जेतए अछि तेतए रहह तइसँ देवकान्त बाबू आ दमयन्तीकेँ कोन मतलब छैन। मतलब छैन अपन

परिवारक जीवनसँ। अपन बात फरिछाबैत देवकान्त बाबू बजला-

“विद्यालय खुजल रहत आकि बन्न रहत से निसचित नहि कहि सकै छी, मुदा अपन जिनगी अनिसचित जकाँ नहि भेल जा रहल अछि तइमे मिसियो भरि शंका नहि अछि।”

ओना दमयन्ती पतिक विचार सुनैत-सुनैत विचारमग्न होइत भाव-धारामे भँसियाइत देखि अपन मनकेँ काबू केलैन। काबू होइते मन विचार देलकैन जे किए ने पतियेसँ पुछिऐन जे अखन तकक की स्थिति अछि आ आगूक केहेन सम्भावना अछि। दमयन्ती बजली-

“जाधैर मनुक्ख अपने-आपकेँ परेख धरतीपर पएर नहि रोपत ताधैर पएर तरक धरती डगमगाइते रहत। तँए पहिने अपन जे जीवनानुभव अछि से पहिने कहियौ, पछाइत हम अपन कहब आ बच्चा सभ तँ सहजे अखन बाल-बोध अछि तँए ओकर मुँहक चहरा तँ बापे-माए ने पुरौत।”

अपन हरैत (हारैत नहि, ओ दोसर शब्द छी) जीवन देखि देवकान्त बाबू बजला-

“अखन तक मनमे असीम शान्ति छल जे चैनसँ जीवन बीति जाएत। परिवारक चक्रक हिसाबसँ बच्चा सभ सियान भऽ परिवारक गाड़ी खिंच लेत। मुदा बिच्चेमे एहेन विषम विस्फोटक परिस्थिति बनि गेल अछि जे विगत बीस बर्खसँ विद्यालय-महाविद्यालय शिक्षक विहीन भऽ गेल अछि, बच्चा रोडपर चक्कर काटि रहल अछि आ दोसर दिस ढोलक आवाज अबैए जे पढ़ाइ-लिखाइक दौड़मे छात्रक रिजल्ट नीक भऽ रहल अछि।”

बजैक क्रममे देवकान्त बाबू बाजि गेला मुदा अपने मन महसूस केलकैन जे अनेरे केतौ किछु बाजि गेलौं.! अपने आकि पत्नीएकेँ कोन जरूरत अछि जे उड़ल कौआक पाछू दौगब जे हमर

कान चोरा कऽ भागल जाइए। अपन कान किए ने देखब जे अपना अछि कि नहि। तैबीच दमयन्ती सेहो व्यंग्य करैत कहि देलकैन-

“जहिना टेटराहा मुनसा अनके टेटर देखैए आ अपन टेटर देखिते ने अछि तहिना..?”

अपना जनैत दमयन्ती इशाराम़े पतियेकेँ कहै छेली मुदा सोझा-सोझी कहैमे अपन सीमा भग्न होइत देखि लाज भेलैन। अपन सीमा की छैन से तँ दमयन्तीए जनती, आन किए बुझि पौत। खग जानए खगक भाषा, देवकान्त बाबू बुझि गेला। मुदा पोखैर वा धारक पानिक डुमा-डुमी खेलमे जहिना हरदा बजौल जाइए तहिना बुझि देवकान्त बाबू अपन हीय खोलि बजला-

“जीवनक धाराक बहुत बात बुझितो ने छी आ जेहो बुझै छी तइसँ विपरीत जीवन धार बहि रहल अछि, एहना स्थितिमे कोनो असथिर दिशा नहि देखि रहल छी जे की करब?”

ओना, चिड़ैक गेल्ह जकाँ दमयन्ती आँखि-कान ठाढ़ केने मुँह बाबि सुनि रहल छेली, मुदा आँखियेमे कि कानेमे आकि मुहेँमे विचार सन्हिआइते ने छेलैन जे मुसरीक नाँगैर पकैड़ आगू दौड़ैबतैथ। मुदा लगले हरदा बाजब तहूँमे अपन पुरुख लग, तखन पटका-पटकी कोन जीवनमे खेलाएब.! अलंकारिक भाषामे दमयन्ती बजली-

“एतबो ने बुझै छिऐ जे जे विधाता मनुक्ख गढ़लैन वएह ने पुरुष-नारीकेँ उन्टा-पुन्टा बना दुनूकेँ एकठाम साटि अपन सृजन शक्ति (निर्माणक) सेहो साटि देलखिन।”

ओना, पत्नीक विचारकेँ देवकान्त बाबू सोल्होअना बुझि गेला मुदा मनमे शंका उठलैन जे एते जँ बुझै-करैक अवगैत बजनिहारिकेँ रहितैन तँ हमरे भरोसे ठाढ़ रहितैथ आकि बिहाड़ि भेल बताह रहितैथ.? एहनो तँ सम्भव भइये सकैए जे केकरो मुँहक सुनल बात

बाजि हमरा ऊपर भारपन देखा रहल होइथ। एकाएक देवकान्त बाबूक मनमे मोड़ एलैन। मोड़ अबिते मन कहलकैन जे किए ने जीवनकेँ आगूमे राखि आगू बढ़ैक बाट पुछिऐन। भगलाह जकाँ भग्गल लाधि अपन भग्गलपन देखबैत देवकान्त बाबू बजला-

“अखन तक अपने यएह बुझै छेलौं जे अखन नोकरी करै छी, दरमाहा भेटैए तइसँ परिवार चला लेब, पछाइत जखन सेवा-निवृत्त हएब तखन पेंशनो भेटत आ बेटो सभ कमाए-खटाए लगत, तइसँ परिवार नीक जकाँ ससैर अपन सीमापर पहुँच जाएत। मुदा..!”

पतिक बात सुनि दमयन्ती अकचका लगली। अकचकाइक कारण भेलैन जे पतिक सभ बात तँ नहि बुझि सकली, मुदा एते तँ बुझबे केली जे नोकरी डमाडोलमे पहुँच गेल छैन। जखन नोकरी डमाडोलमे पड़ि जेतैन तखन तँ जीवने डोलि जेतैन। पछाइत अपना बुते सम्हारल हएत। आइ जँ अल्लापुरक रहितौं तँ खेती-पथारीसँ लऽ कऽ मालो-जाल पोसि परिवार चला लइतौं। मुदा से तँ छी नहि, छी तँ पचही परगनाक। जैठाम भूमि-छेदनकेँ पाप मानल जाइए आ पशुपालनकेँ गमारक वृत्त। तहूमे नारीक लेल तँ आरो महापाप, घरक सम्माने चौपट्ट भऽ जाएत।

जहिना पत्नीपर ओङैठ देवकान्त बाबू बाजल छला तहिना पतिपर ओङठैत दमयन्ती बजली-

“जहिना बापक घरसँ अहाँ हमर हाथ पकैड़ जीवनक रणभूमिमे अनलौं तहिना ने हम अखनो ढेका पकड़ने चलि रहल छी, मुदा अहाँ तँ पति छी। तँए अहाँक बिनु आदेशे किछु करब उचित हएत।”

पत्नीक विचार सुनि देवकान्त बाबूक अपनो मन ऐ दुआरे मानि गेलैन जे आँखिक आगूमे एहने वृत्ताकार परिवार समाजमे

देखि रहल छैथ। बजला- “अखन विद्यालय बन्दीक पाँचे दिन बीतल अछि तँए अखन हँ-निहँस किछु नहि कहल जा सकैए। मुदा नजैरमे दुनू पक्ष तँ राखए पड़त। आगू की हएत से तँ अखन आगू बाँचल अछि।”

विचारसँ देवकान्त बाबूकेँ चिन्तित देखि दमयन्ती बजली-

“अनेरे ने चिन्ताक सोगसँ देहक शक्ति घटौने जाइ छी। कहुना छी तँ पुरुख छी किने। अपन पुरुखपन जगाउ। एकटा कोरोनाकेँ के कहए जे सइयो टा कोरोना किछु ने बिगाड़ि सकत।”

पत्नीक पत्नीत्व देखि देवकान्त बाबू बजला-

“असगर तँ लोक दुनियाँकेँ ऐ भागसँ ओइ भाग घुमि अबै छैथ। अपना सब तँ दू गोरे छी।”

❑

शब्द संख्या: 1901, तिथि: 18 अक्टूबर 2021

आठम पड़ाव

आजुक दिनक काजक सूचीक अनुरूप सिंहेश्वर देवकान्त बाबूसँ भेँट करबकेँ क्रियागत रूप दैत आँगनसँ निकैल डेढ़िया टपला कि धक-दे मनमे एलैन जे जहिना कबुला-पाती केलासँ देवी-देवता खुश होइ छैथ तहिना किए ने राजदेवकेँ कहि दिऐ जे ‘बौआ तोरे काजे जा रहल छी तँए घरक ओगरवाही तोहर भेलह।’ डेढ़ियापर सँ चोट्टे घुमि सिंहेश्वर राजदेवकेँ कहए आँगन एला कि तइ बिच्चेमे पत्नी टोकलकैन-

“बसिया भात खेनिहार पुरुख जहिना बिसराह होइए तहिना अहाँ छी.! बाजू कथी बिसैर गेलौं?”

एक तँ देवकान्त बाबू सन इमानदार शिक्षक लग समय बीतत, तेकर खुशी सिंहेश्वरक मनमे छेलैन्हे तैपर बेटा निमिते ओहन काज करए जा रहल छैथ जे बेटाक संग अपनो जीवन धार बहतैन। तँए सिंहेश्वरक मन अदहनक पानिक फेन जकाँ भुलियाक विचारकेँ ऊपरे लोकि चाटि गेला तँए मनमे कोनो हर्ष-विषमय रहबे ने केलैन। पत्नीक विचारमे चरियबैक रूप देखि सिंहेश्वर बजला-

“देवकान्त बाबू सन बेकती लग समय बेतीत हएत जइसँ परिवारक सुधि-बुधि सभ हेरा जेबे करत। तँए अहाँ परिवारक अपन सभ छार-भार लिअ। हम जाइ छी।”

अपन काज सुनि राजदेव बाजल-

“देखिते छिऐ जे संगी-साथी सभ संग छोड़ि देलक। ओ हमरा रोगाह बुझैए आ हम ओकरा रोगाह बुझै छिऐ।”

राजदेवक बात सुनि सिंहेश्वरक मन कहलकैन जे किए ने बेटाकेँ ओहन बोल-भरोस दिऐ जे ओकर अप्पन मन मानि जाइ जे दुनियाँ भलेँ किए ने रोगाह बुझए मुदा अपना मने अपने तँ निरोग छीहे। सिंहेश्वर बाजल-

"बौआ, कियो कच-कच, कब-कब बोल बाजि अपन मुँह दुइर करैए, अपन मन नइ ने कहै छह जे हम रोगाह छी।"

कहि सिंहेश्वर आँगनसँ निकैल देवकान्त बाबूक गामक रस्ता पकैड़ विदा भेला। घरसँ कनियेँ आगू बढ़ला कि धक-दे मनमे विचार जगलैन जे जखन हाइ स्कूल तक फ्री शिक्षा अछि तखन तँ किताब-कॉपीक संग टिफिनक अल्पाहार सेहो फ्री हएत। जखन किताबक भार सरकारपर छै तखन अपने किए अनेरे तवाह छी। ई तँ नाहँकक हरानी छी। एक संग अनेको प्रश्न सिंहेश्वरक मनमे उठि गेलैन। जइसँ मन घोर-मट्ठा हुअ लगलैन।

आठ बजे भिनसुरुका समय, दरबज्जापर असगरे बैसल देवकान्त बाबू मने-मन यएह प्रतीक्षा कऽ रहल छला जे सिंहेश्वर औझुका समय कहने छैन, मुदा अखन तक एला नहि.! मने-मन देवकान्त तारतम्म कइये रहल छला कि सिंहेश्वरकेँ देखलैन। सिंहेश्वरकेँ प्रणाम करैसँ पहिने देवकान्त बाबू बजला-

"बहुत दिन जीयब अहाँ सिंहेश्वर, अखन मने-मन अहींक रस्ता तकै छलौं।"

देवकान्त बाबूक विचारकेँ अनसून करैत सिंहेश्वर बजला-

"प्रणाम मास्सैव।"

'प्रणाम'क उत्तर दइसँ पहिने देवकान्त बाबू असीरवाद दऽ देने छेलखिन जे बहुत दिन जीयब। दोहरा कऽ एक्के विचार देब उचित नहि बुझि देवकान्त बाबू बजला- "आऊ-आऊ, लगेमे बैसू। कान

सटा कऽ दुनू भाँइ गप-सप्प करब। देखिते छी जे केहेन समय आबि गेल अछि।”

‘केहेन समय’ सुनि चोटाएल साँप जकाँ सिंहेश्वर बजला-

“मास्सैव, जीब कठिन भऽ गेल अछि।”

सिंहेश्वरक मुहसँ ‘जीब कठिन भऽ गेल अछि’ सुनि देवकान्त बाबूक मन बिजलौकाक इजोत जकाँ शून्य-सँ-विराट रूप दिस बढ़ि गेलैन। शून्य-सँ-विराट ई जे जैठाम गुज-गुज अन्हार पसरल छल तैठाम बिजलौका छिटकने इजोत भऽ गेल। विराट रूप ई उठलैन जे एकटा सिंहेश्वरे एहेन छैथ जिनका ले दुरकाल समय भेने जीब कठिन भऽ गेल छैन आकि अधिकांश लोक छैथ। देखै छी जे हवाइ-जहाज सन आरामदेह सवारीमे बैसल, एकाएक दुर्घटना भेने शरीरक रेह तक चिन्हमे नहि अबैए, रेल गाड़ी वा कोनो अन्य तेज गतिक सवारी ओते तेज गतिसँ जीवन दौड़बैत चलबैए, सेहो दुर-घटित भेने एक्के बेर सभ मेटा दइए तैठाम सिंहेश्वरक दुरकाल तँ किछु ने छैन। ई तँ समयक गति छी, जे अपना गतिये चलैए, जे केकरो ले सुकाल बनैए तँ केकरो ले दुरकाल। ओ तँ निर्भर करैए अपन जीवन आ जीवनक गतिपर..।

देवकान्त बाबूक मन मानि गेलैन जे सिंहेश्वर जेकरा दुरकाल कहलैन ओ ने दुरकाल छी आ ने सुकाल। मुदा ई तँ अपन सोचक अनुकूल विचार भेल, एहेन विचार सिंहेश्वर बुझता कि नहि बुझत.? मुदा पुन: मनमे एलैन जे ऐठाम तँ सिंहेश्वरक प्रश्न छी, तँए पहिने हुनका मनकेँ ने मनाएब अछि। देवकान्त बाबू बजला-

“की जीब कठिन भऽ गेल अछि, सिंहेश्वर?”

जहिना कियो किनको मनक बेथाकेँ अपन बेथा बुझि सम्वेदित होइ छैथ तहिना सम्वेदित होइत सिंहेश्वर बजला- “भाय

साहैब! अपने कहुना भेलिऐ तँ सभ तरहेँ श्रेष्ठ भेलिऐ, तँए अपने लग नहि बाजब तँ केतए बाजब।"

सिंहेश्वरक विचार सुनि देवकान्त बाबूक मनक सम्वेदित भाव-भूमि तैयार हुअ लगलैन मुदा कोनो जीवित विचारकेँ उठल नहि देख, मुड़ी डोलबैत सिंहेश्वरक मनक विचारकेँ उठबए लगला। अपन प्रश्न आमंत्रित होइत देखि सिंहेश्वरक मन मानि गेलैन जे अपन मनक दुख देवकान्त बाबू बुझए चाहि रहला अछि। हारल-मारल लोकक जीवन एक नहि हजारो राक्षस रूपी समस्यासँ घेरल रहिते अछि। जइसँ हारल-मारल ओकर मन तेना वौआ जाइए जे कोन समस्या (संकट) केते महत्वक अछि तेकरो सुधि ने रहि पबै छइ। कम्मो महत्वक विचार वा काज अगुआ जाइए आ बेसियो महत्वबला पछुआ जाइए। सिंहेश्वरक मनमे सेहो तहिना भेलैन। आएल छला बेटा–राजदेव–क स्कूल आ किताबक काजे मुदा बजा गेलैन-

"भाय साहैब, की कहब। ऊपर चढ़ि-चढ़ि देखा तँ सब घर एक्के लेखा।"

सिंहेश्वरक विचार देवकान्त बाबूकेँ कोनो भाँजेपर ने चढ़लैन। पुछलखिन-

"से की सिंहेश्वर?"

जेना घोड़सवार घोड़ाक मुँहक लगाम एकाएक खिंचैए जइसँ घोड़ा लगले ठमैक जाइए, तहिना सिंहेश्वरक मनमे सेहो भेलैन। अपने मन विचार देलकैन जे अनेरे जे बाजारक धुनिया जकाँ रूइया देखि बाप-बाप चिकरैसँ नीक ने जे अपने किए ने धुनकीपर चढ़ि अपन रूइया धुनी। सिंहेश्वर बजला-

"भाय साहैब, अपनो अपन परिवारो आ समाजोक कोनो भाँजे ने पबै छी जे काल्हि की हएत।"

ओना, देवकान्त बाबूक मनमे उठलैन जे सिंहेश्वरकेँ मुँह झाड़ि कहि दिऐन जे जेहेन आइ करब तेहेन काल्हि पएब, मुदा अपने मन रोकि देलकैन जे अपन कएल तँ मानि लेलौं मुदा प्रकृति जे एतेक विशाल अछि ओ की चुपचाप बैसले रहत? की ओकरामे कोनो गति नहि छै, आकि ओकरे गतिये दुनियाँ चलैए। जहिना समुद्रक पानिक गर्मीसँ तरका पानि बुमकला छोड़ि हवा बनि अकासमे छिड़िया जाइए तहिना ने धरतीक भीतर सेहो भुमकम सन पृथ्वी तोड़ैत शक्ति अछि। मुदा विचारकेँ समेट देवकान्त बाबू बजला-

"से की सिंहेश्वर? नीक जकाँ अहाँक बात नहि बुझि पेलौं?"

देवकान्त बाबूक जिज्ञासा देखि सिंहेश्वरक अपने मन रोकलकैन जे ई तँ केकर दिनक पइर भऽ गेल। आएल छेलौं हरि भजन करए आ औंटए लगलौं कपास। अपनाकेँ समवेद करैत सिंहेश्वर बजला-

"भाय साहैब, बड़ीटा दुनियाँ अछि आ बहुत विचारसँ सेहो भरल अछि। तइ पाछू हमहीं पड़ी आ दुनियाँ मुँह तकैत रहए, सेहो नीक थोड़े हएत। नीक तँ ई ने हएत जे सभ अपन-अपन जीवनकेँ सिरैज संसारक निर्माण करी।"

सिंहेश्वरक वौआइत मनकेँ समटैत देवकान्त बाबू बजला-

"भाय सिंहेश्वर, देहा-देही हम-अहाँ केतेटा छीहे? बर बेसी हएब तँ समुद्रक एक बून पानि जकाँ हएब। तखन जे समुद्र उठा कऽ पीबैक विचार करब, तेकरा छोड़ू, अपन जे दिन-दुनियाँ अछि तेकरा सम्हारू।"

देवकान्त बाबूक विचार सुनि सिंहेश्वर बजला-

"भाय साहैब, भने अपने मोन पाड़ि देलौं। काजे आएल छी।"

काजकेँ प्राथमिकता दइबला देवकान्त बाबू सभ दिन रहला

आ अखनो छथिए। विस्मित होइत बजला- “जँ कनी देरियोसँ विचार जगल तँ ठौरपर जगल। केहेन काजे आएल छी?”

सिंहेश्वर बजला-

“भाय साहैब, ओना कौल्हुका गपो-सप्प आ काजो बाँकीए अछि। मुदा तेकरा छोड़ू। नवसिरासँ आजुक जे परिवेश बनि रहल अछि जइसँ परिवर्तित रूप-रेखा बनि रहल अछि, जेकरा सनचरिक अवस्था कहै छिऐ, तेकरा कनी नीक जकाँ बुझा दिअ। ओना, छी कनी बेसी बिसराह, तँए कहीं सुनैत-सुनैत बिच्चमे ने बिसैर जाइ।”

सिंहेश्वरक मनक विचारकेँ देवकान्त बाबू आत्मसात् करैत बजला- “सिंहेश्वर, पहिने बाजू जे कोन काजे आएल छी। पछाइत ओइ काजक रूप-रेखा देखबो करब आ बनेबो करब।”

सिंहेश्वर अपन हीक विचार, माने हृदयक विचार खोलि बजला-

“मास्सैव, अपनेक भाए-भैयारीक विचार सुनि मन एते मखैर गेल जे मनक सभ बेथा, अतीतमे बेतीत भऽ गेल। घरपर सँ जइ काजे चलल छेलौं, आगू अबैत-अबैत एकटा दोसरो काज मनमे मुड़ियारी दऽ देलक तँए असमनजसमे पड़ि गेल छी जे की बाजी की नहि।”

सिंहेश्वरक बिसरपनक विचार सुनि देवकान्त बाबू बजला-

“सिंहेश्वर, बिसरपन ओहन रोग छीहे जे दुनियाँमे सभकेँ लगल अछिए। टी.बी., कैंसर जकाँ किछु गनले-गुथल लोककेँ नहि लगल अछि। भने मोन पाड़ि देलौं जे एकटा काज घरसँ लऽ कऽ चलल छेलौं आ दोसर रास्तामे भेटल।”

अपन पेटक विचार बुझने सिंहेश्वरक मन तेना अहैल-दहैल गेलैन जे प्रश्ने बेठेकान भऽ गेलैन। तड़ैग कऽ बजला- “मास्सैव,

आइ-काल्हि बेसी लोक बेसी झूठे बजैए।”

सिंहेश्वरक मुँहक बात सुनि देवकान्त बाबूकेँ कोनो थाहे ने लगलैन जे सिंहेश्वर बजै छैथ आकि बकै छैथ। मुदा फेर अपने मन कहलकैन जे किए ने सिंहेश्वरक अपने मुहसँ सूह-कारि विचार करी। देवकान्त बाबू बजला-

“सिंहेश्वर, पहिने एक गिलास पानि पीब लिअ। पछाइत असथिरसँ सभ गप-सप्प करब।”

देवकान्त बाबूक विचार सुनि सिंहेश्वरकेँ अपनापर ग्लानि भेलैन। ग्लानिक कारण भेलैन जे जखन दुइये गोरे एकठाम बैस काजक विचार करए आएल छी, तखन अनेरे तेसर विचारकेँ बीचमे आनि जटा-जटीनक खेल जकाँ बेंगकेँ उक्खैड़मे कुटब नीक नहि। मन असथिर करैत सिंहेश्वर बजला-

“मास्सैव, बड़ लीलसा अछि जे बेटाकेँ दू अक्षरक बोध कराएब। किए तँ बाबूओ अपन अन्तिम अवस्थामे कहलैन जे बौआ बड़ लिलसा छल जे तोरा दू अक्षर पढ़ा दिअ, मुदा ओ मन लगले रहि गेल, मुदा तूँ अपना बेटाकेँ दू अक्षर जरूर पढ़ाबिहह। से आइ..?”

सिंहेश्वरक मनक अतलक सुतल विचार सुनि देवकान्त बाबू पसीज गेला, मुदा परिवेश एहेन बनि गेल अछि जे एक-दोसरसँ लग नहि आबि दूर भगबैक रूप पकैड़ लेलक अछि। एहेन स्थितिमे सम्बन्ध बना कऽ बढ़ाएब मात्र गप-सप्प थोड़े छी। विचारकेँ असथिर करैत देवकान्त बाबू बजला-

“सिंहेश्वर, अहाँ हमरा किछु बुझी वा नहि बुझी मुदा अपने तँ अपन सभ किछु बुझिते छी किने। हमरा जे शक्ति अछि तइसँ जे भऽ सकत से बिसवास रखू जे हेबे करत।”

देवकान्त बाबूक विचार सुनि सिंहेश्वरक मनमे ओहने विचार

उपैक गेलैन जेहेन आमक पीपही रोपिते आमक स्वाद मनमे उमैड़ अबैए। अपन हीया हारि सिंहेश्वर बजला-

“भाय साहैब, अखन तँ पाँचे दिन बन्न भेला भेल अछि तँए किछु ने बुझि पेब रहल छी मुदा तूफान उठैसँ पहिने जे सिहकी हवा चलैए तेहने बुझि पड़ि रहल अछि जइसँ लगैए जे किछु अन्होनी हेबाक छइ।”

ओना, सिंहेश्वरक विचार देवकान्त बाबू आँकि लेलैन मुदा सिंहेश्वरक दशा-दिशा देखि अपने मन कहलकैन जे भरिसक सिंहेश्वरक मनमे तेतेक डर पइस गेल छैन जे तही डरसँ मन बाइत गेलैन अछि। तँए किए ने सिंहेश्वरकेँ धरतीपर उतारि अपन रूप देखा पुछिऐन जे आगू की करए चाहै छी? मनमे बिसवास उपैकते देवकान्त बाबू बजला-

“सिंहेश्वर, परिवारक की स्थिति अछि?”

‘परिवार’ सुनि सिंहेश्वरक मनमे ओहिना उतैर एलैन जेना आन-आन अपन परिवारक हाल-चाल नुका कऽ रखैए। सिंहेश्वर बजला-

“भाय साहैब! परिवारक की हाल-चाल रहत, बुड़ले सन अछि। एक तँ गरीबक मनोरथे केतेटा होइए, सेहो पुराएब जानक जंजाल भऽ गेल अछि।”

छिड़ियाइत-बितियाइत सिंहेश्वरक मनकेँ देवकान्त बाबू एकठाम समेट पथ-प्रशस्त करए चाहि रहल छला मुदा से हएत रस्ता डोरिएलाक पछाइत। सिंहेश्वरकेँ डोरियबैत देवकान्त बाबू बजला-

“बेटाक की लिलसा बाजल छेलौं सिंहेश्वर, से नीक जकाँ नहि बुझि पेलौं?”

जहिना कोनो नव जगहपर जाइसँ पहिने ओइ जगहक

जानकारी भेटने मनमे खुशी अबैए तहिना सिंहेश्वरकेँ भेलैन। बेटाक प्रति अपन दायित्वक बाढ़ि मनमे उमैड़ एलैन। बजला- “भाय साहैब, पाँचे दिनमे बेटा बौक भऽ गेल।”

ओना, सिंहेश्वरक सारगर्भित विचार देवकान्त बाबूक मनकेँ झकझोड़ि देलकैन, मुदा अपन बेवसीक स्थिति देखि बजला-

“बेटा की बौक भऽ गेल, सिंहेश्वर?”

सिंहेश्वर बजला-

“भाय साहैब, बेटाक सभ संगी-साथी छुटि गेल। ने पढ़ैक संगी रहल आ ने खेलैक। चारिम दिन राजदेवकेँ अपना ऐठाम देखि संगियो आ संगीक जेठ भाइयो मार-मार कऽ छुटल छल। अपना ओहन ओकाइत नहि अछि जे अपने आगिये-पानियेँ निमहब। तहूमे स्कूलक लोभे रहि गेलौं जे किताब स्कूलेसँ भेटत। से भेटल पाँचे गोरेकेँ। ओना, तेते किताब स्कूलमे आएल छल जे एक-एक किताब सभ विद्यार्थीकेँ भऽ जइतै। मुदा से भेल नहि। पाँचे गोरेकेँ पूरा सेट लगा सभ किताब स्कूलसँ भेट गेल आ बाँकी बच्चाकेँ ई कहि आश्वासन देल गेल जे एक-दोसरसँ लऽ सभ पढ़िहह।”

सिंहेश्वरक विचार सुनि देवकान्त बाबूक मन स्वीकारि लेलकैन जे भेल तँ तहिना अछि। ओना, ओइ बँटवारामे ने हमरासँ विचार लेल गेल छल आ ने कोनो काजक दायित्व छल। सभ केलैन वर्ग शिक्षक आ प्रधानाध्यापक मिलि कऽ। मुदा अनुशासनो तँ अनुशासन छी। मुँह तँ बन्न कइये कऽ राखए पड़त। देवकान्त बाबू बजला-

“तइमे की भेल?”

सिंहेश्वर बजला- “नीक जकाँ नइ बुझल अछि। राजदेव अखन बच्चे अछि तँए ओकरा बातक केते बिसवास करब।”

सामंजस करैत देवकान्त बाबू बजला- “सिंहेश्वर, मनमे

पुरुखपन जगाउ। अपन काजकेँ मनमे रोपि ओकर सेवा करू।" विचार बदलैत पुन: बजला-

"अखन पाँचे दिनक हाल अछि, देखियौ आगू की होइ छै।"

बिच्चेमे सिंहेश्वर बजला-

"सुहालो भऽ सकैए आ कुहालो तँ भइये सकैए।"

❑

शब्द संख्या: 1948, तिथि: 01 नवम्बर 2021

नअम पड़ाव

कोरोना-कालक बन्दीकेँ आइ तेसर मास पुरि गेल। बन्दीमे केतेको परिवार बिलटबो कएल आ केतेको परिवार जगजियारो भेल। सतयुगमे राजा हरिश्चन्द्रकेँ भेल रहैन जे श्मशानक नोकरी करितो बेटाक कफन ले भीख मांगए पड़लैन आ कलयुगमे ई तीन मासक बीतल जे बन्दीक जीवन रहल, अइमे सभकेँ असगरे-असगरे जीबै-मरैक समयो भेटल आ तैसंग सुख-सराधक बचत सेहो भेबे कएल अछि। तेतबे नहि, कफन आ कर्ताक नव वस्त्रक जगह पुरनो वस्त्रसँ काम-काज चलबे कएल अछि। भाय, काज तँ काज छी.! काज तँ करइ पड़त। जखन कपड़ा दोकान बन्न भऽ गेल तखन कफन केतए-सँ आनब आ जखन डॉक्टर सहित दवाइयो निपत्ता भऽ गेल तखन रोगी-टट्टीक जे दशा हेबा चाही तेकरा के रोकत.? खाएर जे हएत से समाज अपन भोगि लेत। तइसँ सिंहेश्वरकेँ कोन मतलब छैन। नइ इमनदारीक जीवन तँ बेइमानियोक जीवन जीबे करता।

मध्य अगहनमे जहिना सभ किसानक घरमे किछु-ने-किछु अन्नक आगम होइते छैन तहिना आजुक राति सिंहेश्वरकेँ मध्य अगहने जकाँ भरखरि आमदनी भेलैन। बारह बजे रातिमे रिजर्व गाड़ी चलल छेलैन जइसँ मनमाना आमदनी भेल छेलैन। तैसंग ईहो भेलैन जे जइ गाम सवारी लऽ कऽ गेल छला ओहू गाममे दोसर सवारी भेट गेल छेलैन। दोहरी कहियौ आकि चौहरी से आमदनी भेले छेलैन। ओना, मास दिनक टैक्स, ऐठाम टैक्सक माने स्थानीय

पुलिस प्रशासनक निजी सुविधा-शुल्क अछि, सेहो देब छेलैन आ अपन परिवारोकेँ सम्हारब छेलैन्हे। परोपट्टाक जेते टेम्पू चालक छैथ ओ अपन कारोबार बन्न होइत देखि अपनामे सभकियो विचार केलैन जे जहिना उड़नदस्ता पुलिस रस्ता रोकि रहल अछि तहिना अपनो सभ ओकर रस्ता रोकैक चेतावनी दियौ। जँ दोसतियारे समझौता हएत तँ दुनूकेँ कल्याण अछि। अपनो सभकेँ राति-के कमाइ भऽ जाएत आ पुलिसोकेँ कमाइ भऽ जेतइ। अपने सभ जकाँ ने ओहू बेचारा सभकेँ समाजक संग परिवारो आ अपन बालो-बच्चा छइहे। केकरो मुँहमे जाबी लगाएब उचित नहि।

बन्दीक दस दिनक पछाइत स्थानीय स्तरपर टेम्पू चालक आ उड़नदस्ता पुलिसक टीमक संग समझौता इमानदारीसँ भेल। महिनवारी टैक्स टेम्पूबलाकेँ बन्हा गेलैन आ राति-के गाड़ी चलबैक अधिकार भेट गेलैन। अखन तकक जे जीवन सिंहेश्वरक चलैत आबि रहल छेलैन, तइमे बीचक दस दिनमे मकमकी एबे केलैन मुदा दस दिनक पछाइत पुन: वएह रूप पकैड़ लेलकैन जे पहिने छेलैन। अपन सभ हिसाब परिवारक मिलिते सिंहेश्वरक मनमे एलैन जे किए ने रूपलाल कक्काक भीतरिया हाल-चाल सेहो बुझि ली। समाजमे अखनो वैहटा मर्द एहेन छैथ जे हमरा ले ठाढ़ भेल छैथ। समाजमे हजारो परिवार रहैए, मुदा तँए कि कहब जे सभक बलेँ सभ जीबैए? नहि, किछु खास-खास परिवारक सम्बन्ध ओहन बनल रहैए जे एक-दोसराक बल रूप (शक्ति) मे ठाढ़ होइए। रूपलाल कक्काक घर सेहो सटले, माने दस-पनरह लग्गापर छैन। दुनू गोरे एक पड़ोसी जकाँ रहै छैथ। गामक आन पड़ोसी जकाँ मनमे नहि अबै छैन जे राहड़िक दालि आ पड़ोसियाक जीवन जेते सीझकऽ गलत तेते नीक सुआद बनत। समयमे एते तँ गुण आबिये गेल अछि जे पहिलुका जकाँ पचीसो-पचास बेर घरपर गेला पछातियो जिनकासँ भेँट हएब

कठिन छल तइमे अखन सस्ती आबिये गेल अछि। तखन एते तँ जरूर अछिए जे सभक नजैरमे सभ कोरोनासँ ग्रसित भइये गेल छी, तँए दू गज हटि कऽ रहए पड़त। मुदा जखन दू गज हटल रहब तखन कनफुसकी केना करब? खाएर जे हुअए ओ कनफुसकी केनिहार जानैथ तइसँ सिंहेश्वरकेँ की मतलब छैन। मतलब मात्र एतबे छैन जे अपन परिवार आ पड़ोसी परिवारक जीवन ओहन बनल रहए जइसँ चैनक साँस आ शान्तिक निसाँस छोड़ैत चलैत रही।

रूपलाल काका असगरे दरबज्जापर बैसल अपन दिन-दुनियाँ गुनि रहल छेलैथ। गुनि रहल छेलैथ जे भगवान जँ बेटी देलैन तँ ओ बेटोसँ नमहर बेटा बनि ठाढ़ अछि। ओकरे परतापे एहनो समयमे निचेन छी। माने ई जे बेटीक सासुरक परिवार कारोबारी परिवार छैन, जइसँ कोनो वस्तुक कमी नहि रहने रूपलाल काकाकेँ सेहो अनदिनो, माने जखन कोरोना नहि छल तखनो, आ अखन तँ सहजहि, माने जहियासँ कोरोनाक बन्दी भेल तहियासँ खाइ-पीबैसँ लऽ कऽ आरो-आरो वस्तुक भरपूर मदैत कइये रहल छैन।

सिंहेश्वरकेँ दरबज्जाक मुँहपर देखिते रूपलाल काका बजला-

"एना ठाढ़ किए छह सिंहेश्वर? आबह लगमे आबि कऽ बैसह। ओना, सुनै छी जे आनो-आनो देशमे कोरोना बढ़िये रहल अछि।"

जहिना सिंहेश्वरक कानमे रूपलाल कक्काक बात पैसलैन तहिना आगू ससैर सिंहेश्वर रूपलाल काका लग आबि बजला-

"काका, बिसवास गुर्णें फल भेटैए।"

ओना, सिंहेश्वरक विचारकेँ रूपलाल काका पहिने ऊपरे-ऊपर लेलैन। माने ई जे गाम-समाजमे सभक मुहसँ निकैलते अछि जे 'बिसवास गुर्णें फल भेटैए।' मुदा लगले अपने मन चेतौनी दैत कहलकैन जे एकटा बिसवास होइए सुनलाहा आ दोसर होइए

देखलाहा-केलहा, माने एक बिसवास ओहन भेल जे कानसँ सुनलौं जे फल्लाँ ठाम फल्लाँ घटना भेल, जेकरा ने आँखिसँ देखलौं आ ने अपन हाथ-पैरसँ केलौं। आ दोसर होइए अपन हाथ-पैरसँ निरमित करैत ओकरा जीवनक अंग बना आंगिक रूपमे धारण कएल। दुनूक बीच बहुत अन्तर अछि.! रूपलाल काका बजला-

“की बिसवास गुर्णें फल, सिंहेश्वर?”

पैछला रौतुका आमदनीसँ सिंहेश्वरक मन जे मधुआएल छेलैन ओ अखनो धरि ओहिना लहलहाइते रहैन। बजला-

“काका, जेकर मन मानैए जे हमरा छोड़ि बाँकी सभकेँ कोरोना भऽ गेल अछि ओ तँ तेकर मनक विचार ने भेल, मुदा से अपना मनमे थोड़े अछि।”

सिंहेश्वरक विचार सुनि रूपलाल काकाकेँ कोनो भाँजपर विचार चढ़बे ने केलैन। अनकर चर्चा तँ सिंहेश्वर केलैन मुदा अपन किछु करबे ने केलैन। तखन ओहन विचार अपन भेल केना? रूपलाल काका पुछलखिन-

“अपना मनमे की छह, सिहेश्वर?”

सिंहेश्वर बजला-

“काका, जहिना अपन मन अपन शरीरक रूप देखि कहैए जे कोनो बेमारी देहमे नहि अछि तहिना ने सभक छैन। आकि सोझे कहनहिसँ केकरो कोनो बेमारी भऽ जाइए। खाएर से लोक जानए आ लोकक विचार जनतै, तइसँ अपना सभकेँ कोन मतलब अछि। मतलब एतबे राखू जे जँ शरीरमे कोनो रोगक आक्रमण हुअए तँ आँखि मुइन जहिना पहिने डॉक्टर साहैब ऐठाम जा कऽ रोग छोड़बै छेलौं तहिना जा कऽ छोड़ाएब।”

ओना, बजैक क्रममे सिंहेश्वर बाजि गेला मुदा अपने मन

पछाइत अपसोच करए लगलैन जे झूठ बजा गेल। तीन मासक एहेन स्थिति बनियेँ गेल अछि जे डॉक्टरो सभ अपने पतनुकान नेने छैथ तखन कोन डॉक्टर ऐठाम जाएब आ दवाइक दोकान बन्न रहने दवाइ केतए-सँ कीनि आनब..?

सिंहेश्वरक विचार सुनि रूपलाल कक्काक मन मिसियो भरि कहियौ कि मड़ुओ भरि आकि खढ़ो भरि कहियौ, नहि डोललैन। किए तँ दवाइक दोकानक दवाइ तँ नहि ने गलि गेल आकि डॉक्टरे साहैब सभ पतालमे जा कऽ नहि ने कृष्ण जकाँ समुद्रक कातमे द्वारिका जा कऽ नुका रहला। जखन हाथमे मोबाइल अछि तखन दुनियाँ हाथमे अछिए ने। जखन जे खगता हएत पूर्ति करब। रूपलाल काका बजला-

"सिंहेश्वर, साए बेमारीक एक दवाइ छी संयम आ जरूरतक अनुसार भोजन आ समयानुसार अपन क्रिया-कलाप।"

सिंहेश्वर बजला-

"हँ, से तँ छीहे.!"

बजैक क्रममे सिंहेश्वर रूपलाल कक्काक विचारकेँ सोल्होअना समर्थन दैत मानि गेला मुदा लगले अपने मन कहए लगलैन जे घर-परिवार आकि गाम-समाजमे के एहेन छैथ जे नहि सुनैत हेता आकि बजैत हेता जे 'साए रोगक दवाइ छी एक संजम', मुदा तखन एते रोग किए लोककेँ के कहए जे मालो-जाल आ अन्नो-पानिमे लगैए? भीतरे-भीतर सिंहेश्वरक अपने मन औनाए लगलैन जइसँ मनमे अभय-भय दुनू धमकलैन। एकाएक चेहराक रंग बदलए लगलैन जे रूपलाल काका अख्यिाससँ बुझि गेला। मुस्की दैत रूपलाल काका बजला-

"सिंहेश्वर, दुनियाँक भार उठेबह से ओते उठा हेतह। अपन

घर-परिवारक भार उठा नीक जकाँ चलैत रही, बस तेतबे चिन्ता राखी।”

‘अपन घर-परिवार’ सुनि सिंहेश्वरक विचार मोड़ लेलकैन। मोड़ लइते मनमे उठलैन जे जँ लोक अपने परिवारक बीच अपनाकेँ घेरि राखत आ पड़ोसीक संग समाजक बीच अपनाकेँ नहि बना राखत तखन गाममे आगि लगने आकि कोनो संक्रामक रोग पसरने अपनो परिवार थोड़े बँचत। ओ तँ दोसरे वा समाजेक मदैतसँ ने पार-घाट लागत। ओना, जखने मनुक्ख अपन दिशानुमुख जीवन धारण केने अपना रस्तासँ चलए लगैए तखने पड़ोसी आ समाजक बीच सम्बन्ध सेहो स्थापित होइत चलैए। मुदा से होइए दिशानुमुख गतिशील रहने। अपन गाम समाज तँ तेहेन दिशाहीन भऽ गेल अछि जे एक-एक परिवारमे चारि-चारि, पाँच-पाँच साम्प्रदायिक विचारक संग जीवनधार बहि रहल अछि। एते तक कि परिवारक बीच पति-पत्नीमे सेहो एक प्राणी वैष्णव, माने माछ-मांस वर्जित केनिहार छैथ आ दोसर प्राणी साकठ छैथ जे माछ-मांस खाइबला छथि। तहूठाम एते समस्या उठि कऽ ठाढ़ होइते अछि किने जे दुनूमे नीक कोन भेल? जखन पति-पत्नीक बीच विचार एकबट्ट नहि अछि तखन तँ भिन्न-भिन्न जाति, भिन्न-भिन्न सम्प्रदायक बीच हएब कठिन अछिए। तैबीच एकटा प्रश्न आरो अछि, ओ अछि अपन-अपन चित्तवृत्ति। माने कोनो भोज्य वस्तु चित्तपर चढ़ब आ कोनो वस्तु नहियोँ चढ़त। एहेनठाम तँ एहेन सम्भव अछिए जे जे वस्तु चित्तपर नहि चढ़त ओइसँ परहेज करब। मुदा ओइ वस्तुसँ घृणा करैत ओकर निन्दा करब, उचित नहि ने भेल।

अपन मनक मुराद टुटैत देखि सिंहेश्वर बजला- “काका, की कहब.! मनमे बड़ लिलसा छल जे बेटाकेँ कम-सँ-कम मैट्रिको तक पढ़ा देबइ। मुदा से.?”

सिंहेश्वरक विचार सुनि रूपलाल काका प्रवोधैत बजला-

“सिंहेश्वर, एहेन उकड़ू समय कि अपने सभ-टाले अछि आकि सभ ले अछि। सुननहि हेबह जे राजस्थानमे डॉक्टरी पढ़ैत बच्चासभक की दशा भेल, गाम-गामक स्कूल बन्न भऽ गेल अछि, तैठाम हमर-तोहर कोन सस-बस चलत।”

भावनामे बहैत, माने बेटाक पढ़ाइक भावनामे बहैत सिंहेश्वर बजला-

“काका, अपन विचार जे बेटाकेँ पढ़ेबाक अछि तेकर जँ दुरगतियो हएत तँ मनकेँ बुझा-सुझा लेब मुदा पिताजीक विचारक जे दुरगंजन हेतैन तइले मनमे कुबाथ भइये रहल अछि किने।”

भावनामे बहैत सिंहेश्वरकेँ देखि रूपलाल काका तोष-भरोस दैत कहलखिन-

“सिंहेश्वर, शरीरक रोग हुअए आकि समाजक रोग हुअए, रोगकेँ मेटबैमे किछु समय लगिते अछि, अखन तीनियेँ मास ने कारोबार बन्दीक भेल अछि, देखहक जे आगू की होइए।”

रूपलाल कक्काक विचार सुनि सिंहेश्वरक मन ठमकलैन। ठमैकते बजला-

“काका, जहिना देखा-देखी लोक जीबैए तहिना सीखा-सीखी सीख सिखबो तँ करिते अछि किने।”

सिंहेश्वरक विचारकेँ तहेदिलसँ रूपलाल काका मानि लेलैन मुदा विचारसँ कोनो विचार मानब आ कर्मगत मानब, एक चिन्तनधारा रहितो दूरी तँ बनल अछिए किने। एकाएक रूपलाल कक्काक मन ततमताए लगलैन। ततमताइक कारण भेलैन जे जँ कोनो क्रियाकेँ पहिने विचारक रूपमे नहि संकल्पित कएल जाएत ताधैर ओकर रूप-रेखा तैयार केना हएत? ऐठाम तक दुनू विचारमे

सहमत बनि जाइन मुदा आगू बढ़िते विग्रह ठाढ़ भऽ जाइन। अपने कोनो सस-बस नहि चलैत देखि रूपलाल काका बजला-

"सिंहेश्वर, तेहेन गड़ूगर समय बनि गेल अछि जे परिवारक कोन बात जे अपनो देहा-देही जीब कठिन भऽ गेल अछि।"

ओना, सिंहेश्वरक आमदनी माने रातिकेँ टेम्पू चलौने, पहिनेसँ किछु मानेमे नीके बनि गेल छैन। तइमे कोनो सिंहेश्वरेटा छैथ, से बात नहि, बहुत छैथ। तँए सिंहेश्वरक मन अपन परिवाक आन-आन काजमे नहि अँटैक सोझे बेटाक पढ़ाइपर पहुँच गेलैन। बजला-

"काका, कहिया तक स्कूल बन्न रहत, तेकरो ठेकान नहियेँ अछि, अपना ने पढ़ै-लिखैक कोनो ऊहि राजदेवकेँ भेल अछि आ ने कियो देखौनिहार-सिखौनिहार अछि।"

कहि सिंहेश्वर चुप भऽ गेला। एकाएक रूपलाल कक्काक मन बिहुसि गेलैन। बिहुसैक कारण भेलैन जे मन मजगूतीसँ सचेष्ट केलकैन जे यएह छी कोनो यज्ञक संकल्प लऽ ओकरा जी-जान लगा निमाहब। ओहुना देखिते छी जे अबोधो बच्चाकेँ निशाँएल-बोहियाएल पिता वा अभिभावक यएह कहि छोड़ि दइ छैथ जे पढ़ वा नहि पढ़। ओना, दुनू तरहक विचारमे परम्परासँ अबैत संस्कारक फल सेहो छीहे। कहब जे केना अछि? अखन तक जइ परिवारमे कियो विद्यालयक मुँह नहि देखलैन, ओहने परिवारमे ने नइ पढ़ैक संस्कार जीवित अछि। खाएर जे अछि, अखन एतबे रहए दियौ। रूपलाल काका बजला-

"सिंहेश्वर, एकटा तोरे बेटाक संग एहेन भेलह सेहो बात नहियेँ अछि, सभ ले भेल अछि। एते तँ आशा करबे करबह किने जे जे गति सभक हएत से हमरो हएत।"

सिंहेश्वर मनक कुहेस हटल। कुहेस हटिते विचारमे रंग चढ़ल।

रंग चढ़िते सिंहेश्वर बजला-

"काका, अपना दुनू गोरेक परिवार जातिसँ भलेँ दू छी, मुदा आइ तीन पुस्तसँ जे सम्बन्ध अछि तइमे केतौ जातिक सिरखार अछि? तैसंग ईहो ने अछिए जे जखने घरक बगलक जेते दूरक पड़ोसीक बीच एक बात-विचार बनल रहत तेते दूर धरि चैन आ शान्ति रहबे करत किने.!"

सिंहेश्वरक विचारकेँ छान-बीन करैत रूपलाल काका मने-मन सोचलैन जे ड्राइवर सभक सतसंगमे भरिसक एहेन विचारक बोध सिंहेश्वरकेँ भेलैन अछि। सिंहेश्वरक विचारकेँ सूहकारि रूपलाल काका बजला- "हँ, से तँ रहबे करत।"

रूपलाल कक्काक स्वीकृति सुनि सिंहेश्वर बजला-

"काका, अपन आमदनी पहिलुकासँ किछु नीके बनि गेल अछि, परिवारमे कोनो तरहक अभाव तँ नहि अछि?"

सिंहेश्वरक विचार सुनि रूपलाल कक्काक मनमे महा लक्ष्मी नचलैन। लक्ष्मी चारि कोटिक छैथ- लक्ष्मी, राज लक्ष्मी, इन्द्र राज्यलक्ष्मी आ महालक्ष्मी।

रूपलाल काका बजला- "सिंहेश्वर, तोरासँ लाथ की, बेटी-जमाइक परसादे कोनो वस्तुक अभाव नहि अछि।"

❑

शब्द संख्या: 1901, तिथि: 05 नवम्बर 2021

अन्तिम पड़ाव

भोर भऽ गेल रहै मुदा फरिच नहि भेल छल। देवकान्त बाबू ओछाइनपर पड़ल अपन जीवन आ जीवनक संकल्प देखि रहल छला। विचित्र स्थितिमे पड़ल देवकान्त बाबूक मन मर्माहत भऽ रहल छेलैन जे आब जीब कठिन भऽ गेल अछि। कठिनो केना ने हएत, पिताक देल अपन जे बपौती सम्पैत अछि जइमे घर-घराड़ी छोड़ि बाँकी चारू बीघा खेत बटाइ लगा देने छी। तहू खेतक उपजा जे बटाइदार दइ छल, सेहो चौपट भऽ गेल। गाममे रोड-सड़क नहि बनल कि गामक खेतक रूपेँ बदैल गेल। चारूकात–माने गामक बीच–जे रोड-सड़क बनल अछि ओ तेहेन इंजीनियर सभक नक्शा बनौल अछि जे गामक पानिक निकासे बन्न भऽ गेल जइसँ गाम टापू जकाँ बनि गेल अछि। कोसिकन्हा जकाँ सालो भरि पानि खेत सभकेँ डुमौने रहैए जइसँ उपजावारी चौपट भऽ गेल अछि। बटेदारे सभकेँ की कहबै। ओकरो सभकेँ अनुकूल समय भेटत तखने ने ओहो सभ समयपर खेतियो करत आ उपजो उपजौत। तहीकाल पत्नी दमयन्ती आबि बजली-

“एना अनठौने काज चलत?”

पत्नीक बात सुनि देवकान्त बाबू किछु ने बजला। ओना, दमयन्ती ठाढ़ भेल प्रतीक्षा करए लगली जे किछु-ने-किछु उत्तर तँ पति देबे करता। मुदा देवकान्त बाबूक मन पत्नीक प्रश्नक उत्तर देब जोग अपनाकेँ नहि बुझि रहल छेलैन। पत्नीक प्रश्न देवकान्त बाबूक मनकेँ झिकझोड़ए लगलैन। जइसँ मनमे उठि गेलैन जे जहियासँ

पिताजी परोछ भेला, माने मुइला, तहियासँ कहियो एक्को पाइक कर्ज-बर्ज अपना हाथे नहि लेलौं। ओना, अपनो ओते नहियेँ छल कि अछि जे ऋणिया महाजन जकाँ सुइद-सवाइपर रुपैए-पैसा आकि अन्ने-पानिक महाजनी करितौं कि करब, मुदा जीवनक तँ एते आशा बनियेँ गेल अछि जे नोकरीक दरमाहासँ परिवार चलि रहल अछि। अही आशापर ने अपन जीवनक संकल्प सेहो पूर्ति भइये रहल अछि। माने ई जे गामक सूदखोरी महाजनीक विरोधमे गामक समाज उठि कऽ ठाढ़ भेला। सोल्होअना समाजक लोक तँ ऐ आन्दोलनसँ नहि जुड़ला मुदा आधासँ बेसी खेतिहर बोनिहारो आ किसानो ऐ आशाक संग जरूर जुड़ला जे अमरलत्ती जकाँ गाछक ऊपरे-ऊपर जे महाजनीक लत्ती लतैर रहल अछि, जइसँ अखन धरिक जे समाजक आर्थिक इतिहास रहल ओ चरमरेबे-टा नहि कएल, तहस-नहँस सेहो भइये गेल अछि। महाजनीक चाँगुरमे पड़ि केते लोक गाम छोड़ि या तँ शहर-बाजारक शरण लेलैन वा आन-आन गाममे जा कऽ बसला।

महाजनीक खिलाफ जे आन्दोलनक संग समाज उठला तइमे देवकान्त बाबू सेहो रहैथ। ओना, महाजनीक प्रभाव देवकान्त बाबूक परिवारपर नहि रहैन मुदा समाजक कल्याण देखि देवकान्त बाबू कौलेजे-जीवनमे आन्दोलनकेँ समर्थनो केलैन आ लोककेँ महाजनीक घिनौना इतिहास सेहो बुझौलैन। आन्दोलनक दिशा सेहो फरिचे जकाँ देवकान्त बाबूकेँ बुझि पड़ैन। माने ई जे कोनो महाजन ऐठाम अपने ने कर्ज लइले जाइ छी, से जँ नहि लइले जाइ तँ महाजन की करत। अपने महाजनी ने मरतै। मुदा से तँ विचारक दौड़मे कहब जेते आसान अछि ओते जीवनक दौड़मे नहि ने अछि। माए-बापक श्राद्ध, बेटीक बिआहक संग बाल-बच्चाकेँ पढ़ाएब-लिखाएब आ बर-बेमारी सेहो अछिए। तैसंग गरीबी सेहो समाजमे

एते छेलैहे जे भरि पेट अन्नो ने भेटै छल। ओना, किछु अंशमे अखनो अछिए मुदा बहुलांश समस्या हल भइये गेल अछि। ओना, जइ दिनसँ दस किलो अन्न प्रति बेकती प्रति मास भेटैक अधिकार संविधानमे अंकित भेल तहियासँ बहुत किछु भुखमरीक समस्या हल भेबे कएल अछि। भलेँ गामक मानव-संसाधनकेँ बाहर गेने गामक प्रगतिमे बाधा उपस्थित भेबे कएल अछि।

आन्दोलनेक दौड़मे देवकान्त बाबू संकल्प लेलैन जे कोनो सामाजिक आन्दोलन, माने कल्याणकारी आन्दोलन जे बेवस्थाक दोषक विरूद्ध ठाढ़ होइए, ओ अपन परिवारक सन्तान माने बेटा-बेटीसँ अधिक प्रिय क्रान्तिकारीकेँ होइते छैन। अही प्रियतासँ देवकान्त बाबू सेहो महाजनीक खिलाफ संकल्प नेने छला जे पैंच-पालटसँ आगू नहि बढ़ब। पैंच-पालटक माने भेल उकडू समय पड़लापर जेते लेलौं, सुकडू समय पेबिते ओते वापस कऽ देलौं, जइसँ सूद-सवाइक बीज धरतीमे नहि पड़ैत अछि। तैबीच दोहरबैत दमयन्ती बजली-

“किछु बजलौं नहि?”

पत्नीक तगेदा सुनि जहिना कोनो इरसियाएल खदुका (खदुका माने भेल ऋण लेनिहार) खुट्टा परक ढेनुआर गाए वा घरक आगूक अरजल बाड़ी महाजनक सिर चढ़ा दइ छैथ तहिना सिर चढ़बैत देवकान्त बाबू बजला-

“की बुझै छिऐ परिवारकेँ? परिवार तँ परिवार छी, लगले किछु बाजि देब आकि दोसराक परिवारकेँ अनेरो दूसि देब, तइसँ काज चलत।”

दमयन्तीक आँखिक भाँउ जेना दृष्टि दिस दृष्टि उठौलकैन। जे भाव देवकान्त बाबू अपन नजरिक नजरानासँ पकैड़ लेलैन। चोट

लागल घाउकेँ जहिना पट्टी करैसँ पहिने डॉक्टर चोटक जगहकेँ हियासि कऽ देखै छैथ तहिना हिया कऽ देवकान्त बाबू बजला-

"परिवार धिया-पुताक बिआहक घटकैती नहि ने छिऐ जे घटक पुछता, 'बाउ, की नाम छी?' तँ बाजत 'फल्लाँ..।' आ 'कुल-मूल की छी?' तँ कहि देत 'फल्लाँ..।' तइसँ जीवनक परिचय थोड़े भेटैए? मुदा परिवार बुझि काज (विवाह) नहि होइए, सेहो बात नहियेँ अछि। सेहो होइते अछि।"

महरैयाक महराइ सुनैत जहिना महर सेहो संग मिलि भाव मिलबैत महराइ गाबए लगै छैथ तहिना पतिक विचारकेँ सूर-मे-सूर मिलबैत दमयन्ती बजली-

"परिवार जँ धिया-पुताक घटकैती नहि छी तँ की छी? ..वएह तँ परिवारक आधार छी। विवाहक पछातिये ने परिवारक नाओं लेल जाइए।"

चौकियाएल चौमासकेँ चौकियबैमे जहिना चौकी देनिहारक मनमे ओहन आश लगिते छैन जे मेहीसँ खेत जोतैमे जेते मन लगैए तहूसँ बेसी मन लगैए परिवारक समस्याकेँ पकैड़ ओकर समाधानकेँ समधानि कऽ समाधान करैमे.! ..मुस्की मारि देवकान्त बाबू बजला-

"विद्यार्थी जीवनमे जे व्रत लेलौं, माने महाजनीक विरोधमे, तेकरा अपन जीवनमे अंगीकार करैत आजुक सीमा धरि पहुँच गेल छी, तइ बीचमे जे एहेन विस्फोटक स्थिति बनि गेल अछि, तइमे तँ यएह ने नीक हएत जे अपना ढंगसँ ओकर ओरियानक पाछू अहूँ लागि जाउ, आ हमहूँ लगि जाइ छी, अपना सभ किछु छिऐ तँ मनुक्ख छिऐ किने। हवा बेतरे लोक दस मिनट नहि जीब सकैए, पानि बेतरे सात दिन नहि जीब सकैए मुदा अन्न बेतरे मास दिन तँ जीले जा सकैए। तैबीच की हाथ-पएर बैसले रहत। विधाता जन्म

देलैन तँ जोड़ा लगा हाथो-पएर देबे केलैन किने।"

ऐठाम ओहन जिद्दी सभक चर्च नहि अछि जे छअ-छअ मास धरि अन्न नहि खाइयो कऽ पकठोस जकाँ जीवित रहै छैथ। बजैक क्रममे देवकान्त बाबू बाजि गेला मुदा पछाइत अपने मन मनाही करैत कहलकैन जे धड़फड़ा कऽ बाजि गेलौं। महाजनीक खिलाफ जे आन्दोलन भेल तेकर आगिमे अपने ने तपलौं आकि पत्नी तपली। स्त्रीगणमे लेन-देनक मनोवृत्ति अधिक अछिए। जँ कहीं चोरनुकबा महाजनसँ सूदिपर पाँच-दस हजार लऽ अनैथ तखन अपन संकल्पक की गति हएत? चोरनुकबा महाजन भेल स्त्रीगणक कौशल्य पूजी। मुदा संयोग नीक रहलैन। दमयन्ती बजली-

"जे काज अखन धरि अहाँ अछैत अपने नहि केलौं, तेकरा करैसँ पहिने पुछिये लेब किने?"

जहिना कोनो खेलमे गोटी चलैक एकसंग दूटा रस्ता भेट जाइए, जइसँ जीतक आशा खेलेनिहारक मनमे प्रवल भऽ जाइ छै, तहिना देवकान्त बाबूकेँ सेहो भेलैन। भेलैन ई जे जँ पत्नी कोनो रीनिया-महाजन लग अपन उपस्थिति दर्ज करबैसँ परहेज केलैन तहिना गड़ूगर समयसँ मुकावला करैक शक्ति सेहो जगबे करतैन। देवकान्त बाबू बजला-

"देखिते छिऐ जे अपनेटा नहि, सबहक दशा तेहने सन भऽ गेल अछि.!"

ओना, बजैक क्रममे देवकान्त बाबू बिसवासक संग बाजल छला मुदा अपने मन रोकि कहलकैन- 'मनुक्ख जहिना प्रेमक अथाह समुद्र छी तहिना कुचालिक शिरोमणि सेहो छीहे।' परिवारोमे देखिते छी जे ऊपर-झापरक बाते वा काजे सभ सभकेँ कहैए मुदा तर-धुसकी बाते वा काजे सभक कानमे सभ थोड़े जा दइए। बुझले अछि

जे जिनगी भरिक संगी पिंगला सभ दिन भरथरीक संग रहली, चोरनुकबा गप कहियो कानमे जाए देलकैन? खाएर ओ बहुत पुरान विचार छी। आजुक परिवेशमे वएह ने नीक हएत जे अपन जे जिनगीक पनिबह अछि ओइपर दिनानुदिन धियान राखि समयक गति पकैड़ चलबैत रही। जँ से नहि राखब, तँ देखिते छी पिताकेँ पुत्र कहैए जे अहाँ हमर की केलौं? मुदा जखन अपन पुत्रकेँ पुत्र बना दुनियाँमे ठाढ़ करत तखन ने पिताक महिरम बुझत। जे एक्केबेर जीवनक वैदिक पद्धतिकेँ उठा कऽ कातमे फेक देत ओ केना बुझि पौत जे मनुक्ख दुनियासँ जुड़ल एक इकाइ छी, एक अंश छी। देवकान्त बाबूक विचार अपने मनमे फरिछा गेलैन जे किए ने पत्नीकेँ चुल्हि-चौकाक विचार पुछिऐन। देवकान्त बाबू समयकेँ दृष्टिमे रखैत बजला- “अखन चुल्हिक की स्थिति अछि?”

अखन तक दमयन्ती भानस-भातक कोनो विचार ने पतिसँ लइ छेली आ ने अपन विचार दइ छेली। देवकान्त बाबू सेहो अपने मने खुशीए छला जे भने चुल्हिक जालसँ हटल छी। बुझले अछि जे चुल्हिक जाल जाल थोड़े छी, ओ तँ महजाल छी, जीवनक मूल तत्त्व। अनेरे एहेन जालमे फँसने हाट-बाजार तीमने-तरकारी ले करए पड़त। जहिना दमयन्ती खर्च मांगै छेलैन तहिना देवकान्त बाबू भोजनकेँ प्रमुखता दैत सभसँ पहिने पत्नीक मांग पूर्ति करैत रहला। मुदा अखनुका जे स्थिति देवकान्त बाबूक बनि गेल छैन ओ अग्नि परीक्षाक घड़ी जकाँ बनियेँ गेल छैन। एक दिस तीन माससँ वेतन नहि भेटने, जइसँ परिवारक सभ काज बाधित भऽ चरमरा रहल छैन तँ दोसर दिस जीवनक संकल्प सेहो चुल्हिक आगिक कराहपर चढ़ि गेल छैन।

अखन धरिक जीवनमे देवकान्त बाबू केकरोसँ सूदिक रुपैआ उठा अपन कोनो काज नहि केने छला, तैठाम आइ सूद-खोर

महाजनक जालमे फँसैक परिस्थिति बनियेँ गेल छैन। दमयन्ती बजली-

"मुसकिलसँ तीन दिन आरो चलत।"

पत्नीक मुहसँ 'तीन दिन' सुनि देवकान्त बाबूक मनमे ओइ कल्पवृक्षक सिहकी लगलैन जइ कल्पवृक्षकेँ लगौनिहार ई सोचि लगौने छला जे एक दिनक खर्चसँ परिवारमे बेसी राखब कामचोर छी। लूटि लाउ कुटि खाउ प्रात भने फेर जाउ। मिथिलाक मंत्र छीहे। मनमे अबिते देवकान्त बाबू सामंजस करैत बजला-

"परिवार जहिना हमर छी तहिना अहूँक छी ने, तँए गाड़ी जकाँ दुनू पहियाकेँ समतूल बना चलबेमे ने कल्याण अछि। अहूँ परिवारक चुल्हिक पाछू लागि जाउ आ हमहूँ लगि जाइ छी। एते तँ विकल्प अछिए ने जे संग मिलि भुखलो रहि सकै छी।"

अखन तक दमयन्तीकेँ अपन दायित्व-बोध नहि भेल छेलैन, तँए आत्मबोधक अभावमे आत्मविश्वासमे कमी छेलैन, से आत्मबोध भेलैन। जहिना अनुभूतिसँ कियो देव-दर्शन पबै छैथ तहिना ने अनुभूतियेसँ कियो परिवार-दर्शन सेहो पबिते छैथ।

मुस्की दैत दमयन्ती बजली-

"तइमे पुरुख चलाक होइ छैथ। हम हुनका बेइमान नहि कहबैन, मुदा एते तँ कहबे करबैन ने जे सालमे तीन मास पावनिक उपास होइए तइमे पुरुखक हिस्सामे एक्कोटा किए ने छैन.! सभ उपासक भार स्त्रीगणेक हिस्सामे किए छैन?"

अपनाकेँ पछड़ैत देखि देवकान्त बाबू बजला-

"जखन पुरुखमे मौगी आ मौगीमे पुरुखक गुण भरि जाइए, माने ग्लैंडक बनावटसँ, तखन हमरा-अहाँ बुते की नहि हएत। तइले मतहानि किए करब।"

दस बजेक समय, जेठ मास रहने रौदमे एते तीखपन आबि गेल अछि जे तइसँ पहिनहि खेत-खरिहाँनमे काज करैबला बाहरक काज उसारि घर परक छाहरिक काज पकड़ै छैथ। देवकान्त बाबू दरबज्जापर दच्छिन मुहेँ रस्ता दिस देखैत अपन परिवारक विषयकेँ ठेकना रहल छला कि नवोनाथ मास्टर साहैबकेँ अबैत देखलैन। ओना, नवोनाथ बाबू किछु दूरेपर छला मुदा तैयो देवकान्त बाबूकेँ चीन्हिमे आबि गेलैन। नवोनाथ बाबूक महाजनी आ परिवारक आर्थिक स्थिति देखि मनमे उठलैन जे जहिना कौरव-पाण्डवक बीच जुआक जे पाशा छल, जैपर एक दिस कौरवक राजशाही दावपर छल तँ दोसर दिस निहत्था पाण्डव छला.! मनमे विचैरते देवकान्त बाबूक मन ऐठाम आबिकऽ अँटैक गेलैन जे नवोनाथो बाबू अपने जकाँ जीवन भरि विद्यालयमे शिक्षण कार्य करैत आबि रहल छैथ, तैसंग महाजनीक वृत्ति सेहो छैन्हे..! तैबीच नवोनाथ बाबू देवकान्त बाबूक दरबज्जापर पहुँच गेला।

कुरसीपर सँ उठि देवकान्त बाबू प्रणाम करैत बाँहि पकैड़ नवोनाथ बाबूकेँ कुरसीपर बैसा अपने दोसर कुरसीपर बैसला। दरबज्जापर आएल नवोनाथ बाबूकेँ अपन परिवारक हाल-चाल नहि पुछि देवकान्त बाबू बजला- "भाय साहैब, जहिना अपना सभक स्थिति बिगैड़ गेल अछि तहिना बच्चो सभक, माने विद्यार्थियो सभक परेशानी बढ़िये गेल अछि।"

उम्रसँ परिपक्व नवोनाथ बाबू बजला-

"बच्चा सभक तँ भविष्ये चौपट भेल जा रहल अछि। अपने सभक जे हाइ स्कूल अछि केतौ पढ़ाइ होइए। विद्यालयक नामपर मकान ठाढ़ अछि।"

देवकान्त बाबू बजला- "सुनै छी प्राइवेट कोचिंग सभमे

अनुशासित ढंगसँ पढ़ाइ-लिखाइक बेवस्था अछि।"

जहिना क्रिकेटमे खेलाड़ी छक्का मारैए तहिना नवोनाथ बाबू बजला-

"यएह छी सार्वजनिक संस्था आ प्राइवेट संस्थाक रूप। मुदा.!"

'मुदा' कहि नवोनाथ बाबू चुप भऽ गेला। देवकान्त बाबूक मनमे ओहन विचार ओइ माछ जकाँ जगलैन जेकर मुहोँ आ नाङैरियो काटल रहने चीन्हिमे एबे ने करैए। देवकान्त बाबू बजला-

"से की, भाय साहैब?"

नवोनाथ बाबू बजला-

"देवकान्त, छोड़ह ऐ सभ बातकेँ।"

देवकान्तो बाबू आ नवोनाथो बाबू एक्के हाइ स्कूलमे शिक्षण कार्यसँ जुड़ल छैथ, मुदा पनरह बर्ख सीनियर नवोनाथ बाबू छैथ। देवकान्त बाबू पुछलखिन-

"एना किए बजलौं, भाय साहैब?"

नवोनाथ बाबू बजला-

"मेघ तड़कैए ते कियो अपना माथपर हाथ लइए। अपने तेते फिरिशान छी जे आगूक किछु सुझिते ने अछि।"

ओना, देवकान्त बाबूकेँ सेहो बुझल रहैन जे नवोनाथ बाबूक सेवा-निवृत्तिक समय आबि गेल छैन। मुदा तइ बिच्चेमे विद्यालय बन्न भऽ गेल। देवकान्त बाबू बजला-

"से की, भाय साहैब?"

नवोनाथ बाबू बजला-

"तीस तारीख-के सेवा निवृत्त होइबला छेलौं, जइसँ मनमे छल

जे बीस तारीखक पछाइत सेवा निवृत्तिक सभ काज सम्हारि लेब, तइ बिच्चेमे विद्यालय बन्न भऽ गेल। विधिवत ने सेवा निवृत्त भेलौं आ ने सेवारत छी.!”

देवकान्त बाबू बजला-

“विचित्र स्थिति बनि गेल अछि.!”

नवोनाथ बाबू बजला-

“तीन माससँ तेहेन घेरामे पड़ि गेल छी, जे किछु फुरिये ने रहल अछि। तँए तोरासँ विचार करए एलौं अछि।”

देवकान्त बाबू बजला-

“भाय साहैब, अहाँसँ विचित्र स्थितिमे अपने पड़ि गेल छी। चुल्हिये बन्न होइपर आबि गेल अछि।”

नवोनाथ बाबू बजला-

“जखन समय बदलत तखन तूँ कनी शरीरसँ मदैत कऽ दिहह। अपने आब नइ सकै छी। तोहर चुल्हिक भार हमरा ऊपर।”

❑

शब्द संख्या: 2022, तिथि: 09 नवम्बर 2021

Notes